Vol.25, Issue 6 | Annual Subscription ₹480

अप्रैल 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

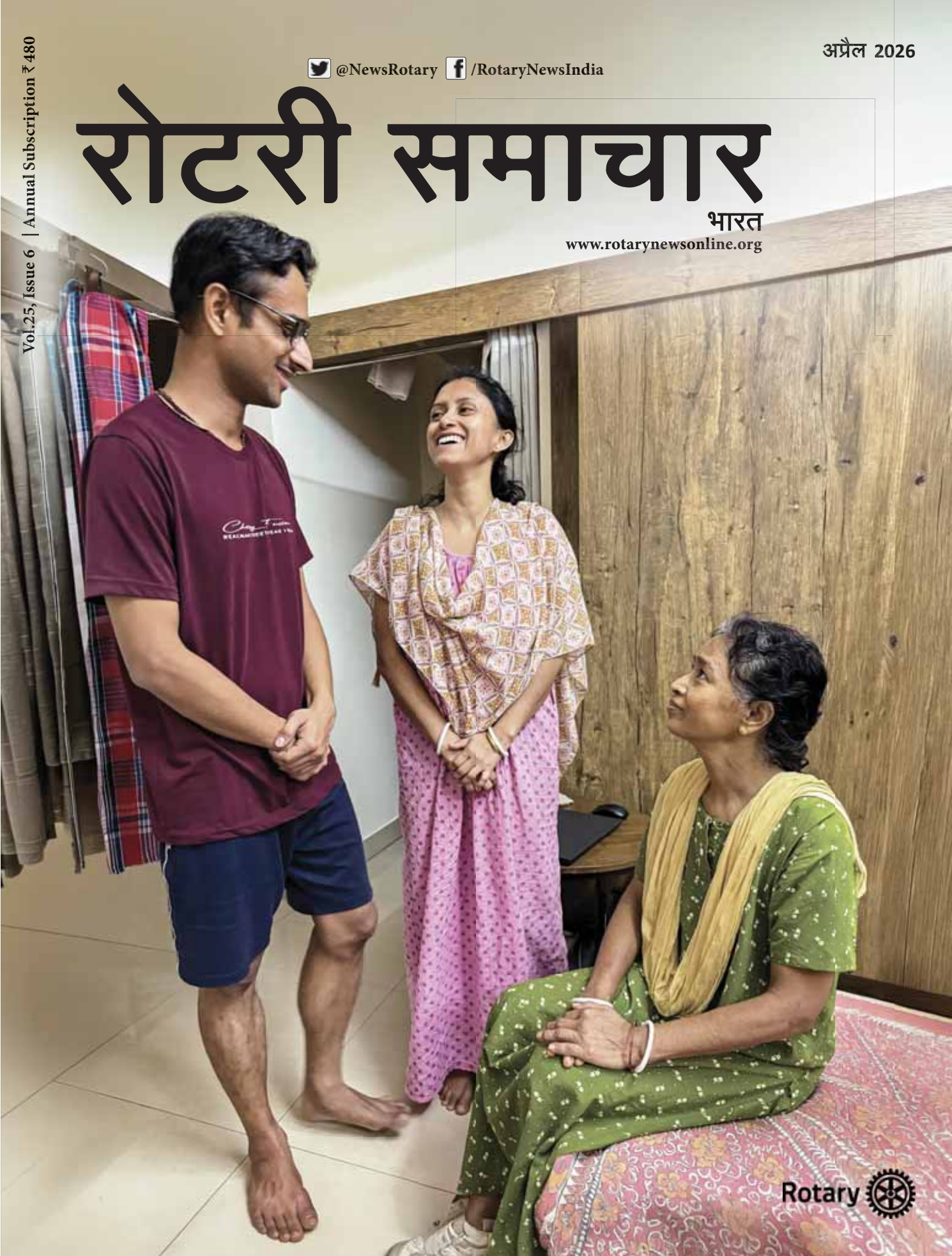

Rotary

Rotary | TAIPEI 2026

Rtn Francesco Arezzo
RI President

Join us to celebrate a colourful evening

SOUTH ASIAN RECEPTION AT THE ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION TAIPEI 2026

14TH JUNE 2026

Rtn AKS Flt Lt K P Nagesh
RI Director | Co-Convener - SAR 26

PDG Rtn Sridhar J
Chairman - SAR 26

PDG Rtn Dr N Subramanian
Co-Chairman - SAR 26

PDG Rtn CA Debasish Mishra
Secretary - SAR 26

To Meet and Greet, Feel at Home,

Under the Taipei Sky!!!

Date: June 14TH, 2026 | Time: 06:30 PM,

Venue: **W Taipei,** 10 Zhongxiao East Road, Sec. 5 Xinyi District, Taipei, Taiwan 110

REGISTRATION FEES
Single : INR 7,500
Couple : INR 15,000

Register Now

Convener - SAR 26

MMM TRICHY

Rtn AKS Er Muruganandam M (MMM)

B.E., M.B.A., M.S., MFT., PGDMM., DEM
Chartered Engineer
Vice President- Rotary International (2026 - 2027)
Rotary International Director (2025 - 2027)
Chairman - Excel Group of Companies

#MMMTRICHY I #MMMEXCEL I #MMMROTARY I #SAYYESTOROTARY

/mmmtrichy | www.mmmtrichy.com | Mail: mmmrotary@excelgroup.co.in | Ph: +91 93825 50001

Further Details Contact: PDG Sridhar J, Mobile No: +91 97908 39030 | PDG Debashish Mishra, Mobile No: +91 99370 66669

विषयसूची

28

वेंकी के साथ सीधी बातचीत

12

रोटरी क्लब बॉम्बे ने कैंसर रोगियों को पहुंचाई राहत

48

खेलों के माध्यम से रोटरी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना

18

आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाना

52

बिग बैंग ने दिया विज्ञान को बढ़ावा

20

असंभव को संभव बनाने के लिए समूह में काम करें

56

100 इरुला परिवारों के लिए रोटरी घर

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता

₹420 से संशोधित कर

₹324 कर दी गई हैं।

पुणे शांति केंद्र, एक ऐतिहासिक लम्हा

मैं आशा की किरण जगाता *पुणे का शांति केंद्र* शीर्षक वाले आपके संपादकीय में व्यक्त आपके विचारों से सहमत हूँ। यह वास्तव में भारतीय रोटेरियनों के लिए एक यादगार क्षण था। ऐसे शांति केंद्र का चयन ऐतिहासिक है और इस कार्यक्रम में रो ई अध्यक्ष तथा न्यासी प्रमुख की उपस्थिति अपने आप में एक नई मिसाल पेश कर रही है। जैसा कि आपने अपने लेख में उचित रूप से उल्लिखित किया है, सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय ने अपनी महत्ता सिद्ध की है।

अरुण कुमार दाश
रोटरी क्लब बरीपदा - मंडल 3262

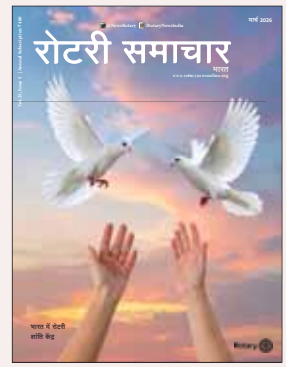

पुणे के सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में एक रोटरी शांति केंद्र का उद्घाटन होना एक दिव्य उपहार है। मैं स्वयं को धन्य महसूस करता हूँ कि मैंने 1998-2002 के दौरान सिम्बायोसिस से बीकॉम और कंप्यूटर्स में मास्टर्स की पढ़ाई पूरी की। मैं इस नए शांति केंद्र का दौरा करने और उसकी गरिमा का अनुभव करने के लिए उत्सुक हूँ। मैं रो ई मंडल 3170 से रोटेरियनों को इस केंद्र पर लाने के लिए विशेष प्रयास करूँगा।

इस शांति केंद्र को साकार करने वाले सभी टीम सदस्यों को हार्दिक बधाई। *रोटरी न्यूज़* में प्रकाशित यह अद्भुत लेख, उपयुक्त चित्रों के साथ इस भव्य उद्घाटन का विस्तृत और सुंदर वर्णन प्रस्तुत करता है।

सत्यजीत मोरे
रोटरी क्लब धारवाड़ हेरिटिज - मंडल 3170

वर्तमान में हम जिन भू-राजनीतिक तनाव और संघर्षों का सामना कर रहे हैं, उनके संदर्भ में पुणे में रोटरी शांति केंद्र का उद्घाटन एक स्वागतयोग्य कदम है। मार्च अंक की सामग्री इतनी रोचक थी कि उसे बीच में छोड़ना मुश्किल था। रो ई अध्यक्ष के संदेश में डेटा के महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया और बताया गया कि इसका उपयोग मापनीय परिवर्तन लाने के लिए कैसे किया जा सकता है। यह जानकर संतोष होता है कि टीआरएफ ने 2013 से अब तक जल से संबंधित हजारों पहलों के समर्थन में 230 मिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है। एरिका ग्विन का उदाहरण निरंतर प्रयासों से हुए परिवर्तनों का प्रत्यक्ष अनुभव प्रस्तुत करता है।

एन अंठरी वेदी
रोटरी क्लब हैदराबाद मेगा सिटी - मंडल 3150

वर्तमान वैश्विक संघर्ष को देखते हुए, शांति स्थापित करने की आवश्यकता को दर्शाता हुआ कवर चित्र बिल्कुल समयानुकूल है। साथ ही, भारत को एक रोटरी शांति केंद्र प्राप्त होने पर आधारित कवर स्टोरी हम सभी के लिए खुशी की खबर है। रो ई अध्यक्ष अरेज़ो का संदेश और रो ई निदेशक मुरुगनंदम का प्रतिबद्धताओं को निभाने का आह्वान अत्यंत उत्कृष्ट है। रशीदा भगत द्वारा उद्यमिता पर आधारित आरवाईएलए (RYLA) विषयक फीचर, जिसमें रोटोरेक्टरों के विस्तृत साक्षात्कार शामिल हैं, पढ़ने में बेहद प्रेरणादायक है।

जी कचन, रोटरी क्लब डिंडीगुल वेस्ट - मंडल 3000

मैं आपकी अद्भुत पत्रिका का उत्साही पाठक हूँ, जो सुंदर रूप से डिज़ाइन करने के साथ ही जीवन के सभी पहलुओं पर परिपूर्ण ज्ञान प्रस्तुत करती है। संपादक की शक्तिशाली लेखनी हमारे दिलों को छू जाती है। मैं बेसब्री से डाकिए द्वारा *रोटरी न्यूज़* पहुँचाने का इंतजार करता हूँ।

दो कबूतरों के अद्वितीय कवर चित्र के लिए मैं बधाई देता हूँ, जो प्रेम, शांति और सकारात्मकता का संदेश देते है। रोटरी शांति केंद्र स्थापित करके भरोसा जीतने और संघर्षों को कम करना सिखाकर शांतिपूर्ण वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूप नगर - मंडल 3080

मैंने डॉ टी एस छाबड़ा (99) पर प्रकाशित लेख पढ़ा, जो सेना में निरंतर सेवा देने के साथ अपनी स्वर्ण जयंती की ओर बढ़ रहे हैं। रोटरी क्लब नीलगिरीज़ के एक सदस्य के रूप में उनकी सेवा सराहनीय है। प्रत्येक रोटेरियन को उनके विचारोत्तेजक शब्दों पर ध्यान देना चाहिए।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम का रो ई उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त होना रो ई मंडल 3000 के प्रत्येक रोटेरियन के लिए गर्व का क्षण है।

एस मोहन, रोटरी क्लब मदुरै वेस्ट - मंडल 3000

अपने लेख में मुरुगानंदम कहते हैं कि किसी कल्याणकारी उद्देश्य के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताना मानवता की अभिव्यक्ति है, जबकि चुनौतियों और बाधाओं के बावजूद उसे निभाना किसी उच्चतर गुण की अभिव्यक्ति है। प्रतिष्ठित दार्शनिक और उपन्यासकार ऐन रैंड को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा, सवाल यह

आपके पत्र

नहीं है कि मुझे कौन अनुमति देगा, बल्कि यह है कि मुझे कौन रोकेगा, वह कहते हैं कि आत्मविश्वास और नेतृत्व सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण हैं।

निरंजन कार, रोटरी क्लब भुवनेश्वर - मंडल 3262

डॉ गीता मथाई द्वारा हृदयाघात पर लिखा गया लेख समयानुकूल है और स्पष्ट रूप से बताता है कि कौन हृदयाघात के प्रति संवेदनशील है, इसके लक्षण क्या हैं, इसके रोकथाम के उपाय क्या हैं और ऐसे हृदयाघात को रोकने के लिए कौन-कौन से व्यायाम किए जा सकते हैं, जो पाठकों के लिए उपयोगी साबित होंगे।

शिवपेरूमल सुब्रमणी
रोटरी क्लब वालाजपेट - मंडल 3231

मैंने *द गेम चेंजर* लेख को बहुत प्रशंसा के साथ पढ़ा, जिसमें रो ई अध्यक्ष निर्वाचित ओलायिंका हकीम बाबालोला को प्रस्तुत किया गया है। एक रोटारेक्टर से वर्तमान पद तक पहुँचने की उनकी यात्रा प्रेरणादायक और परिवर्तनकारी दोनों है, जो रोटरी के नेतृत्व विकास, सेवा और धैर्य की भावना को दर्शाती है। यह कि उन्होंने केवल एक साधारण टेक्स्ट मैसेज अभियान के माध्यम से टीआरएफ के लिए 80,000 डॉलर जुटाए, जो यह साबित करता है कि नेतृत्व शक्ति के बारे में नहीं बल्कि उद्देश्य, संबंध और विश्वसनीयता के बारे में है।

उनका 2026-27 के लिए संदेश, *टुगेदर वी क्रिएट लास्टिंग इम्पैक्ट,* केवल एक नारा ही नहीं बल्कि एक दर्शन है, जो यह याद दिलाता है कि एकता, सहयोग और साझा प्रतिबद्धता के माध्यम से स्थायी परिवर्तन संभव है। अफ्रीका से दूसरे रो ई अध्यक्ष के रूप में वह रोटरी में बढ़ती वैश्विक समावेशिता और नेतृत्व में विविधता का भी प्रतीक हैं।

डी मोहन
रोटरी क्लब सेलम मिड टाउन - मंडल 2982

डीजीई रविशंकर डाकोजू और उनकी पत्नी पाओला द्वारा ₹500 करोड़ का उदार दान अद्भुत है। यह कितना प्रेरणादायक कृत्य है और वास्तव में यह टीआरएफ में योगदान देने का एक विश्व रिकॉर्ड है, जो सभी रोटेरियनों को टीआरएफ में अपने योगदान को बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा। भगवान उनके परिवार को आशीर्वाद दें।

रॉबर्ट फ्रेंकलिन रिगो
रोटरी क्लब बाजपे - मंडल 3181

मुझे जनवरी अंक में रशीदा भगत द्वारा लिखा गया *एक अनोखी नेतृत्व यात्रा* लेख बहुत पसंद आया। कैप्टन रघु रमन के संबोधन में एक पैराग्राफ था, जो हमारे सैनिकों को मिलने वाले पत्रों के बारे में था; कुछ पत्र मुस्कान ला सकते हैं, जबकि कुछ पत्रों को रोकना पड़ता है क्योंकि एक सैनिक का मनोबल कभी टूटना नहीं चाहिए। मान लीजिए कि किसी सैनिक की बेटी की मृत्यु हो गई है; तो कमांडिंग ऑफिसर उसे इस बारे में नहीं बताएगा। लेकिन जरा सोचिए, वह कितना बोझ अपने कंधों पर उठाता है। इसे पढ़ते समय, मैंने एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं यह ऐसा था जैसे मैं कोई फिल्म देख रहा हूँ, एक दर्द जिसने मेरे दिल को चीर दिया। यही लेखन का वो गुण है जो वास्तव में आत्मा को छू लेता है। धन्यवाद।

सुरेश मेनन, रोटरी परूर - मंडल 3205

सुधार: *रोटरी क्लब मद्रास में इतिहास की एक जीवंत कड़ी* (मार्च 2026) में सर एफ ई जेम्स भारत से पहले रो ई निदेशक थे। जॉन आर्मस्ट्रॉन्ग की पत्नी का नाम पेनी है, बेट्टी नहीं।

एक अपूर्णीय क्षति

पीडीजी वी आर मुत्तु (रो ई मंडल 3212) के आकस्मिक निधन के साथ हमने एक गतिशील रोटरी नेता को खो दिया है। उनकी परियोजनाएं अत्यंत उत्कृष्ट थी - 'यधुमानवल' (छात्राओं के लिए), 'कलाम' (युवा करियर विकास), 'फोकस' (सार्वजनिक वक्तृत्व कौशल), 'पंच' (नेतृत्व कौशल) और 'प्रेमकुमार' (नेतृत्व विकास)।

वह एक कुशाग्र व्यवसायी (इदयम ग्रुप) थे, लेकिन साथ ही उन्होंने कभी भी अपना ध्यान सामुदायिक सेवा और युवा विकास से नहीं हटाया। उनकी स्मृतियाँ सदैव अमर रहेंगी। एक सह-रोटेरियन के रूप में पिछले 40 वर्षों से रो ई मंडल 3000 और रो ई मंडल 3191 में उनके साथ निकटता से जुड़े होने के कारण मैं उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूँ। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और उनकी स्मृतियाँ हम सभी के लिए प्रेरणा बनकर मार्गदर्शन करती रहें।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब बैंगलोर जे पी नगर
मंडल 3191

कवर पर: मुंबई के रोटरी धर्मशाला में एक कैंसर रोगी और उनका परिवार।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।
आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।
WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

चित्र: मोनिका लोज़िस्का

तैयारी पर भरोसा रखें, किस्मत पर नहीं

कुछ समय पहले, दक्षिण-पश्चिम नाइजीरिया के आये गांव में एक छोटे से स्वास्थ्य केंद्र में, एक महिला जुड़वां बच्चों को जन्म देने के लिए प्रसव पीड़ा में वहां पहुंची। केंद्र में कर्मचारियों की कमी थी और प्रभारी नर्स दाई भी उपस्थित नहीं थीं।

एक सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता आगे आईं। उन्होंने रोटरी फाउंडेशन के 'प्रोग्राम्स ऑफ स्केल' की एक पहल, 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज़ इन नाइजीरिया' में भाग लिया था। हालांकि उन्हें औपचारिक रूप से दाई का प्रशिक्षण नहीं मिला था, फिर भी उन्हें आपातकालीन प्रसूति संबंधी आवश्यक कौशल थे।

कुछ घंटों बाद, दोनों शिशुओं का जन्म हुआ, एक का स्वास्थ्य केंद्र में और दूसरे का सामान्य अस्पताल में, जहाँ माँ को जटिलताओं का शीघ्र पता चलने के बाद भेजा गया था। नवजात शिशु और उनकी माँ दोनों जीवित और सुरक्षित थे।

दुनिया भर में महिलाएँ हर दिन ऐसी ही परिस्थितियों का सामना करती हैं - ऐसे क्षण जब जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर अच्छी तरह से प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मचारियों और विश्वसनीय प्रणालियों और प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है।

नाइजीरिया में 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज़' कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसे क्षणों को आशा में बदलने की संभावना को बढ़ाना है। स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत बनाकर और अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्यकर्मियों को प्रशिक्षण देकर, यह कार्यक्रम समुदायों को कठिन परिस्थितियों में भी माताओं और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद करता है।

यह कार्य रोटरी सेवा के वास्तविक सार को दर्शाता है। सेवा केवल तब नहीं की जाती जब परिस्थितियाँ अनुकूल हों। यह तब भी की जाती है जब व्यवस्थाएँ दबाव में हों, संसाधन सीमित हों और आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो। यह संकट आने से पहले लोगों को तैयार करने और संकट आने पर समुदायों के साथ खड़े रहने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कोई अमूर्त लक्ष्य नहीं है; यह बेहद व्यक्तिगत विषय है। इसमें प्रसव के बाद स्वस्थ रहने वाली माँ, नवजात शिशु की पहली साँस, और परिवार का संपूर्ण बने रहना शामिल है, क्योंकि किसी ने प्रशिक्षित होकर, तैयारी के साथ और पर्याप्त देखभाल करते हुए जिम्मेदारी निभाई। रोटरी समझती है कि सेवा का अर्थ है लोगों और प्रणालियों में उनकी परीक्षा की घड़ी आने से बहुत पहले निवेश करना।

नाइजीरिया में 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज़' जैसे कार्यक्रम यह दर्शाते हैं कि जब रोटरी स्थानीय ज्ञान, वैश्विक साझेदारी और स्थायी समाधानों को एक साथ लाती है तो क्या संभव है। स्वास्थ्य पेशेवरों और स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर काम करते हुए रोटरी यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि जीवन रक्षक देखभाल केवल भाग्य या स्थान पर निर्भर न रहे।

मां और उसके जुड़वां बच्चों की कहानी मूल रूप से सेवा की कहानी है। यह इस बात की याद दिलाती है कि रोटरी का प्रभाव उन मानवीय क्षणों में मापा जाता है जब लोग दूसरों की सबसे कमजोर घड़ी में आगे बढ़कर उनकी सहायता करते हैं।

जब हम *भलाई के लिए एकजुट* होते हैं, तो सेवा केवल एक आदर्श नहीं रह जाती। यह परिवारों के लिए जीवन रेखा, समुदायों के लिए शक्ति का स्रोत बनती है और यह विश्वास दिलाती है कि जहाँ भी सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता होगी, वहाँ रोटरी पहुँचती रहेगी।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

आवश्यकता है... हमारी दुनिया के घाव भरने के लिए शांति दूतों की

भारत के पुणे में रोटरी और सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के बीच जिस कागज़ पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे, उसकी स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि दुनिया एक और संघर्ष में उलझ गई, जिसे 99 प्रतिशत देशों ने न तो चुना था और न ही जिसकी कामना की थी। ईरान पर अमेरिका-इजरायल के सैन्य हमलों और उसकी कड़ी प्रतिक्रिया ने अरब जगत के कभी मित्र रहे पड़ोसी देशों के नागरिकों और बुनियादी ढांचे को भी गंभीर खतरे में डाल दिया है।

इस संपादकीय को लिखते समय, पश्चिम एशिया में युद्ध बेरोकटोक जारी है, जो घरों को नष्ट कर रहा है, लोगों को मार रहा है या अपंग बना रहा है और न केवल मानव जीवन को तबाह कर रहा है, बल्कि डर और ऐसे अनुत्तरित प्रश्न भी पैदा कर रहा है कि क्या हम इंसान, जिन्होंने हमेशा खुद को पृथ्वी पर अन्य प्रजातियों से श्रेष्ठ माना है, इस पर निवास करने के योग्य हैं भी या नहीं। हमारी अंतहीन लालसा, पृथ्वी के संसाधनों का अधिक से अधिक हिस्सा अपने लिए हड़पने की चाहत, और सत्ता की वह हवस जिसके बारे में हमारा मानना है कि केवल सबसे परिष्कृत और विनाशकारी सैन्य उपकरण ही हमें दिला सकते हैं, हमारे ग्रह को तेजी से नष्ट कर रहे है।

होर्मुज जलडमरूमध्य की रणनीतिक स्थिति के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जिसे ईरान नियंत्रित करता है और भारत सहित अपने कुछ पुराने दोस्तों को छोड़कर, इसे लगभग बंद कर दिया है। दुनिया की लगभग 20 प्रतिशत ऊर्जा (तेल, एलएनजी, आदि) इस महत्वपूर्ण जलमार्ग से होकर गुजरती है, और फारस की खाड़ी क्षेत्र के देशों के लिए, यह एक महत्वपूर्ण खाद्य आपूर्ति मार्ग भी है। ऐसा अनुमान है कि सऊदी अरब अपने भोजन का 80 प्रतिशत, संयुक्त अरब अमीरात लगभग 90 प्रतिशत और कतर 98 प्रतिशत आयात करता है! चूंकि यह संघर्ष इस जलमार्ग को अवरुद्ध कर रहा है, इसलिए इस क्षेत्र में भोजन को वैकल्पिक मार्गों से आना होगा, जिससे भोजन की लागत में भारी वृद्धि होगी और इसकी किल्लत पैदा होगी।

भारत में एलपीजी की आपूर्ति पहले ही बाधित हो चुकी है क्योंकि हम गैस की भारी कमी का सामना कर रहे हैं, और जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय संसद को बताया, लगभग एक करोड़ भारतीय खाड़ी देशों में रहते हैं और काम करते हैं। चारों ओर दागी जा रही मिसाइलों और जारी बमबारी के बीच उनकी सुरक्षा को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं।

पश्चिमी एशिया में इस तेज होते संघर्ष को एक गंभीर और विश्वसनीय शांति वार्ताकार की आवश्यकता है, जो तनावग्रस्त माहौल को शांत कर सके, तीखी और क्रोधित आवाजों को खामोश कर सके और बातचीत को सुविधाजनक बना सके। भू-राजनीति के कई विश्लेषकों ने सुझाव दिया है कि भारत और उसका नेतृत्व इस भूमिका को निभाने के लिए पूरी तरह से उपयुक्त है क्योंकि इसके तीनों शामिल देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। यह बात तो तय है कि शांति स्थापित करने के लिए सभी पक्षों को बातचीत करने हेतु तैयार करने के गंभीर प्रयास पहले से चल रहे हैं।

इस पृष्ठभूमि में और एक ऐसे विश्व में जहाँ कटुता और दुश्मनी तेजी से बढ़ रही है, रोटरी के शांति केंद्रों का महत्व और भी बढ़ जाता है। पुणे शांति केंद्र के उद्घाटन के अवसर पर रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को के संबोधन का मूल संदेश आज भी उतना ही सटीक प्रतीत होता है... दूसरों का डर और दूसरे पक्ष के दृष्टिकोण को समझने की विफलता ही सभी समस्याओं की जड़ है। विश्वास और समझ के माध्यम से लोगों के बीच छोटे-छोटे पुल बनाए जा सकते हैं, और ''गरीबी, घृणा और पूर्वाग्रह'' से मुक्ति एक अधिक शांतिपूर्ण दुनिया स्थापित कर सकती है बशर्ते हमारे पास उन्हें खोजने का दिल और दिमाग हो।

लेकिन उनके बताए गए उच्च आदर्शों के करीब आप कैसे पहुँचा जाए उन अजनबियों के प्रति भय को कैसे छोड़ा जाए जिन्हें हमें बुरा और खतरनाक बताया गया है यही सबसे बड़ा प्रश्न है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ हर युद्धरत पक्ष अपने रुख पर अड़ा रहता है, जो अक्सर भय, पूर्वाग्रह और घृणा से भरा होता है।

क्या हम किसी ऐसे मसीहा की उम्मीद कर सकते हैं जो घावों को भर सके, भय और पूर्वाग्रह को मिटा सके और धीरे-धीरे अजनबियों को एक-दूसरे को गले लगाने के लिए प्रेरित कर सके? क्या रोटरी स्वयं ऐसी बन सकती है?

रशीदा भगत

रोटरी समाचार

में अपनी प्रतिष्ठित परियोजना प्रकाशित करवाइए

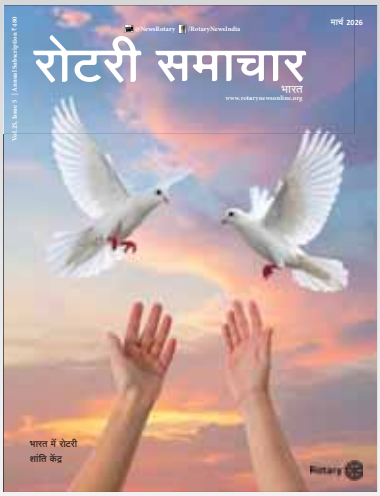

ऐसे रोटेरियन और रोटरी क्लब, या मंडल, जो सुनियोजित एवं ध्यानपूर्वक निष्पादित की गयी परियोजनाओं का बीड़ा उठाते है जिनसे लोगों की ज़िंदगियाँ परिवर्तित होती है एवं स्थानीय समुदाय लाभांवित होता है, वे अन्य रोटरी क्लबों को भी अपने बारे में ज्ञात करवाना चाहते है। आप में से बहुत से लोग सोचते है कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है परियोजना को *रोटरी समाचार* में प्रदर्शित करना, जो कि **1.5 लाख रोटेरियनों, लगभग 1,000 पुस्तकालयों, शैक्षणिक संस्थानों, डॉक्टरों के प्रतीक्षा कक्ष, क्लीनिक,** इत्यादि में प्रसारित होती है और हर महीने लगभग 4 लाख पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है।

रोटरी समाचार में हम इस बात से सहमत है कि बड़ी परियोजनाओं के निष्पादन में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए कठिन परिश्रम एवं धन को आपकी पत्रिका में पर्याप्त रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारी समस्या यह है कि ज्यादातर हमें ऐसी परियोजनाओं की कोई जानकारी नहीं होती है। निश्चित ही आप सूचना एवं विपणन के महत्व को समझते है। जबकि अधिकतर समय हम नियमित कल्याणकारी परियोजनाओं, जो समुदाय के लिए आवश्यक है, से घिरे हुए होते है, जैसे कि रक्त दान शिविर या एक वाहन भेंट करना या मोतियाबिंद की जांच, **हम अक्सर बड़ी, बेहतर एवं अनोखी परियोजनाओं से बस इस सरल कारण से चूक जाते है कि किसी ने भी हमें उसके बारे में नहीं बताया था।**

तो यहाँ पर आपके संचार को सही स्थान पर लाने का एक निमंत्रण है; अपने क्लब से किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं के बारे में *रोटरी समाचार* से बात करने का कार्य सौंपे। यदि आप सोचते है कि उन्हें बाकि के रोटरी जगत के साथ साझा किया जाना चाहिए, तो कृपया कर लिखिए, या परियोजनाओं के विभिन्न चरणों की जानकारी को क्रमबद्ध कीजिये, पत्रकारिता या रिपोर्ट लिखने के मौलिक मानदंडों को ध्यान में रखते हुए।

- उत्पत्ति - परियोजना के बारे में कब विचार किया गया।
- कारण - क्यों इसकी योजना बनाई गयी; बेशक स्थानीय समुदाय की आवश्यकता की पूर्ती के लिए। यह आवश्यकता क्या थी?
- पैसा कैसे इकट्ठा किया गया; क्या यह एक टीआरएफ अनुदान था?
- चुनौतियाँ - क्या पैसा इकट्ठा करना कोई समस्या थी? क्या सरकारी मंजूरी अपेक्षित थी; इन्हें कैसे हासिल किया गया। अन्य चुनौतियाँ और कैसे उनके समाधान ढूंढें गए।
- निष्पादन - समय सीमा जिसके अंदर परियोजना पूर्ण की गयी; विभिन्न चरण।
- लाभार्थी - *रोटरी समाचार* में आपके क्लब की परियोजना के शामिल होने का सबसे अच्छा मौका होगा यदि **आप हमें मानव हित की कहानियाँ देंगे... लाभार्थियों की तस्वीरें एवं उनसे बातचीत।**
- तस्वीरें - एक तस्वीर 1,000 शब्दों के बराबर होती है। परियोजना एवं उसके लाभार्थियों की **अच्छी, क्रियाशील तस्वीरें लीजिये।**
- परियोजना के नायक - परियोजना में पूरे जोश के साथ शामिल रोटेरियनों पर प्रकाश डालिए एवं व्यक्त कीजिये, यदि वे क्लब नेतृत्वकर्ता नहीं है और मौन कार्यकर्ता है तो भी।
- चूंकि रोटरी अधिक **महिलाओं एवं युवा सदस्यों को शामिल करने के लिए उत्सुक है, ऐसे समूहों द्वारा की गयी परियोजनाओं के बारे में हमे बताइए।**

एक बार यह सब जमा लेने पर, अपनी परियोजना का दौरा करने के लिए हमें आमंत्रित कीजिये। याद रखिये कि हमारे पास प्रति माह केवल एक पत्रिका है और इसमें जगह की बहुत अधिक मांग है। इसलिए, जैसा कि एक RNT ट्रस्टी ने हाल ही में संपन्न हुई एक बैठक में ध्यान दिलाया था, अंतर कीजिये कि क्या जीएमएल के लिए उपयुक्त है, और क्या रोटेरियनों के लिए राष्ट्रीय पत्रिका में भेजा जाना चाहिए।

कम्बल, किताबें या बेंच बांटने जैसी सभी प्रकार की गतिविधियों को भेजने के बजाय, हमें पत्रिका के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ परियोजना भेजिए।

अंत में, हम केवल विशाल परियोजनाओं को ही नहीं खोज रहे है जिनमें वैश्विक अनुदानों से सैकड़ों हजारों डॉलर की लागत लगी हो। यहाँ तक कि **एक छोटी परियोजना जिसमें एक अनोखा विचार हो, और जो स्थानीय समुदाय को एक सरल, अलग समाधान दे सके,** का स्वागत है।

अवश्य अपने सुझाव भेजिए:
rushbhagat@gmail.com
पर संपादक को और
rotarynewsmagazine@gmail.com
पर **रोटरी समाचार संपातकीय विभाग** से संपर्क करें।

संपादक

निदेशक का संदेश

तैयारी से लेकर उद्देश्यपूर्ण प्रभाव तक

अप्रैल हमें उस जिम्मेदारी की याद दिलाता है जो तत्काल सेवा से परे है - अपने पर्यावरण की रक्षा और उसे बनाए रखने की जिम्मेदारी। आज पर्यावरण संरक्षण स्वास्थ्य, आजीविका और हमारे समुदायों के दीर्घकालिक कल्याण से अविभाज्य है। चाहे वह जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा या हरित आवरण की बहाली के माध्यम से हो, क्लबों में छोटे और निरंतर प्रयास भी सार्थक और स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जो हम आज संरक्षित करेंगे वह आने वाली पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता को परिभाषित करेगा।

हाल ही के सप्ताहों में, हमने अपने भविष्य की नेतृत्व क्षमता और संकल्प को देखा है, जैसे कि ज़ोन 4 और 7 के लिए गोवा में और ज़ोन 5 और 6 के लिए कोयम्बटूर में आयोजित दिशा कार्यक्रमों के माध्यम से। नवनिर्वाचित नेताओं और उनकी टीम स्पष्ट उद्देश्य के साथ एकत्रित हुईं और सदस्यता, टीआरएफ योगदान और प्रभावशाली सेवा के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए। इससे भी महत्वपूर्ण इन मंचों ने दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं और आवश्यक सामूहिक प्रयास को संरेखित किया, जिससे परिणाम प्राप्त करना संभव हुआ।

साथ ही, हम वर्तमान में मजबूती से जुड़े हुए हैं। हमारे मंडलों ने प्रमुख क्षेत्रों में उत्साहजनक प्रगति की हैं। यह गति मंडल गवर्नरों, उनकी टीमों और क्लब स्तर के रोटेरियनों की प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो अक्सर बिना किसी मान्यता के अथक परिश्रम करते हैं। आने वाले महीनों का उद्देश्य इस प्रगति को बनाए रखना है - नए सदस्यों का स्वागत करना, टीआरएफ को सुदृढ़ करना और यह सुनिश्चित करना कि हम अपने लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करें।

यह तैयारी का सबसे महत्वपूर्ण चरण भी है। मंडलों में अध्यक्ष-निर्वाचित, मंडल टीम और क्लब स्तर के अभिविन्यास के लिए संरचित सीख कार्यक्रम चल रहे हैं। सीखना केवल कैलेंडर की आवश्यकता नहीं है; यह वह स्थान है जहाँ नेतृत्व का निर्माण होता है और आत्मविश्वास विकसित होता है। यह भूमिकाओं में स्पष्टता लाता है, क्रियान्वयन को तेज करता है और यह सुनिश्चित करता है कि योजनाएँ सार्थक परिणामों में बदलें। अच्छी तरह प्रशिक्षित टीमें चुनौतियों का बेहतर पूर्वानुमान लगाती हैं, अधिक प्रभावी रूप से सहयोग करती हैं और लगातार परिणाम प्रदान करती हैं।

इरादे और प्रभाव के बीच का अंतर अक्सर इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितनी अच्छी तरह तैयारी करते हैं। जब नेता प्रारंभ में ही संरेखित और सुसज्जित होते हैं, तो आने वाला वर्ष अनिश्चितता का प्रबंधन करने के बजाय अवसर सृजित करने का वर्ष बन जाता है।

आगे बढ़ते हुए चलिए हम तैयारियों को जिम्मेदारी के साथ जोड़ें। आइए हम अपने पर्यावरण की गहन देखभाल करें, अपने नेताओं को उद्देश्य के साथ तैयार करें और उस गति को बनाए रखें जो हमने हासिल की है। यदि हम यह अच्छी तरह से करते हैं तो हम न केवल अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे - बल्कि रोटरी की प्रासंगिकता और प्रभाव को भी सुदृढ़ करेंगे।

आइए हम *भलाई के लिए एकजुट हों* और *स्थायी प्रभाव सृजित* करें।

के पी नागेश
रो ई निदेशक, 2025-27

2026
कन्वेंशन

कुछ पसंदीदा चीज़ें

सभी प्रतिभागियों की रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन का कोई न कोई पसंदीदा अनुभव होता है - कभी-कभी दो या तीन भी। ताइपे में सबसे अधिक प्रतीक्षित अनुभवों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

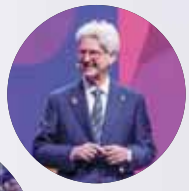

- रोटरी के बारे में गहन अध्ययन, जिसमें सीधे रो ई अध्यक्ष और रो ई महासचिव से सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
- झंडा समारोह, जो रोटरी के देशों और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है। रोमांचक और उत्साहपूर्ण!
- हाउस ऑफ फ्रेंडशिप - रोटरी फेलोशिप बूथ और शांति प्रदर्शनी दो प्रमुख आकर्षण।
- मित्र बनाने, अपनी रुचि का पालन करने और एक रोमांचक शहर का अन्वेषण करने का अवसर।
- उत्कृष्ट मनोरंजन और प्रेरणा - प्रसिद्ध वक्ता और मंच पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ देखने का अवसर।
- रोटरी की वैश्विक पहुँच के साथ संभावनाओं को देखने का अवसर।

रोटरी क्लब ताइपे पी-आन की सदस्य पॉलिन लियांग के अनुसार, रो ई एक ऐसी संभावना प्रदान करता है जो अंतरराष्ट्रीय सेवा का अवसर बनती है। रोटरी के माध्यम से हमारे मदद के हाथ बहुत लंबे हो सकते हैं और दुनिया एक छोटे गाँव जैसी महसूस होती है क्योंकि रोटरी हमें एक करती है, वह कहती है। लियांग, जो एक होस्ट कमिटी की सदस्य हैं, आशा करती हैं कि आप ताइवान आएँगे जब रोटरी का यह गाँव 13-17 जून को एकत्रित होगा।

अधिक जानकारी प्राप्त करें और* convention.rotary.org *पर पंजीकरण कराएं।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	लियोन जे
RID 2982	शिवसुंदरम पी
RID 3000	कार्तिक जे
RID 3011	रविंदर गुगनानी
RID 3012	अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020	कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030	ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040	सुशील मल्होत्रा
RID 3053	निशा शेखावत
RID 3055	निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056	प्रज्ञा मेहता
RID 3060	अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070	रोहित ओबेरॉय
RID 3080	रवि प्रकाश
RID 3090	भूपेश मेहता
RID 3100	नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110	राजेन विद्यार्थी
RID 3120	अशुतोष अग्रवाल
RID 3131	संतोष मधुकर मराठे
RID 3132	सुधीर वी लातुरे
RID 3141	मनीष मोटवानी
RID 3142	हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150	राम प्रसाद एस वी
RID 3160	रविंद्र एम के
RID 3170	अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181	रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182	पलक्शा के
RID 3191	श्रीधर बी आर
RID 3192	एलिज़ाबेथ चेरियन
RID 3203	धनासेकर बी
RID 3204	बिजोश मैनुअल
RID 3205	रमेश जी एन
RID 3206	चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211	टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212	जे धिनेश बाबू
RID 3231	वी सुरेश
RID 3233	डी देवेंद्रन
RID 3234	विनोद कुमार सराओगी
RID 3240	कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250	नम्रता
RID 3261	अमित जायसवाल
RID 3262	मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291	रामेन्दु होमचौधुरी

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3000
के पी नागेश **रो ई निदेशक**	RID 3191
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
ए एस वेंकटेश	RID 3234
राजु सुब्रमण्यन	RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी	RID 3291
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय **अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
ज्ञानेश्वर शेवाळे **वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3030
एम के रविंद्र **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3160
चेल्ला के राघवेन्द्रन **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3206

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

आपके प्रभावी सहयोगी

रोटरी का पर्यावरण केंद्रित क्षेत्र क्लबों और मंडलों को अपने समुदायों में वास्तव में स्थायी प्रभाव डालने का अवसर प्रदान करता है।

एक संभावना यह है कि रोटरी और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (णछएझ) के बीच फ्रेश वॉटर के लिए साझेदारी के माध्यम से सामुदायिक कार्यवाही की जा सकती है, जिसने 2024 में यह पहल शुरू की थी ताकि दुनिया भर में ताजे पानी के संसाधनों की सुरक्षा, पुनर्स्थापना और बेहतर प्रबंधन किया जा सके।

इस कार्यक्रम के माध्यम से रोटरी और रोटरेक्ट क्लब किसी स्थानीय जल स्रोत - जैसे नदी, झील, दलदल या भूमिगत जल - की पहचान करते हैं और उसकी दीर्घकालिक सुरक्षा और पुनर्स्थापना के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। सदस्य UNEP की तकनीकी विशेषज्ञता का लाभ उठा सकते हैं।

साल्वाडोर रिको, कैलिफ़ोर्निया के साउथ उकियाह रोटरी क्लब के सदस्य और इस साझेदारी के तकनीकी सलाहकार, हमें इसके बारे में और बताते हैं:

यह साझेदारी मेरे लिए बेहद व्यक्तिगत है।

स्वच्छ नदियों के प्रति मेरा जूनून बचपन में मेक्सिको में हुए एक दुखद पारिवारिक अनुभव से जुड़ा हुआ है: हमें विश्वास है कि मेरी बड़ी बहन की मृत्यु पोलियो की वजह से हुई जिससे वह एक प्रदूषित नदी में तैरते समय संक्रमित हुई थी। असुरक्षित जल कोई अमूर्त पर्यावरणीय मुद्दा नहीं है; यह परिवारों और समुदायों के लिए जीवन, स्वास्थ्य और सम्मान का मुद्दा है।

यह अनुभव मुझे द रोटरी फाउंडेशन कैडर ऑफ टेक्निकल एडवाइजर्स के एक सदस्य के रूप में मेरे कार्य को प्रेरित करता है, जहाँ मैं यह सुनिश्चित करता हूँ कि रोटरी सदस्यों को प्रमाणित तकनीकी ज्ञान तक पहुँच प्राप्त हो ताकि उनकी वैश्विक अनुदान समर्थित परियोजनाएँ स्थायी और वृहद् समाधानों के माध्यम से दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकें।

आज, स्वच्छ जल के लिए सामुदायिक परियोजनाएं रोटरी क्लबों को एक साझा मंच प्रदान करके वैश्विक स्तर पर रोटरी का समर्थन करती है, जहाँ वे अपनी परियोजनाएं अपलोड कर सकते हैं, अन्य क्लबों से सीख सकते हैं और वैश्विक अनुदान तथा क्लब-दर-क्लब सहयोग के माध्यम से तकनीकी और वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

इस पहल का प्रभाव 2024 में स्पष्ट रूप से दिखा, जब मेक्सिको के मंडल 4170 के पर्यावरण अध्यक्ष ने एक गंभीर चुनौती साझा की: छोटे, पारिवारिक स्वामित्व वाले वस्त्र कारखाने लेर्मा नदी के उच्च क्षेत्र को प्रदूषित कर रहे थे। रोटेरियनों के पास स्पष्ट समाधान नहीं थे। स्वच्छ जल साझेदारी के माध्यम से मैंने उन्हें UNEP विशेषज्ञों से जोड़ा जिन्होंने बायोरिमेडिएशन रणनीतियों के लिए मार्गदर्शन दिया। इस सहयोग से एक वैश्विक अनुदान आवेदन तैयार हुआ और हमें उम्मीद है कि इस समुदाय के लिए स्वच्छ जल सुनिश्चित होगा।

रोटरी क्लबों, पारिवारिक स्वामित्व वाली वस्त्र कंपनियों और सरकारी अधिकारियों के बीच यह साझेदारी साझा जिम्मेदारी और दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित करती है।

प्रत्येक रोटरी क्लब अपने ताजे पानी की परियोजनाओं के प्रभाव को बढ़ाने के लिए communityactionforfreshwater.org पर पंजीकृत कर सकता है।

अपने समुदाय के आसपास देखें - मुझे यकीन है कि आपको कोई ऐसा जल स्रोत मिलेगा जिसे संरक्षण की आवश्यकता है। रोटरी फाउंडेशन फ्रेश वॉटर के लिए सामुदायिक कार्यवाही और वैश्विक अनुदान के माध्यम से आपकी परियोजना का समर्थन कर सकता है।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब बॉम्बे ने कैंसर रोगियों को पहुंचाई राहत

रशीदा भगत

रोटरी क्लब बॉम्बे, रो ई मंडल 3141, भारत के प्रमुख, सबसे सम्मानित और पुराने क्लबों में से एक है जिसकी स्थापना 1929 में हुई थी। और जब बात प्रभावशाली, सार्थक और बड़े पैमाने पर सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को करने की आती है, तो यह क्लब अपने आप में बेमिसाल है। हाल ही में मुंबई में मैंने इसके प्रतिष्ठित 'धर्मशाला' परियोजना का दौरा किया, जो टाटा मेमोरियल अस्पताल (एक उन्नत कैंसर उपचार केंद्र) में आने वाले कैंसर रोगियों के लिए भोइवाड़ा-परेल में 100 फ्लैटों की अस्थायी आवास सुविधा संचालित करता है। यहाँ, किसी परीकथा की तरह, प्रत्येक रोगी और उनके परिचारकों को

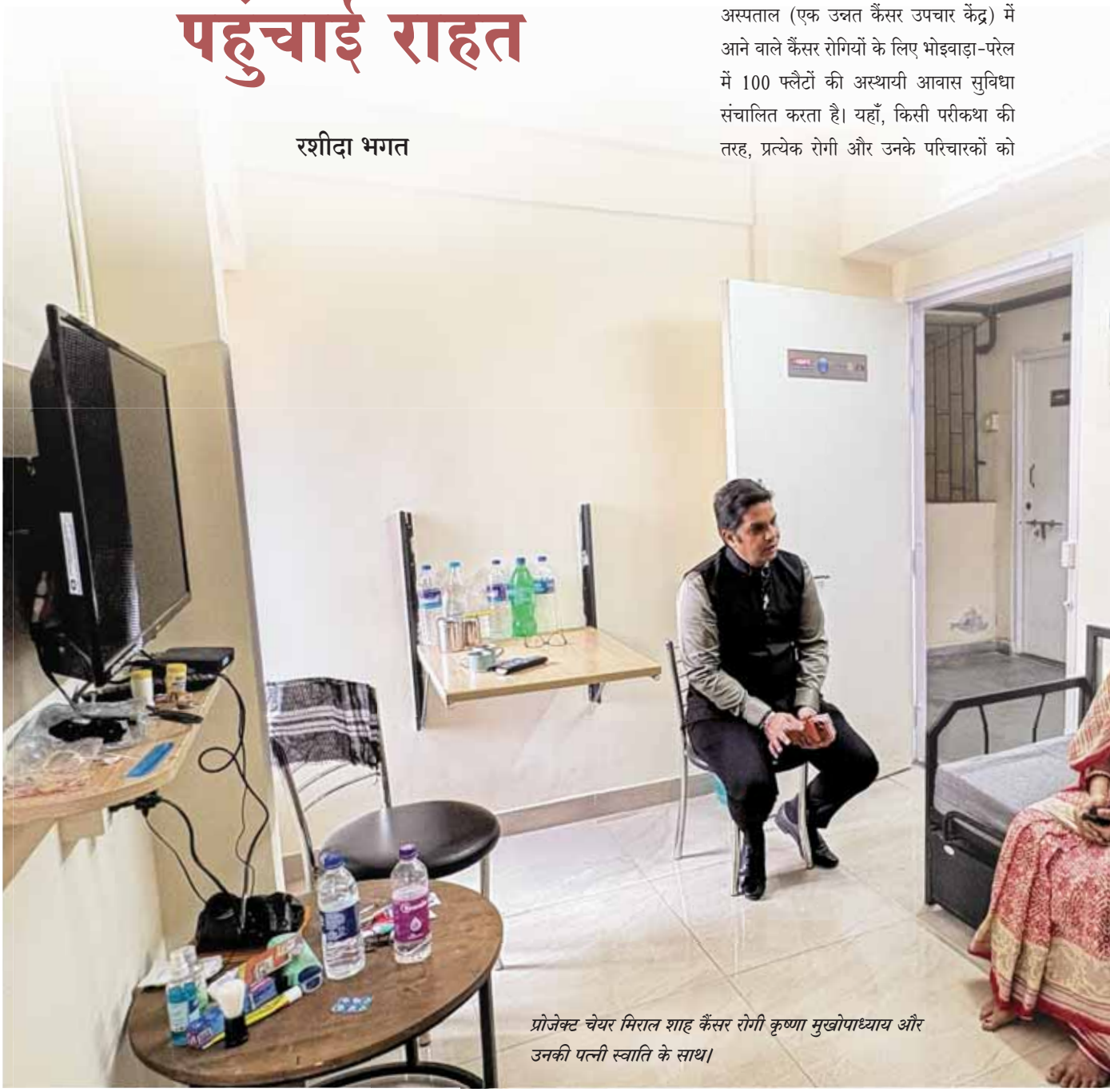

प्रोजेक्ट चेयर मिराल शाह कैंसर रोगी कृष्णा मुखोपाध्याय और उनकी पत्नी स्वाति के साथ।

एक महीने के लिए एक साधारण, लेकिन साफ-सुथरा, आरामदायक और सुसज्जित 1 बीएचके फ्लैट केवल 300 के मामूली मासिक किराए पर दिया जाता है।

शानदार और विशाल लिफ्ट से सुसज्जित इस सुविधा में, पास के कैंसर अस्पताल में कीमोथेरेपी या रेडिएशन करा रहे रोगियों और उनके साथ आए लोगों को बहुत ही कम कीमत पर ताजा बना हुआ, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक भोजन दिया जाता है। आवास और भोजन के अलावा, यहाँ लॉन्ड्री सेवा और शटल बसें भी उपलब्ध हैं जो निवासियों को अस्पताल ले जाती हैं और वापस लाती हैं।

यह परियोजना, जिसने तीन साल पूरे कर लिए हैं, एमएचएडीए (महाराष्ट्र आवास और क्षेत्र विकास प्राधिकरण) की एक बहुमंजिला इमारत से संचालित होती है, जिसे 'ट्रांजिट कैंप' के रूप में जाना जाता है। इनका उपयोग आमतौर पर झुग्गीवासियों को अस्थायी रूप से बसाने के लिए किया जाता है, जब उनकी झुग्गियों का पुनर्विकास किया जाता है। क्लब

ने 16वीं से 21वीं मंजिल तक स्थित 100 फ्लैटों को 30 साल की लीज पर लिया है और उन्हें बुनियादी 1 बीएचके इकाइयों में तब्दील किया है। एचडीएफसी को सीएसआर साझेदार बनाकर, इस परियोजना के लिए 10 वर्षों तक प्रति वर्ष ₹1.5 करोड़ की सहायता सुनिश्चित की गई है, जिससे रखरखाव, स्टाफ और अन्य खर्च पूरे होते हैं।

परियोजना अध्यक्ष और क्लब सदस्य मिरल शाह बताते हैं कि इस इमारत की ऊपरी मंजिल पर 12 फ्लैट्स को 1 बीएचके स्टूडियो यूनिट्स में बदलकर टाटा मेमोरियल अस्पताल के डॉक्टरों को दिया गया है, जिन्हें आवास की आवश्यकता होती है। ये फ्लैट मरीजों वाले फ्लैट्स जैसे ही हैं, बस इनमें एसी की सुविधा भी है।

बाकि 84 फ्लैट्स मरीजों और उनके परिवारों के लिए हैं, एक को शाह के कार्यालय में बदला गया है, एक फ्लैट अस्पताल के कार्यालय के लिए दिया गया है, और दो फ्लैट्स को रसोई में बदला गया है जहाँ निवासियों के लिए भोजन तैयार होता है।

इस परियोजना की शुरुआत के बारे में बताते हुए, रो ई मंडल 3141 के पूर्व मंडल गवर्नर और क्लब सदस्य संदीप अग्रवाला कहते हैं कि 2022 में मंडल का नेतृत्व करने से पहले, वह पालघर के आदिवासी जिले में मौखिक, सर्वाइकल और स्तन कैंसर शिविर आयोजित करने के लिए टाटा रिसर्च सेंटर के संपर्क में थे। ''हमारी बैठकों में, उन्होंने कैंसर रोगियों के लिए कई मशीनों का अनुरोध किया। कोविड के दौरान, रोटेरियनों ने कैंसर रोगियों को लगाए जाने वाले विशेष टीकाकरण में मदद की थी। हम काफी बड़े योगदान के साथ उनकी मदद कर सकें। लेकिन हर बार जब मैं टाटा मेमोरियल अस्पताल जाने वाली सड़कों से गुजरता था, तो फुटपाथों पर या फ्लाईओवर के नीचे रहने वाले इतने सारे कैंसर रोगियों को देखकर मैं विचलित हो जाता था। हम जानते हैं कि कैंसर एक ऐसी बीमारी है जो उच्च आवर्ती खर्चों के कारण मध्यम और निम्न-वर्ग के परिवारों को आर्थिक रूपों से तोड़ देती है।''

इसी बात ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि रोटरी उन वंचित कैंसर रोगियों को आराम देने के लिए क्या कर सकती है जो इलाज के लिए पूरे भारत के दूर-दराज के स्थानों से मुंबई आते हैं, लेकिन आवास का खर्च नहीं उठा सकते। एक बड़ी सफलता तब मिली जब हमें टाटा अस्पताल के माध्यम से ही एमएचएडीए के 100 फ्लैटों की पेशकश की गई, जो इस अस्पताल से बहुत पास, केवल 10 से 15 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित थे। ये खाली फ्लैट थे; उन्होंने हमसे अनुरोध किया कि हम उन्हें सभी सुविधाओं से सुसज्जित करें और उनकी देखरेख भी करें। हमने इस जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार किया और बिजली की गति से सभी फ्लैटों को सुसज्जित कर दिया।

इनके नवीनीकरण और साज-सज्जा पर लगभग ₹4.5 करोड़ खर्च किए गए। यह एकमुश्त राशि भी एचडीएफसी ने अपने सीएसआर फंड से दी थी। हमने सुनिश्चित किया कि आवास किसी थ्री-स्टार होटल ग्रेड से कम न हो, क्योंकि मरीज चाहे किसी भी वर्ग या समाज के स्तर से आए हों, हम चाहते थे कि उन्हें घर जैसा महसूस हो। प्रत्येक फ्लैट में एक डबल बेड, एक सोफा-कम-बेड दिया गया, ताकि तीन लोग रह सकें। सुविधा के लिए भारतीय शौचालयों को पश्चिमी शैली में बदल दिया गया, और वॉटर हीटर व 600 लीटर से अधिक पानी के भंडारण के लिए टैंक प्रदान किए गए। इसके अलावा, एक रेफ्रिजरेटर, राइटिंग टेबल और केबल कनेक्शन के साथ टीवी दिया गया। इंडक्शन कुकिंग सुविधाओं एवं बर्तनों के साथ एक पूरी तरह से सुसज्जित रसोईघर भी प्रदान किया गया।

अग्रवाला कहते हैं कि एक बार जब यह हो गया, तो टीआरसी निदेशक डॉ सुदीप गुप्ता ने हमसे पूछा कि चूंकि आपके पास यहाँ इतने सारे कैंसर रोगी रह रहे हैं, क्या हमारे पास डॉक्टरों के रहने के लिए 12 फ्लैटों की ऊपरी मंजिल हो सकती है, ताकि कोई आपात स्थिति आने पर वे देखभाल कर सकें? यह किया गया, और डॉक्टरों की सेवा के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक अतिरिक्त

सुविधा दी गई। उनके फ्लैट्स में एसी भी लगाए गए!

धीरे-धीरे, सभी फ्लैटों की सेवाओं में वृद्धि की गई; एक दिन छोड़कर लॉन्ड्री की जाती है और बेडशीट व तौलिये बदले जाते हैं। छह महीने के भीतर रोटेरियन को एहसास हुआ कि कैंसर रोगियों के लिए अस्पताल तक 15 मिनट की पैदल दूरी भी चुनौतीपूर्ण है। ''इसलिए, हमने अपना वाहन खरीदा और अस्पताल और धर्मशाला के बीच नियमित अंतराल पर एक मुफ्त शटल सेवा शुरू की।''

उम्मीद के मुताबिक, पूरे भारत से टाटा मेमोरियल अस्पताल आने वाले मरीजों के लिए आवास की मांग बहुत अधिक है, इसलिए क्लब सख्ती से अस्पताल के रेफरल के आधार पर ही प्रवेश देता है। ''हम उन्हें केवल एक महीने तक रहने की अनुमति देते हैं, सिवाय किसी असाधारण मामले के जहाँ उपचार करने वाले डॉक्टर ठहरने की अवधि बढ़ाने की सिफारिश करते हैं।''

यहाँ रहने वाले मरीज गंभीर स्थिति में नहीं होते और उन्हें आपातकालीन चिकित्सा उपचार की आवश्यकता नहीं होती। शाह कहते हैं, ''यहाँ भेजे गए अधिकांश मरीजों की सर्जरी पहले ही हो चुकी होती है और उन्हें फॉलो-अप कीमोथेरेपी या रेडिएशन सत्रों की आवश्यकता होती है। यहाँ रहने वाले लगभग 70 प्रतिशत लोग कोलकाता और शेष बंगाल से आते हैं और बाजार दरों पर आवास का खर्च नहीं उठा पाते है। टाटा मेमोरियल अस्पताल, जो यहाँ से केवल 10 मिनट की दूरी पर है, मरीजों की भुगतान क्षमता तय करने के बाद उन्हें हमारे पास भेजता है।''

जो लोग कुछ भी भुगतान नहीं कर सकते उन्हें मुफ्त आवास दिया जाता है, जबकि अन्य से ₹300 प्रति माह लिया जाता है, और जो थोड़ा अधिक भुगतान कर सकते हैं उनसे ₹600 प्रति माह लिया जाता है। हालांकि प्रत्येक रोगी के साथ दो रिश्तेदारों की अनुमति है, लेकिन एक फ्लैट में औसतन दो लोग ही रहते है। अधिकांश रोगी 35-55 आयु वर्ग के हैं, लेकिन उन्हें कम उम्र के मरीज भी देखने को मिलते हैं, जिसमें किशोर भी शामिल होते है। वह आगे कहते हैं कि महिलाओं में सबसे आम कैंसर स्तन कैंसर है।

धर्मशाला की मंजिलों पर लगभग 12 हाउसकीपिंग स्टाफ और 12 सुरक्षाकर्मी तैनात हैं; सुरक्षाकर्मी मुख्य रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए हैं कि यदि किसी मरीज को अचानक कुछ हो जाए, तो उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए परिसर में कोई मदद करने वाला उपलब्ध हो सकें।

हाउसकीपिंग स्टाफ की नियुक्ति ही इन चमचमाते साफ कॉरिडोर का कारण है; रसोई भी उतनी ही साफ-सुथरी और व्यवस्थित है। हमारी यात्रा के अंत में, हमारे लिए एक सरप्राइज़ इंतज़ार कर रहा था मुंबई का बेहद स्वादिष्ट और सर्वप्रिय बटाटा-वड़ा और लाजवाब, मुँह में पानी ला देने वाला पोहा, पूरी तरह मसालों से

बाएं से घड़ी की दिशा में: शाह कैंसर रोगी रोमा भौमिक (बीच में) के साथ, उनके बेटे विश्वजीत और बहू शिवली के साथ; PRIP कल्याण बेनर्जी, PDG संदीप अग्रवाला और शाह के साथ; पैंट्री का एक दृश्य; रोटरी क्लब बॉम्बे के सदस्य एक कैंसर रोगी और उसके परिवार के साथ; PDG अग्रवाला और रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष बिमल मेहता एक कैंसर सर्वाइवर के साथ।

सजा हुआ। जब हम उसे चाव से खाने लगे, तो शाह मुस्कुराते हुए बोले, हर बार जब रोटेरियन इस परियोजना का दौरा करते हैं, उन्हें हमारा खाना बहुत पसंद आता है। यह सच में बहुत स्वादिष्ट है!

अग्रवाला याद करते हैं कि एक बार जब फ्लैट तैयार हो गए और किचन सहित सभी सुविधाएँ दे दी गईं, तब परियोजना टीम को एहसास हुआ कि मरीज और उनके परिचारक पौष्टिक और स्वच्छ भोजन नहीं कर रहे थे, क्योंकि अधिकांश लोग बाहर से खाना मंगवा रहे थे और बहुत कम लोग ही इंडक्शन स्टोव पर खाना बना रहे थे, वह भी केवल नाश्ता, चाय या कॉफी तैयार करने तक सीमित था।

इसलिए उन्होंने एक पूर्ण रूप से सुसज्जित रसोई शुरू करने का निर्णय लिया और इसके लिए चार में से दो यूनिट्स का उपयोग किया। हमने पूरे सप्ताह अलग-अलग मेनू के साथ रियायती पौष्टिक भोजन देना शुरू किया; भोजन में चपाती, सब्जियां, चावल, दाल और दही शामिल होता हैं। नाश्ते में, अलग-अलग दिनों में पोहा, इडली, डोसा, उपमा और एक गिलास दूध दिया जाता है। फल भी अक्सर दिए जाते हैं क्योंकि दानकर्ता इसके लिए आगे आते हैं। और यह सब केवल ₹25 की मामूली राशि में प्रदान किया जाता है जिसमें नाश्ते के लिए ₹5 और दोपहर व रात के खाने के लिए ₹10 लिए जाते है। हमारी लागत ₹150 प्रतिदिन है।

हमनें पाया कि तेल और मसाले कम होते हुए भी खाना बहुत स्वादिष्ट था। जो लोग दिन में ₹25 भी नहीं दे सकते, उन्हें उनके पार्टनर वीकेयर या कुछ क्लब सदस्यों की मदद से मुफ्त भोजन दिया जाता है।

शाह बताते हैं कि रसोई एक शानदार जोड़े शीतल और विक्रांत भाटकर के साथ साझेदारी में चलाई जा रही है, जो कैंसर रोगियों और उनके रिश्तेदारों को भारी रियायती दर पर किफायती एवं पौष्टिक, घर का बना खाना उपलब्ध कराने के लिए

PRIP कल्याण बेनर्जी एक कैंसर सर्वाइवर के साथ।

टाटा मेमोरियल अस्पताल के पास दो ग्रास नामक भोजन सेवा चलाते हैं।

एक छोटे से फ्लैट में, मैं पश्चिम बंगाल की रोमा भौमिक से मिली; वह 51 वर्ष की हैं और दो महीने पूर्व, सीटी स्कैन में उनके अपेंडिक्स पर गांठ पाए जाने के बाद उन्हें आगे के निदान एवं परीक्षणों के लिए यहाँ भेजा गया था। वह यहाँ अपने बेटे विश्वजीत और बहू शिवली के साथ हैं। वे सभी कोलकाता से लगभग 3 घंटे की दूरी पर रहते हैं। दुख की बात है कि शिवली को भी 2024 में कैंसर का पता चला था। हम इसी अस्पताल में आए थे; उसे थायराइड ग्रंथि में समस्या थी, इलाज कराया और अब वह पूरी तरह ठीक है, विश्वजीत कहते हैं।

जब उनकी पत्नी का इलाज चल रहा था, उन्हें चार महीने मुंबई में रहना पड़ा और वे यहाँ भी रहे। चूंकि नियमों के अनुसार इस धर्मशाला में केवल 30 दिनों तक रहने की अनुमति थी, इसलिए उन्हें दूसरा आवास ढूंढना पड़ा। हमें ₹700 में एक बहुत ही साधारण कमरा मिला। वह बिल्कुल भी इसके जैसा नहीं था; हमें कुछ अन्य लोगों के साथ कमरा साझा करना पड़ा और बहुत अधिक भुगतान करना पड़ा...।

उन्होंने आगे कहा कि बाहर खाना भी बहुत महंगा था और यहाँ दी जाने वाली गुणवत्ता के आसपास भी नहीं था। लेकिन वह 30 दिनों की समय सीमा के करीब आने को लेकर चिंतित हैं। उन्हें यकीन है कि डॉक्टर उनके ठहरने की अवधि बढ़ाने की सिफारिश करेंगे। हमें शायद 15-20 दिन अतिरिक्त रुकना पड़े, लेकिन नियम इसकी अनुमति नहीं देंगे, और एक बार फिर, मुझे दूसरी जगह ढूंढनी होगी। इस कीमत पर हमें इसके जैसा कुछ भी मिलने की कोई उम्मीद नहीं है, वह आह भरते हैं।

शाह, जो बातचीत सुन रहे हैं, उन्हें आश्वासन देते हैं कि यदि उन्हें टाटा मेमोरियल अस्पताल से सिफारिश मिलती है, तो वह यहाँ उनके प्रवास को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

एक अन्य मरीज जिनसे मैं बातचीत करती हूँ, वे पूर्वी मिर्जापुर, पश्चिम बंगाल, के कृष्ण गोपाल मुखोपाध्याय हैं, जिन्हें फेफड़ों की समस्या है। उनके परीक्षण पूरे हो चुके हैं और उनकी कीमोथेरेपी जल्द ही शुरू होगी। राज्य सरकार के पूर्व कर्मचारी, अब वे एक पेंशनभोगी हैं और यहाँ अपनी पत्नी स्वाति और एक भतीजे के साथ रह रहे हैं। स्वाति आवास से बहुत खुश हैं और कहती हैं कि भोजन स्वच्छ और स्वादिष्ट है। जैसे ही मैं छोटी रसोई में रखे इंडक्शन स्टोव की ओर देखती हूँ, वह कहती हैं, ओह हाँ, मैं इसका उपयोग चाय और कॉफी और कुछ सब्जी बनाने के लिए करती हूँ। सब कुछ ठीक है, लेकिन अगर वे हमें एक एग्जॉस्ट फैन दे सकें, तो अच्छा होगा क्योंकि मेरे खाना बनाने के बाद रसोई में धुआं हो जाता है और खाने की गंध अपार्टमेंट में बनी रहती है।

जैसे ही हम बाहर निकलते हैं, शाह मुस्कुराते हुए कहते हैं, हम उन्हें शाकाहारी भोजन देते हैं और कई बंगाली मछली के लिए तरसते हैं, इसलिए वे इसे अपने फ्लैटों में पकाते हैं। हम एग्जॉस्ट फैन लगाने की संभावना पर विचार करेंगे।

हाल ही में पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने धर्मशाला का दौरा किया और वहां दो घंटे बिताकर मरीजों से बातचीत की।

फरवरी के मध्य तक, इस सुविधा से 2,530 कैंसर रोगी लाभान्वित हो चुके थे; हर बुधवार को परियोजना अध्यक्ष यहाँ कुछ घंटों के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए आते है कि सुविधा सुचारू रूप से और बिना किसी बाधा के चलती रहे।

मरीजों और उनके परिवारों से मिली शानदार प्रतिक्रियाओं एवं कृतज्ञता के बाद, रोटरी क्लब बॉम्बे अब इस परियोजना का विस्तार करने की योजना बना रहा है। सुनने में आ रहा है कि अगले 10 महीनों में यह इमारत खाली हो जाएगी, और हम अपनी धर्मशाला को 100 से बढ़ाकर 300 फ्लैटों की सुविधा में विस्तारित करने की योजना बना रहे हैं।

फंड का क्या? शाह मुस्कुराते हुए कहते हैं, संदीप (अग्रवाला) ने मुझे इसके लिए दानकर्ता ढूँढने का बड़ा काम सौंपा है!

अग्रवाला खुद स्वीकार करते हैं, हमने किसी भी तरह से सभी लोगों को फुटपाथों और फ्लाईओवर के नीचे से नहीं हटाया है, लेकिन हमने कम से कम उनमें से कुछ की पीड़ा को कम किया है। ऐसी कई और धर्मशालाओं की आवश्यकता है। निश्चित रूप से, रोटरी क्लब और अधिक धर्मशालाओं पर काम करने के लिए तैयार है, लेकिन यह भी ध्यान में रखना होगा कि मुंबई में रियल एस्टेट प्राप्त करना बहुत कठिन है। हम हर साल बीएमसी और एमएचएडीए को करों एवं अन्य शुल्कों के रूप में ₹50 लाख से अधिक का भुगतान करते हैं, जबकि वे हमसे कोई किराया भी नहीं लेते है। फिर भी, हम अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

चित्र: रशीदा भगत

बच्चों के लिए पर्यावरण देखभाल कार्यक्रम

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब चेन्नई एंकरेज, रो ई मंडल 3234, ने 'रोटाकिड्ज़' की मेजबानी की, जो एक जीवंत इंटर-क्लब कार्यक्रम था, जिसमें 3 से 13 वर्ष की आयु के युवा एनेट्स ने भाग लिया। तीन श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा करते हुए, बच्चों ने 'पर्यावरण - प्रोजेक्ट प्लैनेट' विषय को उत्साह के साथ अपनाया और रचनात्मकता के साथ-साथ महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता भी दिखाई।

चाहे वह पेड़ की पोशाक पहने कोई नन्हा बच्चा हो या नवीकरणीय ऊर्जा की आवश्यकता को स्पष्ट करने वाला कोई बड़ा प्रतिभागी, प्रत्येक बच्चे ने इस ग्रह के प्रति सच्ची चिंता प्रदर्शित की। कार्यक्रम की अध्यक्ष भारती सरवनन ने कहा, उनकी ऊर्जा ने इस कार्यक्रम को महज़ एक प्रतियोगिता से कहीं अधिक बना दिया; यह बदलाव के लिए प्रतिबद्ध युवा आवाजों का एक उत्सव बन गया।

प्रतियोगिताओं में पेंटिंग और फैंसी ड्रेस शामिल थीं, जिनके विषय प्रकृति एवं जल संरक्षण, रीसाइक्लिंग, वन्यजीव संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा और प्रदूषण नियंत्रण जैसे मुद्दों पर आधारित थे। बच्चों ने इन विषयों को कल्पनाशीलता एवं स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के उत्सवपूर्ण माहौल को और भी जीवंत बनाने के लिए पर्यावरण-थीम वाला एक फोटोबूथ भी लगाया गया, जहाँ बच्चों और अभिभावकों का स्वागत किया गया और और एक यादगार निशानी के रूप में तुरंत फ्रेम की गई तस्वीरें दी गईं। हर प्रतिभागी को एक गिफ्ट बैग और प्रमाणपत्र दिया गया, जबकि अभिभावकों को भी उनके प्रोत्साहन और समर्थन के लिए सम्मानित किया गया।

दाएं से: क्लब अध्यक्ष विनीता वेंकटेश, उषा सराओगी, DGND एस रवि और इवेंट चेयर भारती सरवनन, एक प्रतिभागी और उसकी मां के साथ।

एक जादूगर के मनोरंजक प्रदर्शन ने कार्यक्रम की उत्सुकता को बनाए रखा, जहां सम्वदात्मक जादू और मेंटलिज़्म के माध्यम से बच्चों को सत्रों के बीच मनोरंजन प्रदान किया, जिससे कार्यक्रम में कोई भी पल नीरस नहीं रहा।

''युवा प्रतिभागियों ने अपने आत्मविश्वास, परिधानों और विचारपूर्ण प्रस्तुतियों से सभी को मोहित किया, जो वास्तव में जेन ज़ी की भावना - एक टिकाऊ ग्रह के भावी संरक्षक - को दर्शाता है,'' भारती ने कहा।

इस कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में रोटरी क्लब मद्रास के सदस्य शेष साई; उद्यमी काव्या रेड्डी; और नेशनल पब्लिक स्कूल, चेन्नई, की शिक्षिका दिव्या शामिल थीं। क्लब अध्यक्ष विनिता वेंकटेश द्वारा सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध रोटाकिड्ज़ प्रतियोगिता और आनंद का एक बेहतरीन संगम था; यह हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी का भविष्य सक्षम और संवेदनशील हाथों में है।■

रोटरी क्लब अनाकापल्लीके सदस्य, डीजी वाई कल्याण चक्रवर्ती (बीच में) के साथ, गाँव की महिलाओं को सिलाई मशीनें और सहायक सामग्री वितरित करने के बाद।

Rotary PEOPLE OF ACTION

आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाना

जयश्री

विशाखापत्तनम मंडल के गथुम गांव और उसके आसपास के गांवों की लगभग 1,250 महिलाएं वर्तमान में रोटरी क्लब ऑफ विजाग सुरभि, रो ई मंडल 3020 की एक पहल, *प्रोजेक्ट रोटरी शक्ति* के तहत तीन महीने के पाठ्यक्रम के माध्यम से सिलाई और कढ़ाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

गथुम एक आदिवासी बस्ती है, जिसे मविशेष रूप से कमजोर आदिवासी समुदायफश्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। यह आंध्र-ओडिशा सीमा पर हुकुमपेटा मंडल के पहाड़ी आंतरिक क्षेत्र में स्थित है। रो ई मंडल 3020 के व्यावसायिक सेवा अध्यक्ष श्रीनिवास राव वुग्गिना कहते हैं, ''यह एक चुनौतीपूर्ण इलाका है, जहां असामाजिक कार्यकर्ता सक्रिय हैं और परिवहन की सुविधा भी नहीं है। वे भारत सरकार के स्किल इंडिया मिशन (एसआईएम) के नोडल अधिकारी और विशाखापत्तनम के जन शिक्षण संस्थान (जेएसएस) के कार्यक्रम अधिकारी भी हैं।''

वुग्गिना, जो 2022 से विशाखापत्तनम रोटरी क्लब के सदस्य हैं, ने क्लब को इस परियोजना की रूपरेखा तैयार करने और उसे लागू करने में मदद की। वे कहते हैं, ''मैं पिछले दो दशकों से गांव के लोगों के साथ काम कर रहा हूँ, और इसी तरह मैंने उनका विश्वास जीता है। अन्यथा, ये आदिवासी आसानी से बाहरी लोगों पर भरोसा नहीं करते।''

रोटरी क्लब विशाखापत्तनम सुरभि ने महिलाओं को अपने कौशल का अभ्यास करने के लिए सिलाई मशीनें और प्रशिक्षण सामग्री जैसे कपड़ा और धागा उपलब्ध कराया है। एक प्रशिक्षक इस गांव तक पहुंचने के लिए पहाड़ी क्षेत्र में लगभग 25 किमी पैदल चलता है। एसआईएम और जेएसएस कार्यक्रमों के माध्यम से, वुग्गिना प्रशिक्षक के वेतन का ध्यान रखती है।

मंडल के *रोटरी वोकेशनल मिशन* कार्यक्रम के तहत 500 गांवों की लगभग दो लाख महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए चुना गया है, जिसमें रो ई मंडल 3020 के रोटरी क्लब इस पहल का समर्थन कर रहे हैं। अब तक मंडल के विभिन्न रोटरी क्लबों के माध्यम से लगभग 2,000 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। उन्होंने बताया, अप्रैल में शुरू होने वाले अगले चरण में 1,000 और महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

रोटरी से जुड़ने से पहले ही उन्होंने अपनी जेब से ₹2 लाख का निवेश कर पूर्वी गोदावरी मंडल में लगभग 2,000 महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई का प्रशिक्षण दिया था। वे बताते हैं, ''ये महिलाएँ अब काम करके सफलतापूर्वक आय अर्जित कर रही हैं। मेरा क्लब और अन्य रोटरी क्लब उन्हें अवसरों से जोड़ने में मदद करते हैं।''

ऐसी ही एक बदलाव की कहानी उनके लिए खास है। उन्हें लक्ष्मी नाम की एक युवा आदिवासी महिला याद है, जिसने कम आत्मविश्वास और बिना किसी स्वतंत्र आय के सिलाई की कक्षा में दाखिला

ये महिलाएँ अब सफलतापूर्वक काम के माध्यम से आय अर्जित कर रही हैं। रोटरी क्लब उन्हें अवसरों से जोड़ने में मदद करते हैं।

डीजी चक्रवर्ती रोटरी क्लब अनाकापल्ली द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी का दौरा करते हुए।

लिया था। प्रशिक्षण पूरा करने के कुछ ही महीनों के भीतर, उसने आस-पास के गांवों के लिए स्कूल की वर्दियाँ और साधारण कपड़े सिलना शुरू कर दिया। आज वह अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त कमाती है। जब मैं हाल ही में उस गांव गया, तो उसने मुझे गर्व से अपने घर में स्थापित छोटा सा सिलाई का कोना दिखाया। उस पल ने मेरी सारी मेहनत को सार्थक बना दिया।

अनाकापल्ले के रोटरी क्लब ने इसी तरह एक अन्य दूरस्थ गाँव गरुड़पल्ले में 1,000 महिलाओं के प्रशिक्षण का समर्थन किया है। क्लब ने ग्राम पंचायत को छह सिलाई मशीनें दान में दीं, ताकि प्रशिक्षु नियमित रूप से अभ्यास कर सकें। अब क्लब की योजना फ्रॉक, स्कर्ट और महिलाओं के नाइटवियर के निर्माण के लिए उन्नत, उच्च गति वाली सिलाई मशीनों से सुसज्जित एक उत्पादन इकाई स्थापित करने की है। क्लब ने गाँव की महिलाओं द्वारा सिले गए तैयार उत्पादों के विपणन और आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति की जिम्मेदारी भी ली है।

सिलाई के अलावा, ग्रामीण महिलाओं को सफाई सामग्री, जैम, अगरबत्ती और मोमबत्ती बनाने जैसे अन्य व्यवसायों में भी प्रशिक्षित किया गया है। मंडल गवर्नर कल्याण चक्रवर्ती ने अनाकापल्ले के रोटरी स्किल सेंटर में क्लब द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी का दौरा किया, जहां ग्रामीण महिलाओं ने अपने द्वारा अर्जित कौशल का प्रदर्शन किया।

वुग्गिना यह भी याद करते हैं कि महामारी के दौरान इस पहल की उपयोगिता कैसे साबित हुई। वे कहते हैं, ''2020 में कोविड की घोषणा के दो दिनों के भीतर, इस परियोजना के तहत प्रशिक्षित 200 ग्रामीण महिलाओं ने दो लाख कपड़े के मास्क सिलकर मंडल भर के रोटरी क्लबों के माध्यम से वितरित किए।''

वे अपने आधिकारिक पद का उपयोग कर इन महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों के विपणन के लिए एक ऑनलाइन मंच तैयार करने की उम्मीद कर रहे हैं। वे नई दिल्ली के विज्ञान भवन में उनके कार्यों को मान्यता दिलाने की संभावना भी तलाश रहे हैं। उन्होंने बताया कि केंद्रीय कौशल विकास मंत्रालय ने इस रोटरी परियोजना को एक आदर्श कार्यक्रम के रूप में मान्यता दी है, जो समावेशी विकास और अंतिम छोर तक सशक्तिकरण के राष्ट्रव्यापी दृष्टिकोण के अनुरूप है।

वे मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''इन महिलाओं को धीरे-धीरे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते देखना बेहद संतोषजनक है। जब कोई महिला आत्मनिर्भर हो जाती है, तो इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है - बच्चों को बेहतर शिक्षा मिलती है, घरों में पौष्टिक भोजन की उपलब्धता बढ़ती है और पूरा परिवार एक सुरक्षित भविष्य की ओर अग्रसर होता है।''

उनका स्थानीय क्लब, रोटरी क्लब विशाखापत्तनम, आदिवासी प्रशिक्षुओं के लिए बुनियादी साक्षरता पर भी ध्यान केंद्रित करता है। वे बताते हैं, ''जब भी किसी गाँव में महिलाओं के लिए कोई व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू किया जाता है, तो हमारा क्लब पहले दो सप्ताह तक बुनियादी साक्षरता कक्षाएं आयोजित करता है। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि महिलाएँ और बच्चे अंग्रेजी और तेलुगु के अक्षर, संख्याएँ और बुनियादी अंकगणित सीखें। इससे उन्हें धोखाधड़ी से बचने में मदद मिलती है।'' प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, भारत सरकार के आजीविका प्रकोष्ठ के माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार के अवसरों की ओर मार्गदर्शन दिया जाता है।

रोटरी क्लब इन गांवों में समय-समय पर चिकित्सा शिविरों भी आयोजित करते हैं, जिसके बाद निरंतर स्वास्थ्य सेवाओं का समर्थन भी प्रदान किया जाता है। ■

रोटरी क्लब विज़ाग सुरभि की अध्यक्ष सत्यश्री लक्ष्मीदेवी एक महिला को सिलाई मशीन भेंट करती हुईं। मंडल व्यावसायिक सेवा अध्यक्ष श्रीनिवास राव वुग्गिना उनके बाईं ओर हैं।

असंभव को संभव बनाने के लिए समूह में काम करें: कल्याण बेनर्जी

रशीदा भगत

जब हम छोटे थे तो वे एक बहुत व्यस्त व्यक्ति थे। रोटरी और यूपीएल में काम करते थे। इसलिए वे एक सामान्य पिता की तुलना में हमारे साथ कम समय बिता पाते थे। लेकिन जब भी समय देते थे, उसे खास बना देते थे। यूपीएल में एक घंटे का लंच ब्रेक होता था। उस समय वे घर आ जाते थे। खाना खाने से पहले वे हमारे घर के परिसर में 15-20 मिनट हमारे साथ क्रिकेट खेलते थे। और वह बहुत मज़ेदार होता था। उन्हें हंसी-मजाक पसंद है और वे अपने भाषणों में भी उसे शामिल करते हैं। उनका अपना हास्यबोध थोड़ा शरारती और चंचल है, जो कभी-कभी सामने आ जाता है। एक पिता और एक इंसान के रूप में, वे बहुत मजबूत और जिंदादिल हैं। हमारा परिवार उनके, और यूपीएल में उनके काम के इर्द-गिर्द ही घूमता है, और बाद में रोटरी में उनके काम के आसपास भी। वे हमेशा भरोसेमंद रहे हैं। आज भी मुझे लगता है कि हम बच्चे उन पर जितना निर्भर हैं, वे हम पर उतने नहीं है।

यह अंश हाल ही में रोटरी क्लब बॉम्बे की एक बैठक में रो ई मंडल 3141 के पीडीजी संदीप अग्रवाला द्वारा पढ़कर सुनाया गया, जहाँ पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी की जीवनी *Tirelessly Yours* का विमोचन किया गया। वह ये पंक्तियाँ बेनर्जी की बेटी रमा चटर्जी के शब्दों से उद्धृत कर रहे थे।

यह पुस्तक गणेश वांचेश्वरन द्वारा लिखी गई है और इसमें यूनाइटेड फॉस्फोरस तथा रोटरी दोनों में

बेनर्जी के लंबे योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

बेनर्जी के साथ हुए एक प्रश्नोत्तरी सत्र में, अग्रवाल ने कहा कि औद्योगिक शहर वापी से लेकर रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष बनने तक, बेनर्जी की यात्रा असाधारण रही है और यह सेवा के लिए समर्पित जीवन का एक उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसे इस पुस्तक में सँजोया गया है।

बेनर्जी ने शुरुआत में स्पष्ट किया कि यह पुस्तक लिखने का विचार उनका नहीं बल्कि उनके क्लब के सदस्यों का था। लेखक ने इसे लिखने के लिए उनसे कई बार बातचीत की, साथ ही उनके दोनों बच्चों, मित्रों, रोटेरियनों और व्यावसायिक सहयोगियों से भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि पुस्तक और उनके जीवन की मुख्य सीख यह है कि यदि आप एक समूह के साथ मिलकर काम करते हैं, तो आप असंभव को भी संभव बना सकते हैं और जो लक्ष्य तय करते हैं उसे हासिल कर सकते हैं।

भारत से सदस्यों की वृद्धि वास्तव में अद्भुत है, और हमने इसे वर्ष दर वर्ष बनाए रखा है।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

उनके जीवन और कार्य के दो मूल मंत्र दो पूर्व रो ई अध्यक्षों की थीम में सबसे अच्छी तरह दिखाई देते है... कल्पना कीजिए (रोटरी के नेतृत्वकर्ता बहुत सी कल्पनाएं करते है) और कल्पना करने के बाद अपने सपनों को साकार कीजिए। *Make dreams real* (सपने साकार कीजिए) डोंग कुर्न ली की थीम थी, जबकि *Imagine Rotary* जेनिफर जोन्स की थीम थी।

भारत में रोटरी की प्रगति पर, पूर्व रो ई अध्यक्ष ने कहा, भारत का विकास अकल्पनीय रूप से हुआ है। भले ही अमेरिका में सदस्यों की संख्या सबसे अधिक हो और वे टीआरएफ को हर साल अधिक पैसा देते हो, लेकिन हम दोनों ही मामलों में दूसरे नंबर पर हैं, और भारत में सदस्यों की वृद्धि एकदम अद्भुत है। हमने इसे साल-दर-साल बनाए रखा है। कभी-कभी मुझे लगता है कि हमें इसे थोड़ा नियंत्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि कभी-कभी यह हाथ से बाहर निकल जाता है... लेकिन मैं उस विषय में नहीं जाना चाहता।

टीआरएफ न्यासी प्रमुख के रूप में अपने वर्ष को याद करते हुए, बेनर्जी ने कहा कि उस वर्ष टीआरएफ का दान पिछले वर्ष के 230 मिलियन डॉलर से बढ़कर पहली बार 300 मिलियन डॉलर तक पहुँच गया था। यह संख्या अगले कुछ वर्षों में 500 मिलियन डॉलर तक पहुँच सकती है।

पोलियो की विरासत और आगामी योजनाओं पर, बेनर्जी ने कहा कि जब तक पूर्ण उन्मूलन नहीं हो जाता, रोटेरियनों को दुनिया के बच्चों का नियमित रूप से बिना किसी चूक के टीकाकरण जारी रखना होगा जैसा कि हम करते आ रहे हैं। क्योंकि यदि पाकिस्तान और अफगानिस्तान में अभी भी पोलियो है, तो यह किसी भी समय वापस आ सकता है।

रोटरी के अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य निश्चित रूप से साक्षरता, जल प्रबंधन और स्वास्थ्य देखभाल हैं,

***बाएँ से:** रोटरी क्लब वापी के सदस्य कृषित शाह, प्रफुल दवानी और राम जनम सिंह; पीडीजी संदीप अग्रवाला, रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष बिमल मेहता, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश और डीजी मनीष मोटवानी पुस्तक विमोचन समारोह में।*

रोटरी क्लब बॉम्बे की प्रशंसा

जब रो ई मंडल 3141 के पीडीजी संदीप अग्रवाला ने पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी से पूछा कि उनके क्लब जैसे व्यक्तिगत क्लब (रोटरी क्लब बॉम्बे) रोटरी के वैश्विक उद्देश्य और मिशन को आगे बढ़ाने में क्या भूमिका निभा सकते हैं, तो वरिष्ठ नेता मुस्कुराए और बोले: इस सवाल का जवाब देना बहुत आसान है। मैंने दुनिया भर में कहा है कि दुनिया का सबसे अच्छा क्लब रोटरी क्लब बॉम्बे है, और मैं यह बात कहीं भी कह सकता हूँ! आपके पास कुछ सबसे उत्कृष्ट और समर्पित सदस्य हैं ऐसे सदस्य जो अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। वे हर बैठक में मौजूद रहते हैं।

आपके पास सबसे बड़ी सदस्य संख्या नहीं है, लेकिन आप हर साल रोटरी संस्थान को जो सहयोग देते हैं, वह दुनिया में सबसे अधिक है। आप जो परियोजनाएँ करते हैं, आपने जो घर बनाए हैं... छोटे घर, आश्रय स्थल, वे सभी अद्भुत हैं। मुझे पता है कि आप छोटी और बड़ी दोनों तरह के परियोजनाएं कर रहे हैं। छात्रों, युवाओं और अगली पीढ़ी के साथ आपका जो काम है, वह वास्तव में शानदार है।

मैंने यहाँ के युवाओं का उत्साह देखा है; इसलिए दूसरे क्लब भी अपने संसाधनों एवं परिस्थितियों के अनुसार वही काम कर सकते हैं। उन्हें बस केवल आपकी प्रतिबद्धता, आपके समर्पण और आपकी सक्रिय भागीदारी का अनुसरण करना है। रोटरी को बस इसी की आवश्यकता है।

संयोग से, रोटरी क्लब बॉम्बे भारत के सबसे पुराने क्लबों में से एक है, जिसे 1929 में स्थापित किया गया था और यह अगले कुछ वर्षों में अपनी शताब्दी मनाएगा। ■

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, पीडीजी संदीप अग्रवाला के साथ संवाद करते हुए।

जहाँ पहले से ही बहुत काम हो रहा है, और रोटरी अब दुनिया भर में शांति पहल चलाने की दिशा में कार्यरत है।

जब अग्रवाला ने उनसे रो ई अध्यक्ष के रूप में उनके सबसे कठिन क्षणों के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि इसमें पाकिस्तान और अफगानिस्तान जाना शामिल था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चों को पोलियो की बूंदें दी जाएं, क्योंकि कई क्षेत्रों में इसका विरोध हो रहा था। एक बार पाकिस्तान में राष्ट्रपति से मिलने के बाद, उन्होंने कहा कि जाकर नेता प्रतिपक्ष से मिलें। लेकिन वह उस वक्त उपलब्ध नहीं थे और रात 2 बजे आने वाले थे। तो हमने उनका इंतज़ार किया; रात 2 बजे उनसे मिले और उनसे कहा कि आपको अपने सभी बच्चों का टीकाकरण करना होगा। उन्होंने कहा: हमें कोई समस्या नहीं है। लेकिन अमेरिका जो हम पर बम गिरा रहा है, उसका आप क्या करेंगे? पहले हमें थोड़ी शांति क्यों नहीं देते? उसके बाद हम आपकी बात सुनेंगे!

लेकिन रो ई अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो सबसे खतरनाक काम किया, वह था राष्ट्रपति

बाएँ से: पीडीजी अग्रवाला, गणेश वांजीस्वरन (पीआरआईपी बेनर्जी की जीवनी Tirelessly Yours के लेखक), क्लब अध्यक्ष मेहता, पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वहानवती, पीआरआईपी बेनर्जी, पीआरआईडी अशोक महाजन, ट्रस्टी-इलेक्ट वेंकटेश और डीजी मोटवानी।

हामिद करजई से मिलने के लिए अफगानिस्तान जाना। उन्हें यह यात्रा ना करने की सलाह दी गई थी और इवेन्स्टन में रो ई स्टाफ द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया था कि उन्हें अकेले जाना होगा और रोटरी से कोई भी उनके साथ नहीं जाएगा। मैंने कहा, ठीक है, मैं अकेला जाऊँगा, लेकिन मैं उनसे मिलूँगा कैसे? तब मुझे बताया गया कि अफगानिस्तान में तैनात अमेरिकी सेना मुझे राष्ट्रपति करजई से मिलने में मदद करेगी। उन्होंने मेरी पत्नी बिनोता को यह कहकर वापस बॉम्बे भेज दिया कि हमें नहीं पता कि अफगानिस्तान में क्या होगा! बेशक, उसे ठीक से नहीं पता था कि उन्हें वापस क्यों भेजा गया है! खैर, मैं पाकिस्तान के रास्ते अफगानिस्तान जाने में सफल रहा। और मैं आपको बता दूँ, वहाँ का माहौल काफी डरावना था।

बेनर्जी ने याद करते हुए बताया कि वे एक गेस्ट हाउस में ठहरे थे, जो किसी सामान्य होटल जैसा बिल्कुल नहीं था। वह बस एक कमरा था। उन्होंने मुझसे कहा कि दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद रखो, और अगर कोई दरवाज़ा खटखटाए तब भी मत खोलना, और बाहर बिल्कुल मत निकलना। तीसरे दिन वे मुझे

आपके पास सबसे बड़ी सदस्य संख्या नहीं है, लेकिन द रोटरी फाउंडेशन के लिए आपका सहयोग दुनिया में वर्ष दर वर्ष सबसे अधिक है।

रोटरी क्लब बॉम्बे के बारे में पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

सेना के मुख्यालय ले गए, जहाँ एक ब्रिगेडियर ने मुझे जीप में बैठाया और हम काबुल शहर से होकर गुज़रे। सभी दुकानें बंद थीं और हर इमारत की छत पर बंदूकें ताने हुए सैनिक खड़े थे। वह एक युद्ध-ग्रस्त शहर था। हमें तीन सुरक्षा द्वारों से होकर गुजरना पड़ा, और हर जगह कड़ी सुरक्षा जाँच हुई। अंततः, हम करज़ई के कमरे तक पहुँचे। वे अंदर आए और बोले, आपका स्वागत है, यहाँ आने के लिए धन्यवाद। और बस इतना ही हुआ। बेनर्जी ने हल्के व्यंग्य के साथ कहा कि कई वादे किए गए थे, लेकिन वे अब तक पूरे नहीं हुए।

युवा पीढ़ी के रोटेरियनों के बारे में बेनर्जी ने कहा कि वरिष्ठ रोटेरियनों को यह समझना चाहिए कि युवा सदस्य थोड़ा अलग तरीके से काम करेंगे, और उन्हें ऐसा करने के लिए पर्याप्त अवसर और स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। लेकिन युवा रोटेरियनों को भी यह समझना चाहिए कि क्लब में आने के बाद, वे अपने दम पर बिल्कुल नया और अलग काम शुरू नहीं कर सकते। उन्हें उन कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए जो क्लब पहले से करता आ रहा है और जिन परंपराओं की स्थापना हो चुकी है, उनका पालन करना चाहिए। कृपया यह न सोचें कि एक नए क्लब अध्यक्ष के रूप में, आपको अपना कोई नया प्रोजेक्ट शुरू करना है।

क्योंकि आपके जाने के बाद, कोई याद नहीं रखेगा कि आपने क्या किया। ऐसा कुछ करें जो आपके क्लब के काम को जारी रखे और आपके जाने के बाद भी लंबे समय तक चलता रहे।

चित्र: रशीदा भगत

बाएं से: दिशा सचिव अखिल मिश्रा, कार्यक्रम अध्यक्ष पी गोपालकृष्णन और उनकी पत्नी नीलावती, सुमति और रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, PRID's सी भास्कर और पी टी प्रभाकर, RIDE's गुरजीत सिंह सेखों और बसु देव गोलयान, PDG आनंदथा ज्योति और TRF ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश।

प्रभावशाली नेतृत्व के लिए दिशा निर्धारण

जयश्री

रोटरी की सुंदरता उसके नेतृत्व के परिवर्तन में निहित है। 120 साल बाद भी, हम प्रासंगिक हैं, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने रोटरी ज़ोन 5 और 6 के नवनिर्वाचित मंडल नेतृत्वकर्ताओं के लिए कोयंबटूर में आयोजित तीन दिवसीय लक्ष्य-निर्धारण सेमिनार मदिशाफ का उद्घाटन करते हुए कहा। एक 16 वर्षीय रोटरेक्टर के रूप में अपनी यात्रा को याद करते हुए, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि रोटरी की ताकत व्यक्तियों को सशक्त बनाने में है। उन्होंने कहा, जिम्मेदारी लेना ही खुद को ऊपर उठाने का एकमात्र तरीका है... आप अपने क्लब, अपने मंडल और अपने समुदाय को ऊपर उठा रहे हैं।

आरएजी (रेड-एम्बर-ग्रीन) विश्लेषण के माध्यम से डेटा-आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए, जहां 25 से कम सदस्यों वाले क्लबों को रेड (लाल) में, 25-50 सदस्यों को एम्बर (नारंगी) में और 50 से अधिक सदस्यों को ग्रीन (हरे) रंग में चिह्नित किया गया था, उन्होंने बताया, हम एक भ्रम में जी रहे हैं... हमें लगता है कि हम बढ़ रहे हैं। लेकिन तथ्यात्मक आंकड़ों के अनुसार, भारत में, 42 प्रतिशत रोटरी क्लब रेड श्रेणी में हैं; 35 प्रतिशत एम्बर श्रेणी में, और 33 प्रतिशत ग्रीन श्रेणी में हैं।

उन्होंने मंडल नेतृत्वकर्ताओं से आग्रह किया कि वे क्लबों को रेड से एम्बर और एम्बर से ग्रीन में लाने के लिए काम करें। उन्होंने एक सरल 1:2:3 फॉर्मूला भी प्रस्तावित किया - प्रत्येक रोटेरियन को 1 रोटेरियन, 2 रोटरेक्टर और 3 इंट्रक्टर जोड़ने

चाहिए; और प्रत्येक रोटरी क्लब को कम से कम दो रोटरेक्ट और तीन इंटरेक्ट क्लब शुरू करने का लक्ष्य रखना चाहिए। यह बताते हुए कि कई क्लबों ने एक भी रोटरेक्ट या इंटरेक्ट क्लब शुरू नहीं किया है, उन्होंने कहा, यदि हम अगले 50 से अधिक वर्षों तक रोटरी को बढ़ते हुए देखना चाहते हैं, तो हमें युवाओं को अपने संगठन में शामिल करना होगा।

मुरुगानंदम ने प्रतिनिधियों से रोटेरियनों को टीआरएफ में उदारतापूर्वक योगदान करने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, अधिक परियोजनाओं को निष्पादित करें, लेकिन मजबूत प्रबंधन सुनिश्चित करें, और सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करने तथा कॉरपोरेट्स के साथ मजबूत संबंध बनाने का सुझाव दिया। उन्होंने अस्वस्थ तुलनाओं से बचने की चेतावनी भी दी। अपनी तुलना अन्य मंडलों से न करें... आज के मंडल की तुलना बीते कल और आने वाले कल से करें।

रो ई निदेशक के पी नागेश ने नवनिर्वाचित नेतृत्वकर्ताओं को क्लबों के बेहतर प्रबंधन के लिए मंडलों के विभाजन पर विचार करने का सुझाव दिया। उन्होंने उनसे महिला सदस्यता बढ़ाने और 15 से कम सदस्यों वाले क्लबों को बंद करने का आग्रह किया। ऐसे क्लब रोटरी की सार्वजनिक छवि के लिए अच्छे नहीं हैं। किसी क्लब को जीवंत और उत्पादक होने के लिए, उसमें कम से कम 40 सदस्य होना चाहिए, उन्होंने कहा। रो ई ने 2030 तक, जब रोटरी 125 वर्ष पूरे करेगा, वैश्विक सदस्यता लक्ष्य 1.25 मिलियन निर्धारित किया है और इसके लिए हम में से प्रत्येक का योगदान महत्वपूर्ण है।

टीआरएफ के नवनिर्वाचित न्यासी ए एस वेंकटेश ने नेतृत्व को फिर से परिभाषित करते हुए कहा, ''रोटरी में, उपाधियों का कोई मतलब नहीं होता, लेकिन वे आपको बदलाव लाने, कुछ सार्थक करने का अवसर देती हैं।'' 1961 में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी के प्रसिद्ध मून मिशन बयान का हवाला देते हुए उन्होंने कहा: जेएफके ने यह नहीं कहा कि हम आशा करते हैं... उन्होंने कहा था कि हम दशक के अंत से पहले चंद्रमा पर उतरके दिखाएंगे। उन्होंने इस स्पष्टता को रोटरी की सबसे बड़ी सफलता से जोड़ा। रोटरी ने यह नहीं कहा कि हम पोलियो को खत्म करने की *कोशिश* करेंगे... हमने कहा कि हम खत्म *करेंगे*/ यदि आपका लक्ष्य स्पष्ट है और समय-सीमा तय है, तो बाकी सब अपने आप व्यवस्थित हो जाएगा।

रो ई निदेशक के रूप में युगांडा के एक क्लब के अपने दौरे को याद करते हुए, उन्होंने बताया कि वह क्लब, लगभग 20 सदस्यों के साथ, अपने आकार पर नहीं बल्कि अपनी साझा जिम्मेदारी पर गर्व करता था। कुछ छात्रों को प्रायोजित करने जैसे मामूली प्रयासों के वर्षों के बाद, वे अपने समुदाय के 10 स्कूलों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए जिम्मेदारी की साझा भावना के साथ आगे आए। जिस चीज ने बदलाव किया वह संसाधन नहीं बल्कि सामूहिक स्वामित्व था: प्रत्येक सदस्य एक लक्ष्य पर सहमत हुआ, एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया, और एक स्पष्ट समयरेखा के लिए प्रतिबद्ध हुआ।

ध्यान के महत्व को बताते हुए, उन्होंने कहा, अपनी नजर केवल एक चिढ़िया पर रखे वरना आप देखते रह जाएंगे पर हाथ कुछ नहीं आएगा।

'दिशा' को नेतृत्व के लिए एक तैयारी के मंच के रूप में वर्णित करते हुए, पीआरआईडी सी भास्कर ने इस बात पर जोर दिया कि रोटरी नेतृत्व व्यक्तियों के बारे में नहीं है; यह एक साथ काम करने वाली टीमों के बारे में है। उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात याद दिलाई: केवल लक्ष्य निर्धारित करना पर्याप्त नहीं है... महत्वपूर्ण यह है कि हम कितनी निरंतरता से उनकी समीक्षा और निगरानी करते हैं।

मुंबई के एक सामाजिक उद्यमी हरखचंद सावला की कहानी के माध्यम से, जो प्रतिदिन 1,000 कैंसर मरीजों को भोजन कराते हैं, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने नेतृत्वकर्ताओं को चुनौती दी: यदि वे सीमित संसाधनों के साथ इतना कर सकते हैं, तो कल्पना कीजिए कि हम रोटेरियन क्या कर सकते हैं? आइए असंभव लक्ष्यों को निर्धारित करें और उन्हें संभव बनाएं।

आरआईडीई बासु देव गोल्यन ने स्थिरता और सदस्यता प्रतिधारण पर जोर दिया। हमें यह नहीं गिनना चाहिए कि हम कितनी परियोजनाएँ करते है; हमें यह गिनना चाहिए कि हम कितने जीवन बदलते है। प्रतिधारण के बिना सदस्यता वृद्धि अधूरी है, उन्होंने कहा और सामूहिक महत्वाकांक्षा का आह्वान किया। आइए बड़ा सोचें, साथ मिलकर काम करें और अपने प्रभाव को बढ़ाएँ।

आरआईडीई गुरजीत सिंह सेखों ने विस्तार के छह आयामों की रूपरेखा प्रस्तुत की जो रोटरी का भविष्य तय करेंगे - सदस्यता, जनसांख्यिकी, भूगोल, भागीदारी, डिजिटल उपस्थिति और नेतृत्व पाइपलाइन।

''सदस्यता केवल एक संख्या नहीं है; यह रोटरी की सेवा करने की क्षमता है। उन्होंने ठहराव के प्रति चेतावनी दी: दशकों से, रोटरी क्लब एक जैसे दिखते रहे हैं, लेकिन दुनिया बदल गई है। यदि रोटरी आधुनिक समाज को प्रतिबिंबित नहीं करें, तो हम अप्रासंगिक हो जाएंगे।''

उन्होंने मंडल नेतृत्वकर्ताओं से ऐसे क्षेत्रों में रोटरी क्लब स्थापित करने का आग्रह किया जहाँ अभी प्रतिनिधित्व नहीं है। अब भी हजारों शहर और कस्बे ऐसे हैं जहाँ रोटरी क्लब नहीं हैं। रोटरी को

लोगों तक वहीं पहुँचना होगा जहाँ वे हैं, और हमें नए क्लब मॉडल अपनाने होंगे। रोटरी को अनुकूलित होने और विकसित होने के लिए बनाया गया था। कई बार हम अपनी परंपराओं के कैदी बन जाते हैं।

दृश्यता की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने कहा, आज की दुनिया में, दृश्यता का अर्थ है प्रभाव। यदि रोटरी का काम अदृश्य है, तो हमारा प्रभाव सीमित रहेगा। वह समय बीत चुका है जब हम कहते थे कि हमारा काम हमारी बात कहेगा। वह समय बीत चुका है। हर क्लब को प्रभावशाली कहानियां सुनाना सीखना होगा। सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग करना होगा।

रोटरी के नेतृत्व विस्तार पर उन्होंने कहा, सबसे सफल क्लब वे हैं जो युवा नेतृत्व को सशक्त बनाते हैं, नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं, नए विचारों को पनपने देते हैं, और भविष्य के अध्यक्षों एवं मंडल नेतृत्वकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हैं। उन्होंने कहा, रोटरी का भविष्य आज हमारे मौजूदा सदस्यों द्वारा नहीं, बल्कि उन लोगों द्वारा तय किया जाएगा जिन्हें हम कल आमंत्रित करेंगे।

बाएं से: दिशा चेयरमैन गोपालकृष्णन, रो ई निदेशक गण के पी नागेश और मुरुगानंदम।

प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए, ङ्गदिशाफ के अध्यक्ष पीडीजी पी गोपालकृष्णन ने कहा, ''दिशा का उद्देश्य भूमिकाओं को समझना, स्थिति का विश्लेषण करना और सार्थक तथा महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करना है। महान उपलब्धियाँ की शुरुआत हमेशा महान लक्ष्यों से होती हैं।''■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मजबूत दांतों के लिए फ्लोराइड

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3011 के रोटरी क्लब बच्चों में दांतों की सड़न को रोकने के लिए विशेष फ्लोराइड लगाने के शिविरों का आयोजन कर रहे हैं। डीजी रवि गुगनानी ने कहा, ''बहुत से लोग मौखिक स्वास्थ्य में फ्लोराइड की महत्वपूर्ण भूमिका से अनजान हैं। यह दांतों को मजबूत बनाता है, कैविटी से बचाता है और शुरुआती दांतों की सड़न को ठीक करने में भी मदद करता है।'' उन्होंने बताया कि कैसे जागरूकता और फ्लोराइड लगाने की ये पहल पूरे मंडल में बच्चों की मुस्कान को सुरक्षित रखने का एक केंद्रित और प्रभावशाली प्रयास बन गई है।

दिल्ली में एक डेंटल कैंप में एक बच्चे की जांच करते हुए।

हाल ही में दिल्ली हाइट्स और दिल्ली सफदरजंग रोटरी क्लबों द्वारा नजफगढ़ के सोशल विजन स्पेशल स्कूल में आयोजित एक शिविर में 65 विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को इस कार्यक्रम का लाभ मिला। दांतों की ऊपरी परत पर फ्लोराइड लगाकर इनेमल को मजबूत किया गया और कैविटी का खतरा कम किया गया। शिविर में मौखिक जांच, देखभाल करने वालों के लिए परामर्श और ब्रश करने की सही तकनीक का प्रदर्शन भी शामिल था।

मंडल डेंटल हाइजीन और जागरूकता की अध्यक्ष तथा दंत शल्य चिकित्सक डॉ प्रिया ओबेरॉय ने कहा ''जो बच्चे ठीक से ब्रश नहीं कर पाते, उनके लिए फ्लोराइड एक सुरक्षा कवच का काम करता है, जिससे भविष्य में जटिल दंत उपचारों की आवश्यकता काफी हद तक कम हो जाती है।'' ■

उत्तर केरल में छात्रों के लिए मोबाइल नेत्र चिकित्सा क्लिनिक

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पय्यानूर, रो ई मंडल 3204 ने मविजन ऑन व्हील्सफ नामक एक मोबाइल नेत्र क्लिनिक का शुभारंभ किया है, जिसे रोटरी क्लब मेट्रो कुआलालंपुर, रो ई मंडल 3300 द्वारा एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से समर्थन प्राप्त है, ताकि उत्तरी केरल के कासरगोड और कन्नूर मंडलों में छात्रों और वंचित समुदायों को नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान की जा सकें।

₹38 लाख की कीमत वाली पूरी तरह से सुसज्जित वैन को पय्यानूर आई फाउंडेशन को सौंप दिया गया और पेरुम्बा के सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय में छात्रों के लिए पहला स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किया गया।

इस पहल के तहत कासरगोड के 778 और कन्नूर के 1,608 स्कूलों को शामिल किया जाएगा, जिससे लगभग 52 लाख छात्रों को लाभ मिलेगा। मोबाइल क्लिनिक में नेत्र रोग विशेषज्ञों, ऑप्टोमेट्रिस्टों और सहायक कर्मचारियों की एक टीम मौजूद है, और यह अत्याधुनिक निदान उपकरणों तथा चश्मा उपलब्ध कराने वाली एक डिस्पेंसरी से सुसज्जित है। स्कूलों में जांच के अलावा, इस वैन का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए निःशुल्क नेत्र शिविर आयोजित करने के लिए भी किया जाएगा।

इस परियोजना का क्रियान्वयन क्लब के पूर्व अध्यक्ष पी सजित के नेतृत्व में किया गया, जिसमें क्लब सदस्य सी आर नम्बियार ने कार्यान्वयन टीम का नेतृत्व किया। नाम्बियार ने कहा, यह पहल स्कूली बच्चों में दृष्टि संबंधी समस्याओं के निवारण और ग्रामीण केरल में नेत्र देखभाल सेवाओं की पहुंच बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

डीजी संतोष श्रीधर और पय्यानूर एमएलए टीआई मधुसूदनन ने नगर निगम अधिकारियों, रोटरी नेताओं और स्वास्थ्य सेवा प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वैन की चाबियां पय्यानूर आई फाउंडेशन के निदेशक डॉ के सुकुमारन को सौंपी।

अगस्त 2025 में शुरुआत के बाद से अब तक 63 से अधिक स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किए जा चुके हैं, जिससे लगभग 15,000 छात्रों को लाभ मिला है। रोटरी क्लब पय्यानूर और पय्यानूर आई फाउंडेशन के सदस्यों से गठित एक संयुक्त कार्यान्वयन समिति के समन्वय से प्रति माह लगभग 15 से 18 शिविर आयोजित किए जाएंगे। ■

स्कूल में खड़ी 'विजन ऑन व्हील्स' मोबाइल क्लिनिक में छात्र आंखों की जांच करवाते हुए।

वेंकी के साथ सीधी बातचीत

रशीदा भगत

टीआरएफ को सामान्य परिस्थितियों में निर्णय लेने और आगे बढ़ने में समय लग सकता है, लेकिन संकट, आफतकाल या तात्कालिक जरूरतों के समय वह तेजी से कार्रवाई करता है, आने वाले टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश ने रो ई मंडल 3141 के पीडीजी संदीप अग्रवाला के साथ रोटरी क्लब बॉम्बे द्वारा आयोजित एक बैठक में हुई खुली बातचीत के दौरान कहा। अंश:

संदीप अग्रवाला: वैश्विक अनुदान की संरचना के तहत रोटरी संस्थान अपनी फंडिंग प्राथमिकताओं को जलवायु परिवर्तन या महामारी के बाद की रिकवरी जैसी उभरती वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए कैसे अनुकूलित कर रहा है, जबकि ये चुनौतियाँ वर्तमान के सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में पूरी तरह फिट नहीं बैठतीं है?

ए एस वेंकटेश: अनुकूलन क्षमता हमारे एक्शन प्लान के प्रमुख ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक है; हम उभरती जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार खुद को ढालने में सक्षम हैं। हालांकि, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि रोटरी संस्थान एक हाथी की तरह है जिसे मुड़ने में समय लगता है। यह कोई चीता नहीं है जो पालक झपकते ही मुड़ जाए। इसे चलने में समय लगता है क्योंकि हम 12 लाख सदस्यों वाला एक बड़ा संस्थान हैं जो 200 से अधिक देशों में मौजूद है। इसलिए, कुछ बदलाव करने में समय लगता है।

लेकिन संकट, आपात स्थिति या तात्कालिक जरूरत के समय हम कभी पीछे नहीं रहे। उदाहरण के लिए, कोविड के बाद हमने तुरंत कोविड ग्रांट वितरित किए। लगभग 175 मंडलों को तुरंत कोविड ग्रांट मिले। इसलिए हम तेजी से अनुकूलित हुए। इसी तरह, हमने यूक्रेन के लिए मानवीय आधार पर, न कि राजनीतिक आधार पर, एक फंड बनाया। इसलिए हमने पहले भी अपनी अनुकूलन क्षमता साबित की है और भविष्य में भी ऐसा करते रहेंगे।

जहाँ तक ध्यानाकर्षण क्षेत्रों का सवाल है, सच कहूँ तो, आज तक मुझे भवन निर्माण के अलावा ऐसी कोई परियोजना नहीं मिली जिसे हम किसी ध्यानाकर्षण क्षेत्र में फिट न कर सके हों, क्योंकि ये क्षेत्र बहुत व्यापक हैं। ये क्षेत्र इतने व्यापक हैं कि इसमें पर्यावरण भी शामिल है, जिसमें जलवायु परिवर्तन भी आता है।

यदि आपको भवन निर्माण के अलावा कोई ऐसी परियोजना मिलती है जो किसी भी ध्यानाकर्षण क्षेत्र में फिट नहीं बैठती, तो मुझे इसे न्यासियों के पास ले जाने और जरूरत पड़ने पर एक नया ध्यानाकर्षण क्षेत्र बनाने में खुशी होगी। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित

बाएँ से: पीडीजी संदीप अग्रवाला, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश, डीजी मनीष मोटवानी और रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष बिमल मेहता।

करना है कि मानवीय जरूरतें पूरी हों; इसे करने के लिए जो भी आवश्यक होगा, हम करेंगे।

अग्रवाला: अनुदानों के प्रभाव को नए और युवा सदस्यों, जो शायद डिजिटल रूप से अधिक सक्रिय हैं, के लिए अधिक दृश्यमान एवं सुलभ बनाने के लिए संस्थान क्या कर रहा है, जिससे वे स्थानीय फंडरेजिंग को सीधे वैश्विक परिणामों से जोड़ सकें?

ए एस वी: किसी भी रोटेरियन की रोटरी या टीआरएफ से जुड़ाव की शुरुआत फंडरेजिंग से नहीं होनी चाहिए। जुड़ाव की शुरुआत किसी परियोजना का हिस्सा बनने से होनी चाहिए, जरूरी नहीं कि फंडरेजिंग से। जब आप किसी परियोजना से जुड़ते हैं और देखते है कि वह समुदाय एवं लाभार्थियों के लिए क्या करता है, तो फंडरेजिंग अपने आप आ जाती है। इसलिए शुरुआत किसी गतिविधि में सहभागिता से होनी चाहिए।

मैं अपने आईआईएम के दिनों की एक कहानी बताता हूँ, जो बेटी क्रॉकर के केक मिक्स से जुड़ी है। 1950 के दशक में, जब उन्होंने यह केक मिक्स लॉन्च किया, तो यह बहुत अच्छा और स्वादिष्ट उत्पाद था और हर सुपरमार्केट में रखा गया था, लेकिन फिर भी बिक्री नहीं हो रही थी। फिर किसी को एक शानदार विचार आया। उन्होंने उस मिक्स से अंडा हटा दिया और निर्देशों में लिखा: एक अंडा फोड़कर इस मिक्स में डालें और फिर बेक करें। इसके बाद बिक्री तेजी से बढ़ गई। फर्क सिर्फ इतना था कि अब वह मेरा केक बन गया था। उससे पहले वह बेटी क्रॉकर का केक था। यही फर्क था।

यहीं बात रोटरी पर भी लागू होती है। यह तभी मेरा संगठन बनेगा जब मैं इसमें शामिल होऊँगा, सिर्फ पैसा देकर नहीं, बल्कि किसी परियोजना में प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से। इसलिए युवाओं को किसी परियोजना में भाग लेने का मौका दें। उन्हें ''मेरी परियोजना'' के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से बदलाव लाने की खुशी का अनुभव करने दें। फंडरेजिंग बाद में आएगी।

अग्रवाला: टीआरएफ संभावित नए सदस्यों और आम जनता के सामने अपने मूल्य को बेहतर तरीके से व्यक्त करने में रोटेरियनों की मदद कैसे कर सकता है? और पोलियो के अलावा

न्यासियों की पसंदीदा सफलता की कहानियाँ कौन-सी हैं?

ए एस वी: वैश्विक अनुदान से पहले मिलान अनुदान हुआ करते थे; एक छोटे से कार्यक्रम में मेरे क्लब ने चेन्नई के छात्रों को 50 स्कूल बेंच दान की थी। यह मेरे रोटरी करिअर के शुरुआती दिनों की बात थी; मुझे टीआरएफ या मिलान अनुदान के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैं बस बैठकों में जाता था और मित्रता का आनंद लेता था। उस कार्यक्रम में मेरी भूमिका सशस्त्र सार्जेंट की थी, और कार्यक्रम खत्म होने के बाद मेरा काम बैनर इकट्ठा करना होता था।

कार्यक्रम के बाद, सब लोग समोसे और चाय के लिए बाहर चले गए। लेकिन एक लड़की वहीं बैठी रही। वह जाने को तैयार नहीं थी, इसलिए मुझे उसके पास बैठना पड़ा। मैंने उससे कहा कि जब तक तुम नहीं चलोगी, मैं भी इस कमरे से नहीं जाऊँगा। उसने तमिल में जो कहा, उसने रोटरी के प्रति मेरी सोच बदल दी।

उसने कहा, इतने वर्षों में, पहली बार मैं जमीन पर नहीं बल्कि बेंच पर बैठ रही हूँ। मुझे इसे थोड़ी देर और अनुभव करने दीजिए आप भगवान हैं क्योंकि आपने मुझे यह अवसर दिया।

मुझे शर्म महसूस हुई क्योंकि मैं उस चीज का श्रेय ले रहा था जिसमें मेरा कोई योगदान नहीं था। मैंने टीआरएफ में कोई योगदान नहीं दिया था, लेकिन यहाँ एक लड़की मुझे भगवान कह रही थी। मैंने अपने क्लब अध्यक्ष से टीआरएफ और पीएचएफ के बारे में पूछा और 1,000 डॉलर का चेक लिखा, उस समय डॉलर लगभग ₹32 या 33 का था। उस रात मुझे लगा कि उस लड़की ने जो श्रेय मुझे दिया था उसका एक प्रतिशत मैं ले सकता हूँ। इस अनुभव ने मुझे बदल दिया और मुझे टीआरएफ का समर्थक बना दिया। मेरी युवाओं को सलाह है: भाग लें; दर्शक मत बनिए, खिलाड़ी बनिए।

अग्रवाला: पोलिओप्लस के अलावा, क्या किसी और बड़े अभियान की योजना है?

ए एस वी: जब तक हम पूरी तरह पोलियो मुक्त नहीं हो जाते, तब तक अन्य परियोजनाओं की बात करना

उचित नहीं होगा। इससे इस उद्देश्य के प्रति हमारे प्रयास कमजोर पड़ सकते हैं, जिसके लिए हम 35 से अधिक वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं।

जब पोलियो समाप्त हो जाएगा और यहाँ मैं सिर्फ अनुमान लगा सकता हूँ पिछले कुछ वर्षों में टीआरएफ के काम करने के तरीके को देखते हुए, क्षेत्रीयकरण की ओर बढ़ने पर अधिक जोर दिया जाएगा। जो अमेरिका में काम करता है वह शायद जापान में काम न करे, जो जापान में काम करता है वह शायद भारत में काम न करे। रोटरी समझती है कि एक ही समाधान सबके लिए उपयुक्त नहीं होता। इसलिए भविष्य में अलग-अलग क्षेत्रों के लिए विकल्पों का एक मेन्यू देखने को मिल सकता है।

अग्रवाला: आपकी रोटरी यात्रा पर आते हैं, आपको रोटरी में शामिल होने के लिए किसने प्रेरित किया, और किस चीज ने आपको गवर्नर, रो ई निदेशक और अब न्यासी-निर्वाचित बनने तक जोड़े रखा?

ए एस वी: सच कहूँ तो, मैं सेवा करने के लिए रोटरी में शामिल नहीं हुआ था; वह मेरे दिमाग में आखिरी बात थी। मैं रोटरी से इसलिए जुड़ा ताकि अपने पेशे और व्यवसाय के बाहर दोस्त बना सकूँ। लेकिन लोगों के जीवन में जो व्यक्तिगत बदलाव मैं ला पाता हूँ, वही मुझे रोटरी में बनाए रखता है। मेरी आईआईटी की फीस पूरे बीटेक कोर्स के लिए ₹2,000 से भी कम थी। इसका मतलब है कि हजारों करदाताओं ने मेरी शिक्षा के लिए पैसा दिया, बिना यह जाने कि लाभार्थी कौन होगा। अगर मुझे इतने लोगों के योगदान का लाभ लेने का अधिकार है, तो जब मैं सक्षम हूँ, तो मेरा समाज को वापस लौटाने का कर्तव्य भी है। टीआरएफ ने मुझे यह अवसर दिया कि मैं दान करूँ बिना यह जाने कि लाभार्थी कौन हैं। मुझे लगा कि समाज के प्रति अपना ऋण चुकाने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

अग्रवाला: क्या आप बता सकते हैं कि टीआरएफ के लिए शांति कार्यक्रम का क्या महत्व है और यह इसे इतना समर्थन क्यों देता है?

ए एस वी: शानदार प्रश्न! शांति का अर्थ केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं होता है। हममें से कई लोगों ने कभी युद्ध नहीं देखा है, लेकिन क्या हम शांतिपूर्ण जीवन जी रहे है? क्या हमारे आसपास का समुदाय शांति में है? ऐसा जरूरी नहीं है।

शांति तब होती है जब मुझे पता हो कि मेरे अगले दिन का भोजन कहाँ से आएगा... कि मैं कल सुबह स्वस्थ और तंदुरुस्त उठूँगा, और इस बात की चिंता नहीं करूँगा कि मुझे किस बीमारी ने प्रभावित किया है। ये शांति के तत्व हैं, न कि केवल युद्ध की अनुपस्थिति।

रोटरी के लिए शांति का मतलब है दुनिया भर के लोगों के लिए एक सुरक्षित वातावरण और चिंताओं से मुक्त जीवन। हाल ही में हमारा नवीनतम शांति केंद्र पुणे में सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी में खुला है; मैं वहाँ मौजूद था। इन शांति विश्वविद्यालयों से पढ़ाई करने वाले लोग दुनिया भर में जाकर संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों में समाधान देंगे ताकि समुदाय शांति से रह सकें।

रोटरी शांति निर्माण और संघर्ष समाधान पर इतना पैसा इसलिए खर्च करता है क्योंकि यह सभी परियोजनाओं की जननी है। कुछ साल पहले, विनिता और मैं बारबाडोस में एक स्कूल गए थे जिसे एक रोटरी क्लब ने शुरू किया था। वहाँ छह-सात बच्चों ने मेरे पैरों को पकड़ लिया और बताया कि स्कूल में एक छोटी डिस्पेंसरी और एक कैंटीन भी है जहाँ भोजन रोटरी क्लब देता है। ये बच्चे मुख्य रूप से दवाइयों और भोजन के लिए वहाँ आते थे, और क्योंकि वे वहाँ तक आ चुके होते थे, इसलिए स्कूल भी चले जाते थे। उनकी खुशी दवाइयों और भोजन से आती थी वे आज शांति में हैं। इसलिए नहीं कि वहाँ युद्ध नहीं था, बल्कि इसलिए कि उन्हें भोजन और स्वास्थ्य सेवा मिल रही थी। यही कारण है कि रोटरी शांति के लिए अधिक संसाधन समर्पित कर रहा है।

अग्रवाला: सीएसआर और हमारे क्लबों के जमीनी सेवा मॉडल के बीच की दूरी को रोटरी कैसे कम कर सकता है?

ए एस वी: किसी भी संगठन के विकास के लिए, वो भी तेज़ी से विकास के लिए, साझेदारियाँ आवश्यक होती हैं। आप कम समय में अकेले दोगुना काम नहीं कर सकते। कॉरपोरेट जगत में, इसे विलय और अधिग्रहण कहा जाता है, और रोटरी में इसे साझेदारी कहते हैं। आपको समान विचार वाले लोगों या उन लोगों के साथ हाथ मिलाना होगा जो आपकी योजना की कमियों को पूरा कर सकें। यहीं पर कॉरपोरेट्स आते हैं; वे हमारी ताकत को पूरा करते हैं। साथ मिलकर हम चमत्कार कर सकते हैं। उनके पास हमारे जैसे कार्यकर्ता नहीं हैं और हमारे पास उनके जैसा पैसा नहीं हैं। इसलिए अगर हम मिलकर काम करें, तो दोनों अपनी आकांक्षाएँ पूरी कर सकते हैं। कॉर्पोरेट्स बदलाव लाना चाहते है। उनके पास जमीनी स्तर पर काम करने वाले लोग नहीं हैं, हमारे पास उनके जैसे संसाधन नहीं हैं।

चूँकि भारत में सीएसआर के माध्यम से अधिक धन जुटाना संभव था, इसलिए टीआरएफ ने इसे भारत की विशिष्ट गतिविधि बनाने और उभरती जरूरतों के अनुसार ढालने के लिए एक संशोधन किया।

अग्रवाला: हम अक्सर युवा सदस्यों को आकर्षित करने की बात करते हैं। लचीलेपन के अलावा, हमें ऐसा करने के लिए कौन से मौलिक बदलाव करने की आवश्यकता है?

ए एस वी: एक फोकस समूह (20-35 वर्ष) से मिली प्रतिक्रिया के अनुसार, युवाओं (35 से कम उम्र) ने कहा कि उन्हें भाषण नहीं सुनने और उन्हें निश्चित समय की प्रतिबद्धता नहीं चाहिए। अक्सर हम उपस्थिति को जुड़ाव समझने की गलती करते है, जिसे बदलने की जरूरत है। उपस्थिति का मतलब जुड़ाव नहीं होता है। अगर सभी सदस्य हर बैठक में आने लगे, तो क्लब की सदस्यता शुल्क दोगुनी करनी पड़ेगी। क्योंकि आज अधिकांश रोटरी क्लब उन सदस्यों से मिलने वाली क्रॉस-सब्सिडी पर चलते हैं जो बैठकों में नहीं आते। यह एक आर्थिक सच्चाई है।

युवाओं की बात करें तो, वे भाषण नहीं सुनना चाहते, वे यह सब गूगल, मेटा या किसी भी एआई प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। हम अभी भी शारीरिक बैठकों के माध्यम से नेटवर्किंग की बात करते हैं। लेकिन अगली पीढ़ी 24x7 नेटवर्किंग करती है... यहाँ तक कि जब वे कॉफी पीते हैं तब भी इंस्टाग्राम पर फोटो पोस्ट करते है। इसलिए ये सभी बातें उन्हें आकर्षित नहीं करेंगी और हमें अपनी सोच बदलनी होगी। युवाओं को आकर्षित करने के लिए, उन्हें वही दीजिए जो वे चाहते हैं। वे दूर रहकर काम कर सकते हैं और शायद बैठकों में न आएँ, लेकिन वे अपने समुदाय में किसी परियोजना का नेतृत्व कर सकते है। उन्हें प्रोत्साहित करें। समय के साथ, वे वापस आएँगे। जब वे अपने समुदाय से जुड़ेंगे, तो वे वहीं आएँगे जहाँ हम हैं। लेकिन शुरुआत में,

उनके सपनों को साकार करने में उनकी मदद करें, न कि हमारे सपनों का हिस्सा बनने के लिए उन्हें मजबूर करें।आने वाले वर्षों में वे हमारे संगठन का हिस्सा बनेंगे।

अग्रवाला: टीआरएफ जैसे मल्टी-मिलियन डॉलर के संगठन को चलाने के व्यावसायिक पहलू और रोटरी की सेवा-भावना तथा स्वयंसेवी भावना के बीच संतुलन कैसे बनाए रखते हैं?

ए एस वी: एक संगठन के रूप में टीआरएफ के पास केवल धन है। रो ई और उसके मंडल व क्लब लोग प्रदान कराते हैं। इसलिए वास्तव में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। टीआरएफ के पास पैसा है, रो ई के पास लोग हैं; जितना अधिक धन उपलब्ध होगा, उतने अधिक लोग जुड़ेंगे। टीआरएफ लोगों की मदद करने के लिए है। यह कोई स्वतंत्र संस्था नहीं है बल्कि रो ई का हिस्सा है जो हमारे प्रयासों में मदद करती है ताकि हम बदलाव ला सकें। हम सभी जानते हैं कि यह कैसे काम करता है। जिन लोगों के पास होता है, वे देते हैं; जिन्हें जरूरत होती है, वे लेते हैं। यहाँ ''लोगों'' से मेरा मतलब दुनिया के कुछ क्षेत्रों से है।

आगे चलकर, मेरा मानना है कि टीआरएफ को छोटी परियोजनाओं से परहेज करना चाहिए। छोटी परियोजनाओं को मंडलों एवं क्लबों को संभालने देना चाहिए। हमें टीआरएफ के अनुदानों के माध्यम से बड़े प्रभाव वाली परियोजनाओं पर ध्यान देना चाहिए। इससे वास्तविक बदलाव आएगा, क्योंकि स्थिरता पैमाने के साथ आती है। और वह पैमाना तभी संभव है जब टीआरएफ बड़ी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करें, जैसे प्रोग्राम्स ऑफ स्केल, ज़ाम्बिया में मलेरिया, मिस्र में सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण, या महाराष्ट्र और गुजरात के किसानों के लिए कार्यक्रम। उस तरह के प्रभाव का लाभ उठाना होगा और आगामी वर्षों में पैमाने को आगे बढ़ाना होगा।

अग्रवाला: हमारे दर्शकों में कई संभावित नेतृत्वकर्ता हैं; उन रोटेरियनों को आप क्या सलाह देंगे जिन्हें लगता है कि उनमें ज़ोन या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व करने की क्षमता हैं?

ए एस वी: सलाह बहुत बड़ा शब्द है। मुझे नहीं लगता कि मैं अभी उस स्थिति में हूँ कि किसी को सलाह दे सकूँ। लेकिन मैं अपना अनुभव साझा कर सकता हूँ; पहले दिन से ही, मुझे दिए गए किसी भी कार्य को मैंने कभी "ना" नहीं कहा। चाहे वह क्लब स्तर पर हो, मंडल स्तर पर हो, ज़ोन स्तर पर हो या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, मैंने कभी मना नहीं किया। कभी-कभी ऐसा भी हुआ कि मैं पहले से ऊँचे पद पर रह चुका था और मुझे उससे छोटा पद दिया गया, लेकिन मैंने फिर भी "ना" नहीं कहा। इसलिए जो लोग रोटरी में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनसे मैं कहूँगा - कभी झ्नाफमत कहिए। जो भी अवसर मिले उसे स्वीकार करें। यदि आपको लगता है कि आप बहुत कुशल और प्रतिभाशाली हैं, तो उस भूमिका में कुछ करके दिखाइए। दुनिया को बताइए: 'मैं आपकी सोच से कहीं बेहतर कर सकता हूँ।' अपनी अनोखी प्रतिभा को दुनिया को दिखाइए।

चित्र: रशीदा भगत

रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने आरआईडीई सेखों को सम्मानित किया

जयश्री

अमृतसर में गुरजीत सिंह सेखों को 2027-29 के लिए जोन 4 और 7 के लिए रो ई निदेशक चुने जाने पर गर्मजोशी भरी तालियों और स्नेहपूर्ण यादों के साथ सम्मानित किया गया। पूरे भारत से आए रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने उन्हें एक विचारशील, विश्लेषणात्मक और विनम्र नेता के रूप में वर्णित किया, जो वैश्विक रोटरी मंच पर विशिष्टता के साथ भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। सेखों ने 2014-15 में रो ई मंडल 3070 के गवर्नर के रूप में सेवाएं दी थी।

उन्हें बधाई देते हुए, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने कहा कि रो ई मंडल में सेवा करने से आपको दुनिया भर के कुछ बेहतरीन नेतृत्वकर्ताओं से मिलने का अवसर मिलेगा और आपको ऐसे दृष्टिकोण प्रदान करेगा जो नेतृत्व की सोच को व्यापक बनाएंगे। आपके दो वर्षों के कार्यकाल के दौरान, हमारे देश में आपको सबसे अच्छा समय और सबसे कठिन समय दोनों देखने को मिलेगा। लेकिन आपके नेतृत्व को यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत हमेशा संतुलन में रहे, और रोटरी इसी पर निर्भर रहेगी। उन्होंने आगे कहा, यदि आपकी जीवनसंगिनी आपके साथ हैं, तो यह आपकी क्षमता को बढ़ाएगा और आपकी सफलताओं को कई गुना कर देगा।

उनकी यात्रा की एक व्यक्तिगत झलक पेश करते हुए, उनकी पत्नी अमनदीप ने अपने पति के जीवन और मूल्यों के बारे में गर्मजोशी से बात की। एक मृदा वैज्ञानिक के पुत्र सेखों ने लुधियाना में कृषि की पढ़ाई की, फिर कॉर्पोरेट क्षेत्र में अपना करियर शुरू किया और बाद में अमृतसर में उद्यमी बने। उनकी रोटरी यात्रा 1994 में रोटरी क्लब अमृतसर सिविल लाइन्स के चार्टर सदस्य के रूप में शुरू हुई थी। उन्होंने कहा, रो ई निदेशक के रूप में सेवा करने से उन्हें अवसर मिलेगा कि वे अपनी नेतृत्व क्षमता का उपयोग रोटरी के व्यापक हितों के लिए कर सकें।

सदस्यता रणनीतियों और संगठनात्मक डेटा पर चर्चाओं को याद करते हुए, पीआरआईडी और

नेतृत्व केवल एक वर्ष या कार्यकाल को संभालने के बारे में नहीं है, बल्कि एक संस्था को सुदृढ़ करने के बारे में है।

बाएँ से: पीआरआईडी गण अनिरुद्धा रायचौधरी और महेश कोटबागी, टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश, RIDE बसु देव गोल्यान, अमनदीप और RIDE गुरजीत सेखों, टीआरएफ ट्रस्टी भरत पांड्या, डीजी रोहित ओबेरॉय, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन।

टीआरएफ के निर्वाचित न्यासी ए एस वेंकटेश ने कहा कि सेखों की पहचान सूक्ष्म तैयारी और विश्लेषणात्मक सोच, और सुनने, सीखने और पुरानी बातें भूलकर नई चीजें सीखने की उनकी इच्छा है - जो मजबूत नेतृत्वकर्ताओं को अलग बनाता है।

पीआरआईडी राजू सुब्रमण्यन के लिए, जो गुण सेखों को परिभाषित करते है वे है सटीकता, अनुशासन और नेतृत्वकर्ताओं को प्रशिक्षित करने का जुनून। उन्होंने निर्वाचित गवर्नरों के लिए शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में उनकी भूमिका को याद किया, जहाँ बारीकियों पर ध्यान और निरंतर फॉलो-अप ने उत्कृष्टता सुनिश्चित की थी। गुरजीत के लिए नेतृत्व व्यक्तिगत महत्व के बारे में नहीं, बल्कि सामूहिक सफलता के बारे में है।

एथलीटों की असाधारण उपलब्धियों से तुलना करते हुए, टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या ने कहा कि सेखों के पास नेतृत्व के लिए आवश्यक तीन बातें - प्रतिबद्धता, क्षमता और साहस - मौजूद हैं। पांड्या ने उन्हें रोटरी क्लबों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित रखने की सलाह दी और कहा कि रोटरी की असली ताकत जमीनी स्तर पर है।

सेखों, पीआरआईपी बेनर्जी, RID 3070 के डीजी ओबेरॉय और पीडीजी अविनाश मोहिंद्रू के साथ।

एक वीडियो संदेश के माध्यम से, पीआरआईडी सी भास्कर ने कहा कि सेखों की यात्रा करुणा और सक्षमता का एक मिश्रण दर्शाती है। सदस्यता और सेवा पहलों को मजबूत करने से लेकर युवा नेतृत्व को बढ़ावा देने तक, उनके कार्य ने हमेशा आसपास के रोटेरियनों को प्रेरित किया है।

पीआरआईडी अनिरुद्धा रायचौधरी ने विश्वास जताया कि सेखों ऐसे समय में रोटरी में विचारशील नेतृत्व और नैतिक शासन लाएंगे जब रोटरी तेजी से बदलती दुनिया में अपनी भूमिका को फिर से परिभाषित कर रही है। पीआरआईडी महेश कोटबागी ने सदस्यता विकास के प्रति उनके समर्पण और इस भूमिका के लिए उनके सर्वसम्मत चयन को वर्षों की प्रतिबद्ध सेवा का सम्मान बताया।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदन ने सदस्यता वृद्धि, सरकारों के साथ मजबूत सहयोग और रोटरी के अंदर भारत की वैश्विक पहचान को बढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर डाला। रो ई निदेशक के पी नागेश ने कहा कि सदस्यता वृद्धि के प्रति सेखों का जुनून भारत में रोटरी के विस्तार के दीर्घकालिक लक्ष्य में योगदान देगा।

नेपाल से ज़ोन 5 और 6 के आरआईडीई बसु देव गोल्यान भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। सेखों के बैचमेट गवर्नरों ने उन्हें शुभकामनाएँ दीं। डीजी रोहित ओबेरॉय ने कहा, गुरजीत का रो ई निदेशक के रूप में चुना जाना केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि पूरे मंडल के लिए गर्व का क्षण है।

सम्मान के जवाब में, आरआईडीई गुरजीत सेखों ने पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन और न्यासी भरत पंड्या को उन्हें यह जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने हेतु धन्यवाद दिया, साथ ही अपने मार्गदर्शक पीडीजी अविनाश मोहिंद्रु के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा, नेतृत्व का उद्देश्य एक वर्ष या कार्यकाल को संभालने का नहीं होता, बल्कि एक संस्था को मजबूत करने का होता है। उन्होंने यह भी कहा कि भले ही रोटरी का नेतृत्व हर वर्ष बदलता हैं, संगठन की प्रणालियाँ और मूल्य स्थिर और स्थायी रहने चाहिए। उन्होंने आठ संरचनात्मक बदलावों की रूपरेखा प्रस्तुत की, जो तय करेंगे कि रोटरी योजनाबद्ध रूप से बढ़ेगी या आराम से बहती रहेगी।

उन्होंने कहा कि पहला बदलाव है व्यक्तिगत निर्भरता से प्रक्रिया-संचालित प्रणालियों की ओर बढ़ना है। जहां रोटरी अक्सर गतिशील नेतृत्वकर्ताओं का सम्मान करती है, वहीं संस्थाएँ केवल व्यक्तिगत प्रतिभा पर निर्भर नहीं रह सकतीं। हमें व्यक्तिगत प्रतिभा से संस्थागत उत्कृष्टता की ओर बढ़ना होगा, और प्रक्रियाओं

बाएँ से: रो ई निदेशक गण के पी नागेश, एम मुरुगानंदम और RIDE सेखों।

को लोगों के कार्यकाल से अधिक टिकना होगा, उन्होंने कहा।

इसके बाद, उन्होंने सीखने और नेतृत्व प्रशिक्षण को पेशेवर बनाने की बात कही। मजबूत प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करेगा कि रोटरी क्लब और मंडल दोनों स्तरों पर सक्षम नेतृत्व का विकास करे।

उन्होंने संख्या के बजाय सामग्री को प्राथमिकता देने की बात पर भी प्रकाश डाला। केवल उपस्थिति प्रभाव नहीं बनाती, मूल्य बनाते है। हमें 'दिशा' और अपने ज़ोन इंस्टीट्यूट्स की पुनर्समीक्षा करनी होगी।

सेखों ने टीआरएफ योगदान में भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। केवल कुल योगदान पर ध्यान देने के बजाय, रोटरी को योगदान देने वाले सदस्यों का प्रतिशत भी बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा, हर वह सदस्य जो योगदान नहीं देता, वह केवल एक संभावित दानकर्ता नहीं, बल्कि एक संभावित विश्वासी भी है, और ऐसी संस्कृति की बात की जिसमें योगदान साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता हो।

परियोजनाओं के संदर्भ में, उन्होंने मजबूत निगरानी और समयबद्ध वैश्विक अनुदानों पर जोर दिया, ताकि फंडिंग समाप्त होने के बाड़ भी पहलें चलती रहें। क्लबों और मंडलों को वैश्विक अनुदान समाप्त होने के बाद भी लाभार्थियों के संपर्क में रहना चाहिए। दीर्घकालिक स्थिरता ही हमारा मंत्र होना चाहिए।

उन्होंने आगाह किया कि रोटरी को नेतृत्व विकास और क्लब की व्यावहारिकता में भी अधिक गंभीर निवेश करना चाहिए, क्योंकि नए नेतृत्वकर्ताओं को विकसित किए बिना, हम पतन की ओर जाएंगे। शीर्ष नेतृत्व के रूप में, हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम रोटरी की प्रतिष्ठा को बनाए रख रहे हैं या धीरे-धीरे उसे कमज़ोर कर रहे हैं?

सदस्य अपना समय, संसाधन और विश्वास देते हैं। हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

उन्होंने आगे मंडलों एवं क्लबों में संरचित मार्गदर्शन की वकालत की और सदस्य सहभागिता एवं अपनेपन को रोटरी की स्थिरता का मूल बताया। उनके अनुसार, सदस्य बनाए रखना केवल संख्या का मामला नहीं, बल्कि भावनात्मक जुड़ाव का विषय है। सदस्य अपना समय, संसाधन और विश्वास देते हैं। हमें उसका सम्मान करना चाहिए। सदस्य संतुष्टि वार्षिक नहीं, बल्कि एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए। केवल तब हमें संख्या में वृद्धि के पीछे भागना नहीं पड़ेगा; यह स्वाभाविक रूप से होगी, उन्होंने कहा। ■

सेखों परिवार अपने परिजनों और मित्रों के साथ। उनकी बेटी मन्नत सबसे दाईं ओर हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

नवी मुंबई में रोटरी-जनसंपर्क पहल

टीम रोटरी न्यूज़

फिटनेस, सामुदायिक एकता और भाईचारे का उत्सव मनाने वाला 'हैप्पी स्ट्रीट्स' कार्यक्रम, नवी मुंबई के नेरुल स्थित एक रमणीय, पर्यावरण-अनुकूल शहरी पार्क में आयोजित किया गया। इसका आयोजन रोटरी क्लब नवी मुंबई समैरिटन्स (रो ई मंडल 3142) द्वारा रोटरी क्लब नवी मुंबई इंडस्ट्रियल एरिया और नवी मुंबई पाम बीच के सहयोग से किया गया। इस कार्यक्रम में रोटेरियन, फिटनेस के शौकीन, कलाकार और सभी आयु वर्ग के लोग एक समावेशी सभा में एकत्रित हुए।

विद्या भवन स्कूल के प्राथमिक छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण और ब्रह्मांड की पांच मूलभूत शक्तियों, *पंचभूतों* के महत्व पर दो नाटक प्रस्तुत किए; इसके बाद लावणी नृत्य का प्रदर्शन हुआ, जिसने कार्यक्रम में एक सांस्कृतिक रंग भर दिया।

सामाजिक जागरूकता पैदा करने के लिए, गैर-सरकारी संगठनों टिस्सर आर्टिसन फोरम और स्क्रैपजी ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर एक प्रस्तुति दी। इसमें पुराने कपड़े, खिलौने और इलेक्ट्रॉनिक कचरे के पुनर्चक्रण तथा टिकाऊ जीवनशैली अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। डॉ अंकिता सावंत ने फिजियोथेरेपी पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसमें शारीरिक स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिए निवारक आदतों के महत्व पर विशेष जोर दिया गया।

डीजीएन श्रीजित पूथेन, शक्ति फाउंडेशन की अध्यक्ष विमला नंदकुमार को वोकशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड प्रदान करते हुए। रोटरी क्लब नवी मुंबई समैरिटन्स के अध्यक्ष अभिजीत चौधरी दाईं ओर हैं।

डीजी हर्ष मकोल ने इस पहल के लिए रोटरी क्लबों की सराहना की, जिससे समुदाय के साथ रोटरी का जुड़ाव और संबंध मजबूत हुआ है। रोटरी क्लब नवी मुंबई समैरिटन्स के अध्यक्ष अभिजीत चौधरी ने कहा, हैप्पी स्ट्रीट्स रोटरी की सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देने और रोटेरियन और नागरिकों के बीच भाईचारे को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने परियोजना अध्यक्ष मोहन देशकर की बारीक योजना और प्रयासों की प्रशंसा की। पीडीजी मोहन चंद्रवरकर भी उपस्थित थे।

हैप्पी स्ट्रीट्स कार्यक्रम में आयोजित ज़ुम्बा डांस सत्र।

व्यावसायिक उत्कृष्टता

शक्ति फाउंडेशन की शिक्षिका विमला नंदकुमार, बाल शिक्षाविद रजनीश कारू (नन्हे कदम) और स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ सुचेता किंजवाडेकर को समाज में उनके निस्वार्थ योगदान के लिए रोटरी के व्यावसायिक उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क्लब ने राष्ट्रीय स्तर के होनहार खिलाड़ियों - तृषा भोंसले (लॉन टेनिस), सानवी शिंदे (जिम्नास्टिक्स) और मयूरेश भुटकी (बैडमिंटन) - को भी सम्मानित किया, ताकि वे नई ऊंचाइयों को छू सकें। जल शक्ति अभियान के तहत सम्मानित 'भारत के जल नायक' के रूप में जाने जाने वाले सुभाजित मुखर्जी और वन्यजीव फोटोग्राफर और पर्यावरण कार्यकर्ता अभिजीत चट्टोपाध्याय को भी क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। ■

आइए हम सभी रोटरी को अपना मानें

वी मुत्तुकुमारन

हालाँकि रोटरी में जश्न मनाने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन हमें पिछले 25 वर्षों से 1.2 मिलियन पर स्थिर सदस्यता पर भी आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है; वास्तव में अब यह 50,000 कम हो गई है, जो चिंता का विषय है। जो संगठन बढ़ने में असफल रहता है, वह धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है, और ये आँकड़े पुनर्विचार की आवश्यकता दर्शाते हैं, टीआरएफ ट्रस्टी-इलेक्ट ए एस वेंकटेश ने कहा।

रो ई मंडल 3234 के मंडल सम्मेलन 'उत्सव 2026' के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए उन्होंने कहा कि 122 वर्षों का इतिहास, पोलियो के खिलाफ रोटरी की लड़ाई और दुनिया भर के क्लबों द्वारा किए गए अच्छे कार्य-ये सभी जश्न मनाने के कारण हैं। लेकिन हमें खुद से यह पूछना होगा कि हममें से कितने लोग 'मेरी संस्था' पर गर्व करते हैं। क्या अधिकांश रोटेरियन अपनी सदस्यता का वास्तविक अनुभव करते हैं और क्या उनके क्लब उन्हें सक्रिय रूप से जोड़ते हैं? पूछिए कि रोटरी में मेरे लिए क्या है, जो आप करना चाहते हैं उसे चुनिए और इसे अपनी संस्था बनाइए, उन्होंने कहा।

वेंकटेश ने कहा कि 1916 में अमेरिका में मौखिक स्वच्छता पर किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि केवल 16 प्रतिशत लोग ही रोज अपने दाँत ब्रश करते थे। इसके बाद कोलगेट और पेप्सोडेंट ने एक मार्केटिंग अभियान शुरू किया। 1925 तक नए उपभोक्ता अन्य ब्रांडों की तुलना में पेप्सोडेंट अधिक खरीद रहे थे, जिससे कोलगेट चिंतित हो गया। प्रतिस्पर्धी कंपनी साइट्रिक एसिड और मिंट ऑयल का उपयोग कर रही थी, जिनका मौखिक स्वच्छता से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन वे उपयोगकर्ताओं को साफ महसूस कराते थे। कभी-कभी लोगों को अच्छा महसूस कराना, अच्छा करने से अधिक प्रभावी होता है।

उन्होंने कहा कि रोटरी भी सदस्यता वृद्धि के संदर्भ में इससे सीख ले सकती है। भारत के जोनों में 1.8 लाख रोटेरियन हैं और 1.4 अरब की आबादी के साथ हमारे पास वृद्धि की अपार संभावनाएँ हैं।

मंडल सम्मेलन को संबोधित करते हुए, आरआईपीआर सिटी सुबैदाह मुस्तफा (रो ई मंडल 3300, मलेशिया) ने कहा, राजनीति, विचारधाराओं और भौगोलिक सीमाओं से बँटी दुनिया में, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो की वार्षिक थीम "Unite for Good" एक ऐसा मंत्र है जो मानवता को जोड़ने और समुदायों को ऊपर उठाने का संदेश देती है। उन्होंने कहा कि यह केवल परियोजनाएँ या गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि वे अनुभव हैं जो हम देखभाल, गरिमा और मान्यता के माध्यम से मानवता के लिए निर्मित करते हैं, जो वास्तविक परिवर्तन लाते हैं। यदि आप किसी रोटरेक्टर या युवा नेता से पूछें कि ङ्गरोटरी आपके लिए क्या मायने रखती है?फ तो उत्तर होगा-यह वह पहला स्थान है जहाँ हमें दुनिया में अच्छा करने की शक्ति मिलती है।

रो ई मंडल के लक्ष्य पूरे

रो ई मंडल 3234 की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डीजी विनोद साराओगी ने कहा, हम अपने मंडल के लिए आरआई निदेशक मुरुगानंदम द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को पूरा करेंगे और इस वर्ष ₹50 करोड़ के सेवा प्रकल्पों को क्रियान्वित करेंगे (जिसमें ₹20 करोड़ का कार्य पूरा हो चुका है)। टीआरएफ को दिए जाने वाले 2.5 मिलियन डॉलर के लक्ष्य का आधा पूरा हो चुका है; 1,000 नए सदस्य जोड़े जाएंगे; और 10 नए रोटरी क्लब तथा 15 रोटरेक्ट क्लब (650 नए रोटरेक्टरों के साथ) मंडल 3234 में शामिल होंगे।

जहाँ 50 डायलिसिस मशीनें (₹6 करोड़) धर्मार्थ और सरकारी अस्पतालों में स्थापित की गई हैं, वहीं वर्ष के अंत तक 50 और इकाइयाँ स्थापित की जाएँगी। मंडल के क्लबों ने झीलों और जलाशयों के पुनरुद्धार पर ₹2.5 करोड़ खर्च किए हैं; आदिवासी परिवारों के लिए 100 घर (6 करोड़) बनाए गए हैं और 50 और निर्माणाधीन हैं। रोटरी क्लब मद्रास के नेतृत्व में एक बड़े प्रकल्प के तहत 10,000 लड़कियों का सर्वाइकल कैंसर से बचाव हेतु एचपीवी टीकाकरण (₹2.2 करोड़) किया गया। एक ग्लोबल ग्रांट प्रकल्प के माध्यम से युगांडा के 100 बच्चों की शहर के अस्पतालों में हृदय शल्यक्रिया की गई; और अब तक प्रोजेक्ट हीलिंग टाइनी हार्ट्स के तहत अपोलो अस्पतालों में 750 बच्चों की निःशुल्क

डीजी सराओगी, एटिपिकल एडवांटेज के संस्थापक-सीईओ विनीत साराईवाला को सम्मानित करते हुए। साथ में रोटरी क्लब ग्लोबल नेक्सस की अध्यक्ष अंजलि आनंद भी हैं।

शतरंज की प्रतिभाशाली खिलाड़ी ए एस शर्वानिका को डीजी सराओगी और आरआईपीआर सिति सुबैदाह द्वारा रोटरी का "यंग अचीवर अवॉर्ड" प्रदान किया गया।

हृदय शल्यक्रिया की जा चुकी है (सीएसआर निधि: ₹3 करोड़)।

महिलाओं के आजीविका समर्थन के लिए 100 पिंक ऑटो दिए गए हैं और 100 और दिए जाएंगे। 100 हैप्पी स्कूल भी पूरे किए गए (₹5 करोड़)।

रोचक सत्र

रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के सीईओ कृष्णकुमार तिरुमलाई ने कहा कि भारत अगले कुछ वर्षों में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। 2050 तक, 70 प्रतिशत से अधिक आबादी (एक अरब से अधिक लोग) कार्यशील आयु वर्ग में होगी और प्रति व्यक्ति आय 21,000 डॉलर से अधिक हो जाएगी।

हालाँकि कुछ चिंताजनक मुद्दे भी हैं-आय का असमान वितरण, जहाँ शीर्ष 10 प्रतिशत लोग 65 प्रतिशत संपत्ति पर नियंत्रण रखते हैं; कृषि अभी भी सबसे बड़ा नियोक्ता है; और अधिकांश नौकरियाँ असंगठित क्षेत्र में हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य आर्थिक विकास के दो स्तंभ हैं, लेकिन भारत इन दोनों क्षेत्रों पर क्रमशः केवल 6 प्रतिशत और 1.9 प्रतिशत जीडीपी खर्च करता है। तिरुमलाई को रोटरी का कॉरपोरेट आइकन अवार्ड प्रदान किया गया।

'ए न्यू वर्ल्ड डिसऑर्डर' विषय पर अपने संबोधन में कॉरपोरेट सलाहकार और पूर्व राजनयिक अजय बिसारिया ने कहा कि हम वैश्विक उथल-पुथल के दौर में हैं। उन्होंने समझाया कि भारत को बहुपक्षीय सहभागिता के माध्यम से भू-राजनीति का लाभ उठाना होगा, अपनी सीमाओं को सुरक्षित रखना होगा, ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करनी होगी, तकनीकी क्षमता विकसित करनी होगी और वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संवाद बनाए रखना होगा।

मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) एच धर्मराजन ने बताया कि भारतीय सेना कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में स्थानीय किसानों और व्यापारियों का मार्गदर्शन कर रही है। वर्षों में सेना ने स्थानीय किसानों और छोटे उद्यमियों के साथ मजबूत संबंध बनाए हैं, जो नियमित आपूर्ति प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु का एमएसएमई क्षेत्र सेना की जरूरतों के अनुरूप इंजीनियरिंग उत्पाद उपलब्ध करा सकता है।

भारतीय महिलाओं के विकास पर अपने वक्तव्य में पूर्व अंग्रेज़ी प्रोफेसर जयंतश्री बालकृष्णन ने अपने पूर्व छात्रों से जुड़े अनुभव साझा किए, जो अब देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। हर महिला को पोषण देने वाली व्यक्तित्व होना चाहिए। विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति को सपने देखने वाले से स्वयं सपना बन जाना चाहिए और हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए।

रो ई मंडल 3212 के प्रोजेक्ट 'यादुमानवल' के साथ अपनी यात्रा को याद करते हुए उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में 113 कार्यक्रमों के माध्यम से 1.68 लाख स्कूली लड़कियों तक पहुँचा गया। मैं रोटेरियनों से ऊर्जा और सकारात्मकता प्राप्त करती हूँ, उन्होंने कहा।

एटिपिकल एडवांटेज के संस्थापक-सीईओ विनीते साराईवाला, जो स्वयं दृष्टिबाधित हैं, ने कहा कि उनकी कंपनी ने 500 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों को रोजगार दिया है। हमने 5,000 से अधिक दिव्यांग व्यक्तियों को आजीविका प्रदान की है और 400 कलाकारों ने ₹4.5 करोड़ मूल्य की अपनी कला कृतियाँ बेची हैं। उन्होंने कहा कि एआई तकनीकों के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों की दैनिक चुनौतियों को कम किया जा सकता है।

अंडर-10 फिडे विश्व चैंपियन ए एस शर्वानिका को रोटरी का यंग अचीवर अवार्ड प्रदान किया गया।

मंडल सम्मेलन के काउंसलर पीडीजी अबिरामी रामनाथन को रोटरी का ङ्गलेगेसी ऑफ गिविंगफ अवार्ड दिया गया। अब तक उन्होंने टीआरएफ को 626,000 डॉलर का योगदान दिया है और ए के एस चेयर्स सर्कल में शामिल हो गए हैं। रो ई मंडल 3234, 3233 और 3231 के पूर्व एवं भावी गवर्नरों का सम्मान किया गया। इस एकदिवसीय सम्मेलन में लगभग 1,800 रोटेरियन और 50 रोटरेक्टर उपस्थित थे। प्रायोजकों की ओर से 42 उत्पाद स्टॉल लगाए गए थे।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

पीआरआईडी ए एस वेंकटेश और रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सराओगी, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, आरआईपीआर सिति सुबैदाह मुस्तफा (मलेशिया की पूर्व गवर्नर), उनके पति कमारुल आरिफ, डिसकॉन मेंटर ए वी एम बालासुब्रमणियन और पीडीजी जे श्रीधर की उपस्थिति में पीडीजी अभिरामी रामनाथन और नल्लाम्माई को रोटरी का 'लेगेसी ऑफ गिविंग अवॉर्ड' प्रदान करते हुए।

Subscribe NOW!

to Rotary News Print Version & e- Version

For the Rotary year 2026 – 2027

Annual Subscription (India)

Print version	e-Version
₹480/- (by Book post)	₹324/-

Print version ☐ **e- Version** ☐

	English	Hindi	Tamil
No. of Copies			

For every new member the pro-rata is ₹40 a month for print version and ₹27 for E-version.

Update the correct mailing address and contact details of your members directly to *Rotary News* every year to receive the magazine. RI does not share member details with us. Intimate language preference (English/Hindi/Tamil) against each member's name.

Payments can be made online at

HDFC Bank, Montieth Road,
Egmore, Chennai.
Rotary News Trust
SB A/c No 50100213133460
IFSC: HDFC0003820

Scan here to pay

Email us the UTR Number, Club Name, President/ Secretary's name, Amount and Date of Transfer.

Rotary Club of ..... RI District .....

Name of the President/Secretary .....

Address .....

.....

.....

City ..... State ..... PIN ☐☐☐☐☐☐

STD Code ..... Phone: Off. ..... Res. .....

Mobile ..... E-mail .....

Cheque/DD No. ..... Dated ..... for Rs. .....

Drawn on .....

in favour of "**ROTARY NEWS TRUST**" is enclosed.

Date: President/Secretary

Mail this form to:
Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
Tamil Nadu, India. Ph: 044 4214 5666, -98400 78074, e-mail: rotarynews@rosaonline.org

रोटरी न्यूज़ की सदस्यता लें

1. रोटरी वर्ष (जुलाई से जून) के लिए सदस्यता।
2. प्रत्येक रोटेरियन के लिए रोटरी पत्रिका की सदस्यता लेना अनिवार्य है।
3. प्रिंट संस्करण के लिए वार्षिक सदस्यता ₹480 और ई-संस्करण के लिए ₹324 प्रति सदस्य है।
4. पूरे वर्ष के लिए सदस्यता निर्धारित प्रपत्र में जुलाई में भेजी जानी चाहिए।
5. जुलाई के बाद शामिल होने वाले लोग शेष रोटरी वर्ष के लिए प्रिंट संस्करण के लिए ₹40 प्रति अंक और ई-संस्करण के लिए ₹27 का भुगतान कर सकते है।
6. *रोटरी न्यूज़* के साथ क्लब का सदस्यता खाता निरंतर चलता रहता है और यह हर साल जून के अंत में समाप्त नहीं होता।
7. *पिन कोड, मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी* सहित उनके पूर्ण डाक पते के साथ सभी सदस्यों के नाम, फॉर्म और सममूल्य पर देय डीडी/चेक के साथ भेजे जाने चाहिए। GPAY या नेटबैंकिंग के माध्यम से ऑनलाइन ट्रांसफर किया जा सकता है। जब आप ऑनलाइन भुगतान करें तो हमारे साथ तुरंत ही व्हाट्सएप (9840078074) या ईमेल (*rotarynews@rosaonline.org*) द्वारा UTR नंबर के साथ आपके क्लब का नाम और भुगतान की गई राशि साझा करें। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो आपका भुगतान हमारे रिकॉर्ड में अपडेट नहीं हो पाएगा और आपका क्लब बकाया दिखाएगा।
8. सदस्य के नाम के साथ भाषा वरीयता *(अंग्रेजी, हिंदी या तमिल)* का उल्लेख किया जाना चाहिए।
9. नियमित रूप से पत्रिका प्राप्त करने के लिए हर साल सीधे तौर पर *रोटरी न्यूज़* के साथ अपने सदस्यों का सही पता और संपर्क विवरण अपडेट करें। *रो ई हमारे साथ सदस्यता विवरण साझा नहीं करता है।*

10. सदस्यों द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उनके नाम उनके क्लब द्वारा भेजी जाने वाली ग्राहक सूची में शामिल हो। यदि आपने भुगतान किया है लेकिन आपका नाम आपके क्लब द्वारा हमें नहीं भेजा गया है तो आपको पत्रिका की प्रति प्राप्त नहीं होगी।
11. क्लबों को हमें सदस्यता की स्थिति में हुए किसी भी संशोधन के बारे में **तुरंत** अपडेट करना चाहिए ताकि हम नए सदस्यों को पत्रिका पहुँचा सकें।
12. यदि आपको अपनी मुद्रित प्रति प्राप्त नहीं हुई है जिसकी आपने सदस्यता ली थी, तो अपने क्लब के अध्यक्ष से जांचें करें की क्या आपके क्लब ने ई-संस्करण का विकल्प चुना है।
13. रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के पास मौजूद सूची के अनुसार हम जितनी संख्या में पत्रिकाएं भेजते है उनके भुगतान के लिए क्लब उत्तरदायी है।
14. क्लब के अदत्त बकाये को क्लब के बकाया के रूप में दिखाया जाएगा। बाद में प्राप्त किसी भी भुगतान को पहले के बकाए के साथ समायोजित किया जाएगा।
15. सदस्यता बकाया वाले क्लबों की जानकारी रो ई के साथ साझा की जाएगी जो उनके निलंबन का कारण बन सकता है।
16. हम नियमित रूप से क्लबों द्वारा भेजी जाने वाली हमारे ग्राहकों की सूची को रो ई के डेटा के साथ सत्यापित करते है ताकि छूटे हुए ग्राहकों का पता लगाया जा सके
17. यदि किसी सदस्य को एक महीने से पत्रिका प्राप्त नहीं हुई है तो हमें तुरंत सूचित करें ताकि हम इस समस्या को हल कर सकें। पत्रिकाओं को रियायती बुक-पोस्ट के माध्यम से भेजा जाता है; इसलिए डाक की ट्रैकिंग संभव नहीं है। यदि आपके क्लब ने हमें आपकी सदस्यता के बारे में जानकारी नहीं दी है तो हो सकता है कि आपको आपकी प्रति प्राप्त ना हो। इसलिए ग्राहकों की सूची में अपने नामांकन का पता लगाने के लिए अपने अध्यक्ष या RNT से संपर्क करें।
18. कुछ क्षेत्रों में डिलीवरी की समस्या हो सकती है। ऐसी स्थिति में क्लब थोक में प्रतियां प्राप्त करने का विकल्प चुन सकते है। अतिरिक्त शुल्क लागू होगा।

अनुपालन नहीं करने वाले क्लबों को रो ई द्वारा निष्कासित किया जाएगा

1 जुलाई, 2022 से रो ई बोर्ड ने अपनी *रोटरी कोड ऑफ पॉलिसीज़* में ऐसे रोटरी क्लबों को निष्कासित करने का प्रावधान शामिल किया है जो रोटरी पत्रिका की सदस्यता नहीं लेते हैं। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर को सूचित करने के बाद इसका अनुपालन न करने वाले क्लबों से संबंधित एक त्रैमासिक रिपोर्ट हमारे कार्यालय द्वारा रो ई को भेजी जा रही है। इन क्लबों को **90 दिन की छूट दी जाती है** उसके बाद भी क्लब इसका अनुपालन नहीं करेंगे तो उन्हें रो ई द्वारा निलंबित कर दिया जाएगा।

180 दिनों तक निलंबित रहने और अनुपालन न करने वाले क्लबों को रो ई को सूचित करने के बाद RNT एक स्मरण पत्र भेजता है जिसमें यह लिखा होता है कि ''बोर्ड अपने विवेक पर इस क्लब को निष्कासित कर सकता है।''

क्लब अध्यक्ष कृपया अपने सदस्यों से *रोटरी न्यूज़* की सदस्यता लेने का आग्रह करें और भारत की रोटरी गतिविधियों की सम्पूर्ण तस्वीर देखें। **रो ई आपके PELS/GELS पाठ्यक्रम में अनिवार्य सदस्यता लेने के बारे में जानकारी शामिल करने की सिफारिश करता है।■**

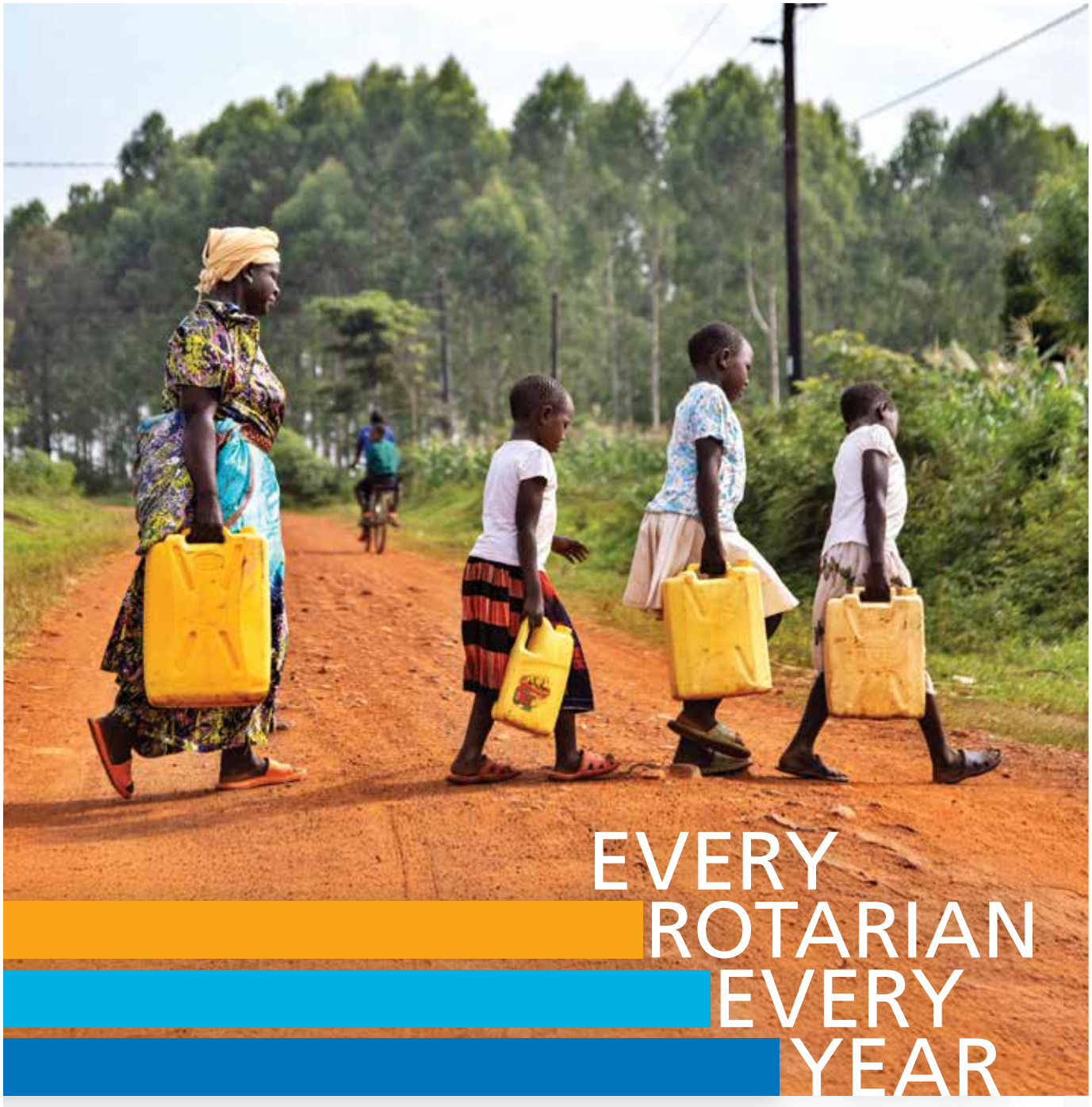

The Rotary Foundation

YOUR GIFT CAN
PROVIDE CLEAN WATER

Water is something we all need to survive, but billions of people live without safe drinking water. A gift to The Rotary Foundation's Annual Fund supports member-led projects that help people access clean water, sanitation, and hygiene. Your donation will fund sustainable, life-changing efforts in the communities that need our help the most.

GIVE TODAY: rotary.org/donate

Rotary

ROTARY CLUB CENTRAL

TRUE OR FALSE

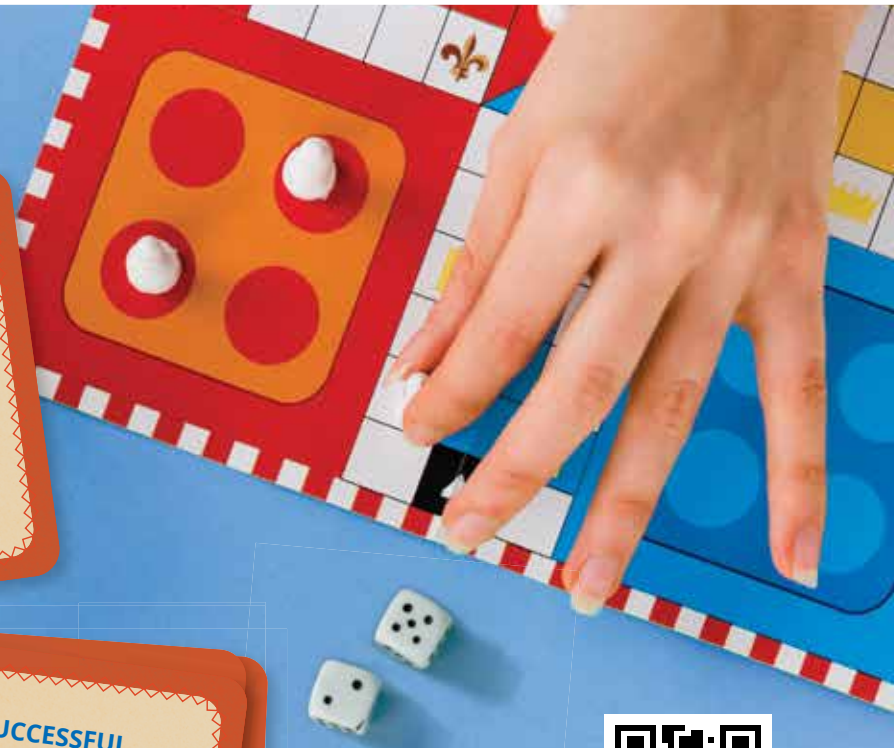

Start setting and tracking your club's goals now:

ROTARY'S MOST SUCCESSFUL CLUBS SET GOALS — AND NOT JUST FOR THE UPCOMING YEAR.

TRUE. When club leaders think about the future and plan beyond their year, they set their club up for long-term success.

ROTARACTORS CAN'T USE ROTARY CLUB CENTRAL.

FALSE. Rotaractors can access it and track goals, too! All you need is a My Rotary account to start planning your future.

CLUB GOALS ARE ONLY THE RESPONSIBILITY OF CLUB LEADERS.

FALSE. Every club member is responsible for their club's success. And as a Rotary member, you too can use Rotary Club Central to view your club's short- and long-term goals.

MORE THAN HALF OF ROTARY CLUBS USE ROTARY CLUB CENTRAL TO TRACK THEIR GOALS.

TRUE. Club leaders use this free tool to set goals and record accomplishments, while tracking goals like membership growth, service activities, and Foundation giving.

NEED HELP?

Head to the Rotary Learning Center and take the Rotary Club Central Resources course!

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी ने अपनी 30वीं वर्षगांठ मनाई

रशीदा भगत

सिम्बायोसिस अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (एसआईयू) में रोटरी के आठवें शांति केंद्र के उद्घाटन की पूर्व संध्या पर, रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी की 30वीं वर्षगांठ समारोह की शुरुआत करते हुए, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने कहा कि किसी ''रोटरी क्लब के 30 साल पूरे होना यह सोचने का एक शानदार अवसर है कि इन 30 वर्षों में क्या-क्या किया गया, हालांकि रोटरी क्लब के लिए 30 साल कोई बहुत बड़ी उम्र नहीं है। आपका क्लब अभी भी बहुत युवा है!''

लेकिन इस ''युवा क्लब'' ने पहले ही दो मंडल गवर्नर और एक रो ई निदेशक दिए हैं, इससे साफ है कि ''यह क्लब बहुत तेजी से और बहुत अच्छी तरह विकसित हुआ है।''

पहले किए गए शानदार कार्यों के लिए उन्हें बधाई देते हुए, उन्होंने कहा, हमें हमेशा भविष्य की ओर देखना चाहिए। हमने जो किया है वह अद्भुत हो सकता है, लेकिन अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम भविष्य में क्या करेंगे। उन्होंने कहा कि यह एक अद्भुत संयोग है कि क्लब की 30वीं वर्षगांठ पुणे में रोटरी के नए शांति केंद्र की स्थापना से ठीक एक दिन पहले आई है। इसका मतलब है कि इस क्लब का भविष्य शांतिप्रिय होगा। और एक अन्य संयोग, जैसा कि पीआरआईडी (महेश) कोटबागी ने कहा,

यह है कि आज हमारी दुनिया कई युद्धों से बंटी हुई है। और इस समय शांति हमारे विश्व की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

भले ही उनके पास अपने अध्यक्षीय वर्ष की योजना बनाने के लिए बहुत कम समय... कुल मिलाकर दो सप्ताह... था, अरेज़ो ने कहा कि उन्होंने शांति को अपने प्रमुख लक्ष्यों में से एक के रूप में चुना है। उन्होंने कहा कि चूँकि हमारे आसपास की दुनिया इतनी तेज़ी से बदल रही थी, इसलिए रोटरी क्लबों को भी बदलना होगा। ''इस बदलाव का मार्गदर्शन करने के लिए, हमें युवाओं की ज़रूरत है, हमें रोटरेक्टरों की ज़रूरत है। क्योंकि, समाज में होने वाले बदलाव हमारे जैसे लोगों के लिए एक रहस्य हैं। हम यह देखने, महसूस करने और समझने के लिए बहुत बूढ़े हो चुके हैं कि समाज किस दिशा में जा रहा है। लेकिन युवा बदलाव को महसूस कर सकते हैं। वे बदलाव को तब देख लेते हैं जब वह शुरू ही हो रहा होता है। वे समाज के बदलाव को भाँप लेते हैं, और जानते हैं कि हमारे क्लबों को कैसे बदलना है। वे जानते हैं कि प्रासंगिक बने रहने और हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए।''

उन्होंने आगे कहा कि शांति के साथ-साथ रोटरेक्ट को विकसित करना, उसे ऊंचाई देना और उसे रोटरी में एकीकृत करना भविष्य के लिए महत्वपूर्ण पहलू हैं। ''मुझे यह भी विश्वास है कि हमारे शांति केंद्र और सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी के बीच यह सहयोग रोटरी के लिए कई शानदार परिणाम लेकर आएगा।''

उन्होंने क्लब के सदस्यों से आग्रह किया कि वे अपने समुदाय के लिए प्रासंगिक बने रहने के लिए शांति पर अधिक काम करें और रोटरेक्ट को रोटरी में एकीकृत करें।

इस कार्यक्रम में अरेज़ो और टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष होल्गर नेक दोनों उपस्थित थे, जिसके दौरान पुणे शहर में एसआईयू के एक परिसर में एक रोटरी शांति स्तंभ स्थापित किया गया।

नेक ने क्लब को उसकी 30 वर्षों की सेवा के लिए बधाई दी और कहा कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि क्लब युवाओं के साथ-साथ रोटरेक्ट के लिए भी अनेक कार्यक्रमों का समर्थन कर रहा है। हॉल में बड़ी संख्या में मौजूद रोटरेकटरों को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि भले ही रोटरी ने 10 साल पहले 'एलिवेट रोटरेक्ट' को अपनाया था, लेकिन रोटरेक्ट को उस स्तर तक लाने के लिए और भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत है जहां हम सभी उसे देखना चाहते हैं। हमें आपकी ज़रूरत है और आपको हमारी; हमें आप रोटरेक्टरों की ज़रूरत है, क्योंकि हम जानना चाहते हैं कि भविष्य के रोटेरियन और टीआरएफ के दानकर्ता कैसे होंगे, और वे संस्थान को दान क्यों देंगे।

उन्होंने रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के सदस्यों से कहा कि उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि आप अपने क्लब में विविधता, समानता और समावेशन का जश्न मना रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि यह दिखाना कितना महत्वपूर्ण है कि रोटरी किस दिशा में आगे बढ़ रही है। और हम यह भी जानते हैं कि जो क्लब और समाज खुले विचारों वाले होते हैं, वही भविष्य में सबसे अधिक सफल होते हैं।

टीआरएफ को दान देने के विषय पर, उन्होंने कहा कि हालांकि छोटे और बड़े दोनों तरह के दानकर्ता संगठन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन पैसा केवल एक हिस्सा है। दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा परियोजनाएं हैं, और बड़े दानकर्ताओं के साथ-साथ हम अब बड़ी परियोजनाओं पर भी ध्यान दे रहे हैं, क्योंकि हमने देखा है कि बड़ी परियोजनाएं अधिक सफल होती हैं, ज्यादा प्रभाव डालती हैं और उन्हें बेहतर तरीके से मापा जा सकता है। और यह बहुत जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि टीआरएफ मापन पर विशेष जोर देता है, क्योंकि हम यह जानना चाहते हैं कि हमारी परियोजनाएं कैसे काम करती हैं और वे वास्तव में कितनी प्रभावी हैं।

नेक ने आगे कहा कि ऐसी किसी चीज़ में पैसा लगाने का कोई मतलब नहीं है जिसका कोई परिणाम ना निकले। वे इस बात से वाकिफ थे कि कभी-कभी वैश्विक अनुदान की आवेदन प्रक्रिया जटिल होती है, लेकिन उसके पीछे की वजह अच्छी होती है। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम सबसे बेहतरीन परियोजनाएं करें, जिसके प्रभाव को हम 5 या 10 साल बाद भी माप सकें, क्योंकि हम रोटेरियनों के पैसे को बर्बाद नहीं करना चाहते हैं।

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, अन्ना मारिया, ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक और सुसाने, पीआरआईडी महेश कोटबागी और रो ई मंडल 3131 के डीजी संतोष मराठे, रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के सदस्यों के साथ।

उन्होंने कहा कि यह किसी चमत्कार से कम नहीं था कि हमें दक्षिण एशिया में इस पहले शांति केंद्र के लिए सिम्बायोसिस जैसा साझेदार मिला, क्योंकि हमारे मूल्यों में बहुत अधिक समानता है। और साथ ही, हम अपने शांति मित्रों को रोटरी में अधिक से अधिक संख्या में एकीकृत करना चाहते हैं। हमें आपकी (पुणे के रोटेरियनों की) प्रतिबद्धता की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे शांति मित्र रोटरी में पूरी तरह एकीकृत हों, क्योंकि ऐसा करने के बहुत सारे अवसर मौजूद हैं।

उन्होंने उपस्थित रोटरी परिवार से आग्रह किया कि वे न केवल उस परिसर में लगाए गए नए शांति स्तंभ का जश्न मनाएं, बल्कि उन प्रतिज्ञाओं को भी याद रखें जो उन सभी ने उसके बगल में स्थापित व्हाइट बोर्ड पर लिखी थीं। शांति स्तंभ एक अद्भुत चीज़ है, लेकिन उसके अकेले के कुछ मैने नहीं है। एक शांति स्तंभ को हमेशा शांति के लिए और भी अधिक प्रयासों की याद दिलाना चाहिए।

न्यासी प्रमुख ने सभी रोटेरियनों से आग्रह किया कि वे 2012 में पूर्व रो ई अध्यक्ष साकुची तनाका की थीम *सेवा के माध्यम से शांति* की भावना को आत्मसात करें। क्योंकि हमारे द्वारा की जाने वाली हर एक सेवा परियोजना शांति के लिए एक प्रतिबद्धता है। मुझे ये रंग-बिरंगे सारस बहुत पसंद हैं, जिन्हें हॉल में लगाया गया है, क्योंकि ये जापानी पीआरआईपी की थीम में शांति के प्रतीक हैं।

लेकिन उन्होंने उन्हें आगाह किया कि शांति के बारे में केवल बात करना ही काफी नहीं है। ''हमें शांति के लिए काम करना होगा, और टीआरएफ द्वारा समर्थित सेवा परियोजनाएं निश्चित रूप से शांति स्थापित करने का एक मार्ग हैं।

टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या ने कहा कि यह भारतीय रोटेरियनों के लिए सौभाग्य और खुशी की बात है कि भारत में एक रोटरी शांति केंद्र स्थापित किया जा रहा है, और वह भी सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में। फरवरी 2024 में टीआरएफ द्वारा 'रुचि की अभिव्यक्ति' जमा करने के लिए आमंत्रित 6 देशों के 17 संस्थानों में से 2 फाइनलिस्ट थे; दक्षिण कोरिया का एक विश्वविद्यालय और दूसरा पुणे का यह संस्थान। काफी मूल्यांकन और विचार के बाद, सिम्बायोसिस को इस शांति केंद्र की मेजबानी के लिए चुना गया।

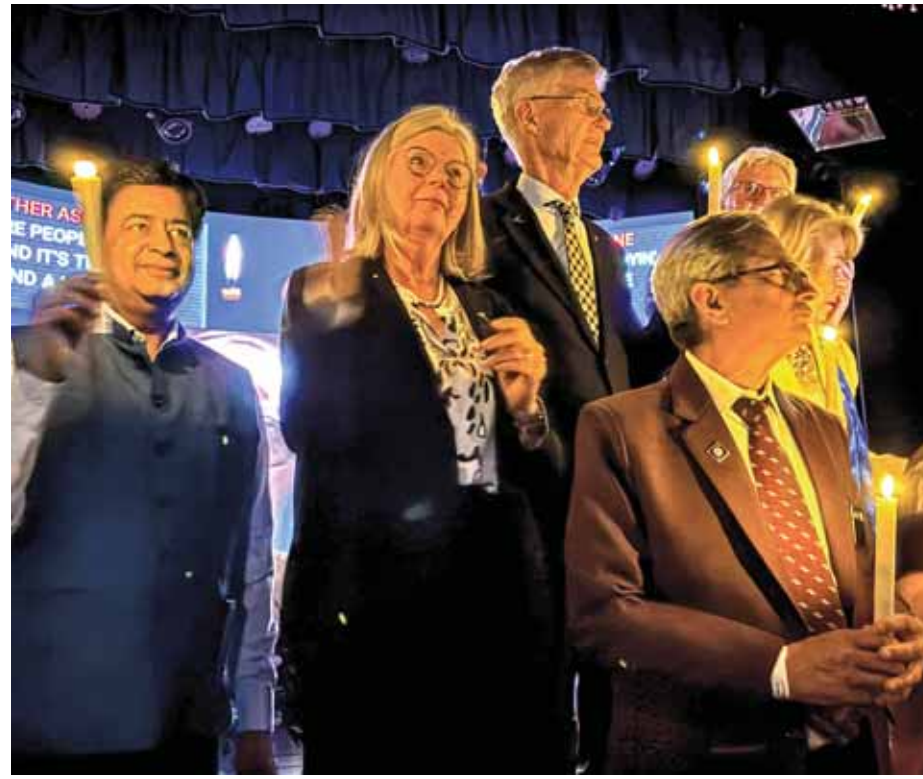

(ऊपर) शांति मशाल प्रज्वलित करते हुए: (बाएँ से) पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, सुसाने और ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक, अन्ना और अध्यक्ष अरेज़ो।

(ऊपर बाएँ) रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक और सिम्बायोसिस के संस्थापक एस बी मुजुमदार 'पीस पोल' का अनावरण करते हुए। पीआरआईडी महेश कोटबागी सबसे बाईं ओर हैं। (ऊपर) अरेज़ो और अन्ना मारिया "पीस बोर्ड" पर लिखते हुए। नेक और कोटबागी भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं। (नीचे, बाएँ से) पूर्व ट्रस्टी गुलाम वहानवटी और पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन, ए एस वेंकटेश तथा अनिरुद्धा रायचौधरी।

उन्होंने रो ई मंडल 3131 और 3141 के रोटेरियनों को बधाई दी जो इस केंद्र की मेजबानी और सह-मेजबानी करेंगे। चूंकि यह संस्थान पुणे, मंडल 3131, में स्थित है, इसलिए यह इस मंडल के रोटेरियनों की प्राथमिक जिम्मेदारी होगी कि वे पूरे एशिया से आने वाले शांति विद्वानों का सहयोग, मित्रता और सहिष्णुता की भावना के साथ स्वागत करें, और उन्हें घर जैसा महसूस कराएं।

सिम्बायोसिस के संस्थापक डॉ मजूमदार की इस टिप्पणी का हवाला देते हुए कि पहले वे विदेशी छात्रों को शहर में संघर्ष, असहिष्णुता और कई अन्य समस्याओं का सामना करते हुए देखते थे, उन्होंने कहा कि इससे यह साबित होता है कि शांति की स्थापना का वास्तविक तरीका मजियो और जीने दोफ की भावना रखने में है।

उन्होंने रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के सदस्यों को सेवा के 30 साल पूरे करने के लिए, और डीजी संतोष को पिछले सात महीनों में आपके मंडल द्वारा किए गए जबरदस्त काम के लिए बधाई दी।

पीआरआईडी महेश कोटबागी, जो रोटरी कलब क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी के सदस्य हैं, ने कहा कि हम सभी अत्यंत कठिन समय में जी रहे हैं और आज, मैं बहुत अधिक अस्थिरता और ध्रुवीकरण देखता हूँ। चाहे वह यूक्रेन और रूस हो, सूडान, म्यांमार, हैती या वेनेजुएला हो, सभी को देखकर बहुत दुख होता है।

अपने परिवार के साथ अपने देश से भागने की कोशिश के दौरान समुद्र में डूबे एक छोटे सीरियाई लड़के की उस सर्वव्यापी तस्वीर ने कुछ साल पहले दुनिया की अंतरात्मा को झकझोर दिया था। ''ये केवल भू-राजनीतिक समस्याएं नहीं हैं। ये विश्वास, सद्भाव और अवसर की विफलताएं हैं।''

जैसा कि उनका क्लब अपने अस्तित्व के 30 वर्षों का उत्सव मना रहा है, हम उस विरासत का सम्मान करते हैं कि हमने हमेशा सभी प्रकार के मुद्दों पर संवाद बनाए रखा है।

सिम्बायोसिस के संस्थापक एस पी मजूमदार ने कहा कि एसयूआई रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा अपने आठवें शांति केंद्र की स्थापना के लिए सिम्बायोसिस को चुने जाने पर खुश और आभारी है। उन्होंने बताया कि उन्होंने वर्षों तक व्यक्तिगत रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि दुनिया भर से विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए एसयूआई आने वाले विदेशी छात्र पुणे और भारत में स्वागतयोग्य महसूस करें। उन्होंने विश्वास जताया कि यह शांति केंद्र ऐसे विद्वान तैयार करेगा जो संघर्ष समाधान पर गंभीरता से काम करेंगे।

रो ई मंडल 3131 का परिचय देते हुए, इसके डीजी संतोष मराठे ने कहा कि यह शीर्ष प्रदर्शन करने वाले मंडलों में से एक है, चाहे वह रोटरेक्ट और इंटरेक्ट सदस्यता की वृद्धि में हो या सेवा परियोजनाओं में। अभी, हमारे क्लब 3,000 विभिन्न सेवा परियोजनाएं कर रहे हैं, और हर साल हमारे द्वारा की जाने वाली वैश्विक अनुदान परियोजनाओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है। यह केवल अनुदानों की संख्या या उनकी राशि के बारे में नहीं है; हमारा प्रयास यह है कि हमारे 100 प्रतिशत क्लब वैशिवक अनुदानों में शामिल हों... चाहे वह फंडिंग ढूंढने में हो, कार्यान्वयन भागीदार बनने में या परियोजनाओं के निष्पादन में भूमिका निभाने में। हम शांति पर भी काम कर रहे है।

सभा को संबोधित करते हुए, रो ई मंडल 3131 के डीआरआर द्विजेश नाशिककर ने कहा कि मंडल के रोटरेक्टर ज़ोन 7 में लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। हमारे पास 111 रोटरेक्ट क्लब और 2,300 से अधिक रोटरेक्टर हैं। इस वर्ष, उनका प्राथमिक ध्यान व्यावसायिक विकास पर था; वे एक बड़ा सीपीआर प्रशिक्षण भी आयोजित कर रहे है जो कई लोगों की जान बचा सकता है। उनकी 'दृष्टि' परियोजना *रोटरेक्ट न्यूज़* में प्रकाशित हुई थी, जो उनके लिए गर्व की बात थी, और वे अमेज़न के सामुदायिक भागीदार बनने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने जा रहे है।

बाएँ से: अन्ना और अध्यक्ष अरेज़ो, ट्रस्टी चेयर नेक, ट्रस्टी भरत पांड्या, सुज़ैन, ट्रस्टी-इलेक्ट वेंकटेश और रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सरावगी।

एसआईयू के स्वास्थ्य और जैव चिकित्सा विज्ञान संकाय के डीन डॉ राजीव येरवडेकर ने रोटरी और पीआरआईडी कोटबागी को एसआईयू द्वारा प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं, विशेष रूप से गरीब मरीजों के लिए डायलिसिस केंद्र, को हमेशा समर्थन देने के लिए धन्यवाद दिया। 900 बिस्तरों वाला एसआईयू अस्पताल और अनुसंधान केंद्र आसपास के गांवों को मुफ्त में उच्च गुणवत्ता वाली नैदानिक सेवाएं प्रदान करता है।

एसआईयू की प्रो-चांसलर डॉ विद्या येरवडेकर ने रोटरी के साथ विश्वविद्यालय की साझेदारी का स्वागत किया। क्लब अध्यक्ष सुश्रुत सरदेसाई ने कहा कि क्लब के सदस्यों के लिए 30 वर्ष पूरे होना केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन, कृतज्ञता और गर्व के क्षण हैं।

चित्र: रशीदा भगत
एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

मुंबई के एक स्कूल में कंप्यूटर लैब

टीम रोटरी न्यूज़

नई कंप्यूटर लैब में RID 3142 के DG हर्ष मकोल (दाएं से दूसरे) और PDG चंद्रशेखर कोलवेकर (बाएं)।

27 लैपटॉप और अन्य उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर लैब का उद्घाटन DG हर्ष मकोल ने मातोश्री रख्माबाई गायकवाड़ विद्यालय, कल्याण में किया। आरसी उल्हासनगर (RID 3142) द्वारा *प्रोजेक्ट सक्षम* के तहत स्थापित यह सुविधा 800 से अधिक छात्रों को लाभ पहुंचाएगी।

एक अन्य पहल के तहत, क्लब ने स्कूल में रोटरी यूथ प्रोग्राम ऑफ एनरिचमेंट (RYPEN) का आयोजन किया, जिसमें करियर मार्गदर्शन, एलपीजी सुरक्षा जागरूकता और वेलनेस पर सत्र आयोजित किए गए। इसमें डिजिटल सशक्तिकरण और मूल्य शिक्षा जैसे विषय भी शामिल थे, जो जिम्मेदार नागरिक बनाने के रोटरी के संकल्प को दर्शाते हैं।

प्रोजेक्ट चेयरमैन गुल अडवानी को क्लब अध्यक्ष राजू उत्तमानी और सचिव हरीश शाहदपुरी का सहयोग मिला। PDG चंद्रशेखर कोलवेकर भी उपस्थित थे। ■

60,000 विद्यार्थियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता समर्थन

किरण ज़ेहरा

हैदराबाद ईस्ट के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3150 ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और यूनिपैड्स फाउंडेशन के साथ साझेदारी में *प्रोजेक्ट शक्ति* की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य मासिक धर्म स्वच्छता को बढ़ावा देना और तेलंगाना भर में छात्राओं की शिक्षा का समर्थन करना है।

₹2.5 करोड़ की लागत वाली इस परियोजना के तहत राज्य भर के 2,000 स्कूलों और कॉलेजों में लगभग 60,000 लड़कियों को पुन: प्रयोज्य सैनिटरी नैपकिन किट वितरित किए गए। परियोजना के पहले चरण का उद्घाटन वीरनारी चकाली इलम्मा महिला विश्वविद्यालय में किया गया, जहाँ 7,000 छात्राओं को सैनिटरी पैड किट प्रदान किए गए। इस वितरण कार्यक्रम में हैदराबाद मंडल की कलेक्टर हरि चंदना दासारी, डीजी राम प्रसाद और विश्वविद्यालय के कुलपति सूर्य धनुंजय उपस्थित थे।

कार्यक्रम में बोलते हुए, क्लब अध्यक्ष गोविंद पुट्टा ने कहा कि एमएचएम पहल केवल वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य दीर्घकालिक प्रभाव पर केंद्रित है। उन्होंने कहा, *प्रोजेक्ट शक्ति* गरिमा, शिक्षा और स्थिरता से जुड़ा है। पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड प्रदान करने के साथ-साथ उचित प्रशिक्षण देकर हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की कमी के कारण कोई भी छात्रा स्कूल से वंचित न रहे। यह उन्हें आत्मविश्वास के साथ अपनी शिक्षा जारी रखने में सक्षम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उचित देखभाल के साथ प्रत्येक किट 12-16 महीनों तक उपयोग के लिए डिज़ाइन की गई है, जो डिस्पोजेबल सैनिटरी उत्पादों का एक किफायती और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प प्रदान करती है। वितरण के साथ-साथ, कार्यक्रम में पैड के उपयोग, धुलाई, सुखाने और भंडारण पर जागरूकता सत्रों और व्यावहारिक प्रशिक्षण भी शामिल किया गया है।

क्लब इस पहल को लागू करने के लिए सरकारी संस्थाओं, स्कूलों और स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों के साथ समन्वय कर रहा है, जबकि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपने सी एस आर कार्यक्रम के माध्यम से इस पहल का समर्थन कर रहा है। यूनिपैड्स फाउंडेशन उत्पाद और प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध करा रहा है।

सरकारी स्कूल की कक्षा 9 की छात्रा और *प्रोजेक्ट शक्ति* की लाभार्थी रेखा, जिसे लॉन्च के दौरान किट मिली, ने कहा, कभी-कभी हमें मासिक धर्म के दौरान स्कूल जाना छूट जाता है, क्योंकि हमारे पास उचित सुविधाएं या उत्पाद नहीं होते। ये पुन: उपयोग योग्य पैड हमारी बहुत मदद करेंगे, और प्रशिक्षण ने हमें इन्हें सुरक्षित तरीके से इस्तेमाल करना सिखाया है। अब मुझे पहले से ज़्यादा आत्मविश्वास महसूस हो रहा है।

यह परियोजना मासिक धर्म से संबंधित अनुपस्थिति को कम करने और एकबार उपयोग होने वाले सैनिटरी कचरे को घटाने का भी लक्ष्य रखती है। इसकी प्रगति की निगरानी वितरण के आंकड़ों, उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया और समय-समय पर किए जाने वाले सर्वेक्षणों के माध्यम से की जाएगी, ताकि छात्रों की उपस्थिति और उनके समग्र स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव का आकलन किया जा सके। ■

डीजी एस वी राम प्रसाद (बाएँ से दूसरे), रोटरी क्लब हैदराबाद ईस्ट के सदस्यों और अध्यक्ष गोविंद पुट्टा (दाएँ से तीसरे) के साथ, सेनेटरी पैड किट वितरण कार्यक्रम में।

Rotary PEOPLE OF ACTION

खेलों के माध्यम से रोटरी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना

रशीदा भगत

रोटरी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए, रो ई मंडल 3212 के नेतृत्व ने एक अभिनव दृष्टिकोण अपनाया - महिला रोटेरियनों तथा रोटेरियनों की पत्नियों और बेटियों के लिए आयोजित एक विशेष थ्रोबॉल टूर्नामेंट के माध्यम से अधिक से अधिक महिलाओं को जोड़ना और उत्साहित करना।

'शेरोज़ थ्रोबॉल टूर्नामेंट' नामक इस पहल के माध्यम से, जो इस अनूठी खेल पहल से जुड़ी थी, मंडल भर में सामाजिक, सांस्कृतिक और संगठनात्मक रूप से एक शक्तिशाली प्रभाव पैदा हुआ है।

''रो ई के डीईआई (विविधता, समानता और समावेशन) के दृष्टिकोण को साकार करते हुए, हमारे डीजी दिनेश बाबू ने एक ऐसे रोटरी वर्ष की कल्पना की, जिसमें रोटरी में महिलाओं की भागीदारी न केवल बढ़ेगी, बल्कि वे सेवा परियोजनाओं सहित हमारी गतिविधियों में सार्थक योगदानकर्ता भी बनेंगी। रोटरी की सभी गतिविधियों में महिलाओं के महत्व को स्वीकार करते हुए और उन्हें शामिल करने के प्रतीक के रूप में, थ्रोबॉल खेलों में डीजी और सहायक गवर्नरों की आधिकारिक पोशाक गुलाबी रंग में तैयार की गई थी, जिससे यह स्पष्ट संदेश गया कि मंडल के सभी प्रयासों में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभाएंगी।'' यह बात रो ई मंडल 3212 के रोटरी समाचार समन्वयक एम बालमुरुगन ने कही।

महिलाओं के लिए थ्रोबॉल टूर्नामेंट का आयोजन रोटरी क्लब तूतीकोरिन ट्रेलब्लेज़र्स की सदस्य मलारविझी द्वारा किया गया। लेकिन मंडल में रोटरी परिवार की महिलाओं को इस आयोजन में दिल से शामिल करना आसान नहीं था। वे याद करते हैं कि जब अगस्त 2025 में कन्याकुमारी मंडल के क्लबों

रोटरी क्लब टूटीकोरिन ट्रेलब्लेज़र्स के विजेता ट्रॉफी के साथ।

उत्साह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था; कुछ टीमों ने प्रशिक्षण के लिए पेशेवर कोच भी नियुक्त किए थे।

के लिए पहले टूर्नामेंट की घोषणा की गई थी, तो महिलाओं को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करना एक चुनौती था। क्लब नेताओं से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया और उनसे आग्रह किया गया कि वे रोटेरियनों के परिवार की महिला सदस्यों में रुचि और आत्मविश्वास विकसित करें, ताकि वे इसमें भाग ले सकें। सभी की सुविधा के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं लिया गया और मैच केवल सप्ताहांत में आयोजित किए गए, ताकि महिलाओं की विभिन्न जिम्मेदारियों को ध्यान में रखा जा सके।

डीजी की पत्नी, रम्या दिनेश, शुरुआत से ही इस परियोजना को सफल बनाने में व्यक्तिगत रूप से जुड़ी रहीं। बालमुरुगन ने कहा कि पहले टूर्नामेंट में दिखाया गया उत्साह सराहनीय था। ''प्रतिभागियों ने नियमों का पूरी निष्ठा से पालन किया, ऊर्जा से भरपूर प्रतिस्पर्धा की और खेल भावना को अपनाया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मित्रता की भावना ने जीत पर ध्यान केंद्रित करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।''

परिणाम आश्चर्यजनक थे; जो महिलाएं वर्षों से एक ही शहर में रह रही थीं, लेकिन कभी आपस में बातचीत नहीं की थी, उन्होंने इस टूर्नामेंट के माध्यम से सार्थक संबंध बनाए। खेल का मैदान आपसी मेलजोल का मंच बन गया।

सकारात्मक प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर, मुख्य टीम ने इस कार्यक्रम का विस्तार विरुधुनगर, रामनाथपुरम, तिरुनेलवेली और तूतुक्कुडी सहित सात राजस्व मंडलों तक किया और 27 रोटरी क्लबों की 12 से 60 वर्ष आयु वर्ग की 200 महिलाओं ने इसमें भाग लिया। उन्होंने कहा, ''उत्साह स्पष्ट था; कुछ टीमों ने प्रशिक्षण के लिए पेशेवर प्रशिक्षकों की भी व्यवस्था की। विशेष रूप से डिज़ाइन की गई टीम टी-शर्ट्स ने राष्ट्रीय स्तर के खेल आयोजनों की याद दिलाते हुए एक जीवंत और प्रतिस्पर्धी माहौल बनाया।''

इस टूर्नामेंट की एक खास बात यह रही कि यह जल्द ही एक उत्सव जैसा बन गया, जहाँ परिवार के सदस्य खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए पहुँचने लगे। पति, पिता और बच्चे उनका हौसला बढ़ाते रहे, जिससे एक उत्सवपूर्ण माहौल बन गया।

बालमुरुगन ने आगे कहा कि टूर्नामेंट के ग्रैंड फाइनल में रोटरी क्लब ईस्ट कोस्ट रामनाद का मुकाबला रोटरी क्लब तूतीकोरिन ट्रेलब्लेज़र्स

से हुआ, जिसमें बाद वाली टीम ट्रॉफी जीतकर विजेता बनी।

लेकिन इस खेल आयोजन का प्रभाव स्टेडियम तक ही सीमित नहीं था; महिलाओं को न केवल रोटरी से जुड़ाव का एहसास हुआ, बल्कि उनमें से कई ने यह भी महसूस किया कि इस आयोजन की बदौलत वे उस खेल में फिर से लौट आई हैं, जिसे वे कभी बहुत पसंद करती थीं।

डीजी दिनेश बाबू ने कहा कि बने संबंधों और विकसित हुई मित्रताओं के कारण इसका सकारात्मक प्रभाव आगे भी दिखाई दिया। सिवकासी पायरोसिटी टीम के सदस्यों ने मिलकर एक स्थानीय स्कूल के लिए जल शुद्धिकरण इकाई प्रायोजित की, जो यह दर्शाता है कि किस तरह आपसी सहयोग सेवा में बदल सकता है। कई क्लबों में महिला प्रतिभागियों ने आगे बढ़कर औपचारिक रूप से रोटरी की सदस्यता भी ग्रहण की।

रोटरी परिवार के भीतर महिलाओं के बीच मित्रता को मजबूत करने के अपने प्राथमिक उद्देश्य की प्राप्ति पर खुशी व्यक्त करते हुए, उन्होंने आशा जताई की कि भविष्य के मंडल नेता इस पहल को जारी रखेंगे और इसकी सफलता को आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा, हम नवोन्मेषी नेतृत्व और नए विचारों के माध्यम से रोटरी को मजबूत और विस्तारित कर सकते हैं। यह टूर्नामेंट इस बात का प्रमाण है कि खेल सदस्यता वृद्धि, सहभागिता और सामुदायिक प्रभाव के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कैसे काम कर सकता है।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह एक आंदोलन की शुरुआत होगी - जो महिलाओं की शक्ति का जश्न मनाएगा, एकता को बढ़ावा देगा और रोटरी की मित्रता और सेवा की भावना को और मजबूत करेगा। ■

डीजी जे दिनेश बाबू और उनकी पत्नी रम्याप्रिया युवा खिलाड़ियों से संवाद करते हुए।

शोक सन्देश

उदारता और सेवा से भरा जीवन

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3212 के पूर्व गवर्नर वी. आर. मुथु का 4 मार्च, 2026 को निधन हो गया। उन्होंने उदारता, नेतृत्व और टीआरएफ के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की एक अमिट विरासत छोड़ी है। 1981 से रोटरी क्लब विरुधुनगर के सदस्य रहे वे 2021 में अपने मंडल से पहले A K S सदस्य बने। ज़ोन 5 (2025-28) के लिए एंड पोलियो नाउ कोऑर्डिनेटर के रूप में उन्होंने समर्पण के साथ रोटरी के वैश्विक मिशन को आगे बढ़ाया। पॉल हैरिस 711 क्लब के सदस्य के रूप में उन्होंने रोटरी की ऐतिहासिक जड़ों को संरक्षित करने में भी योगदान दिया। कई लोगों के लिए वे सिर्फ एक नेता ही नहीं, बल्कि एक मित्र और मार्गदर्शक भी थे।

उन्हें प्यार से 'मुत्तु अन्नाची' कहा जाता था और वे अपनी गर्मजोशी और विनम्रता के लिए व्यापक रूप से लोकप्रिय थे। 2022-23 में डीजी के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, उनके मंडल ने टीआरएफ में उल्लेखनीय रूप से 800,000 डॉलर का योगदान दिया। उनके द्वारा शुरू की गई 10 मंडल परियोजनाएं मुख्य रूप से लड़कियों और युवाओं के उत्थान पर केंद्रित थीं, जिससे एक सार्थक और मापने योग्य प्रभाव पड़ा।

प्रोजेक्ट प्रेम कुमार, यादुमानवल और *प्रोजेक्ट पंच* जैसी पहलों के माध्यम से, पीडीजी मुत्तु ने सैकड़ों ग्रामीण लड़कियों को आत्मविश्वास, संवाद कौशल और जीवन के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की। उनके आरवाईएलए कार्यक्रमों ने युवाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

पी डी जी वि आर मुत्तु

वी वी वी एंड संस एडिबल ऑयल्स के प्रबंध निदेशक के रूप में, उन्होंने इधयम ब्रांड को पूरे भारत के घरों और वैश्विक भारतीय समुदाय के बीच स्वस्थ खाना पकाने का पर्याय बना दिया।

रोटरी न्यूज़ में हमें उनकी गर्मजोशी और उदारता का प्रत्यक्ष अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे पत्रिका के प्रबल समर्थक थे - अच्छी तरह से लिखी गई कहानियों की प्रशंसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे और विज्ञापनों के माध्यम से अपना समर्थन देने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

गतिशीलता का उपहार

टीम रोटरी न्यूज़

बेंगलुरु में आयोजित जयपुर मेगा लिम्ब कैंप में आने वाले कई लोगों के लिए, अनुभव अनिश्चितता के साथ शुरू होता है। यह यात्रा अक्सर वर्षों की शारीरिक अक्षमता, आर्थिक कठिनाई और मौन स्वीकृति से चिह्नित होती है। जब वे वहां से निकलते हैं, तब तक कुछ लोग फिर से चलने लगते हैं, रोटरी बैंगलोर पीन्या, रो ई मंडल 3192 की अध्यक्ष मीनाक्षी सारथ कहती हैं, जो लगभग तीन दशकों से इस पहल का आयोजन कर रही हैं।

अब अपने 28वें वर्ष में प्रवेश कर चुका यह वार्षिक शिविर उन लोगों के लिए एक निरंतर सहायता केंद्र बन गया है, जिन्हें अन्यथा सहायक देखभाल तक पहुंच नहीं मिल पाती। लाभार्थी, जो मुख्यतः आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं, दुर्घटनाओं, जन्मजात स्थितियों तथा मधुमेह से संबंधित जटिलताओं के कारण अंगों के नुकसान के लिए सहायता प्राप्त करते हैं। इस वर्ष शिविर की लागत ₹1 करोड़ रही, जो अनेक दान और व्यक्तिगत योगदानों से जुटाई गई, और इससे 2,400 से अधिक लोग लाभान्वित हुए।

रोटरी क्लब बेंगलुरु पीन्या के मेगा लिम्ब कैंप में एलएन4 आर्म लगने के बाद एक छोटा लड़का लिखने की कोशिश करता हुआ।

पहली बार बिना सहारे खड़ा होता एक बच्चा, या फिर दोबारा कमाने की ओर कदम बढ़ाता एक दिहाड़ी मजदूर – ये पल दिल में बस जाते हैं।

मीनाक्षी सारथ

अध्यक्ष, रोटरी क्लब बेंगलुरु पीन्या

इस शिविर में, जयपुर के कृत्रिम अंग तकनीशियन फिजियोथेरेपिस्ट और रोटरी स्वयंसेवकों मिलकर मुफ्त में कृत्रिम अंग, कैलिपर्स, बैसाखियां और एलएन4 कृत्रिम हाथ उपलब्ध कराते हैं। वे कहती हैं, काम भले ही चिकित्सकीय हो, लेकिन इसके परिणाम अक्सर बेहद व्यक्तिगत होते हैं। पहली बार बिना सहारे खड़ा होने वाला एक बच्चा, या फिर रोज़ कमाने वाला कोई व्यक्ति जो दोबारा कमाई की ओर कदम बढ़ाता है; ये पल हमेशा याद रहते हैं। ये हमें एक ऐसा संतोष देते हैं, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

पिछले कुछ वर्षों में, यह शिविर चिकित्सा पेशेवरों, स्वयंसेवकों, दानदाताओं और सहयोगी संगठनों के बीच एक सतत सहयोग के रूप में विकसित हुआ है। परियोजना के अध्यक्ष गौतम चंद नाहर इसे एक गहराई से मानवीय अनुभव बताते हैं, जिसका वास्तविक प्रभाव गतिशीलता और गरिमा की पुनःप्राप्ति के क्षणों में निहित है।

इस परियोजना का नेतृत्व कर रहे वसंत कुमार कहते हैं, ''लाभार्थियों के लिए यह बदलाव तुरंत दिखाई देता है। मुझे एक लाभार्थी याद है, जिसने मधुमेह के कारण अपना एक अंग खो दिया था और कहा था, ‡मुझे लगा था कि मेरा जीवन समाप्त हो गया है। आज ऐसा लगता है जैसे यह फिर से शुरू हो गया है।फ एक ऐसी स्वास्थ्य प्रणाली में, जहां कृत्रिम अंग सहायता की उपलब्धता सीमित है, यह शिविर एक सरल लेकिन शक्तिशाली चीज़ प्रदान करता है: फिर से चलने और आत्मनिर्भरता हासिल करने की क्षमता।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

बिग बैंग ने दिया विज्ञान को बढ़ावा

वी मुत्तुकुमारन

क्या विज्ञान मानव जाति के लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शक है, जिससे वह खोज कर सके, अन्य ग्रहों पर कदम रख सके और इस प्रकार आकाशगंगाओं में मानव आवास का विस्तार कर सके? क्या अनगिनत आविष्कार, खोजें और नवाचार पृथ्वी को हम सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाते हैं? इन सभी अस्तित्वगत प्रश्नों और अन्य कई अन्य सवालों के जवाब भारत भर के 130 स्कूलों के लगभग 600 छात्रों (कक्षा 6-12) ने, 150 टीमों में विभाजित होकर, *बिग बैंग 3.0* में प्रोजेक्ट मॉडल, प्रयोगों, डिज़ाइन चार्ट और तकनीकी प्रोटोटाइप के माध्यम से शानदार तरीके से प्रस्तुत किए।

रोटरी क्लब कोयंबटूर वेस्ट (रो ई मंडल 3206) के प्रमुख कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियों के इस तीसरे संस्करण में 22 राज्यों के स्कूली टीमों से 712 परियोजना प्रस्तुतियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें प्रत्येक टीम में चार छात्र और एक मार्गदर्शक शामिल थे। प्रोजेक्ट बिग बैंग के संयोजक आर नवनीतकृष्णन ने बताया, पहले चरण की जांच में, भारत, श्रीलंका, दक्षिण कोरिया और अमेरिका के 20 सदस्यीय जूरी ने कोयंबटूर के नेशनल मॉडल स्कूलों में जनवरी में दो दिनों तक आयोजित *बिग बैंग 3.0* के लिए 157 टीमों का चयन किया। प्रदर्शनी के दौरान, उद्योग, शिक्षा जगत, सरकार और अनुसंधान निकायों से गठित 10 सदस्यीय विशेषज्ञ जूरी ने प्रत्येक स्टॉल का दौरा किया और छात्रों से बातचीत कर उनकी परियोजना अवधारणाओं और नवीन विचारों को समझा।

पिछले तीन वर्षों में, 1200 स्कूलों के 6000 विद्यार्थियों ने अपने वैज्ञानिक प्रोजेक्टों की ऑनलाइन प्रस्तुति दी है, जिनमें से 350 स्कूलों की 450 टीमों को बिग बैंग प्रदर्शनी के लिए चुना गया, उन्होंने कहा। क्लब के अध्यक्ष सी.वी. देवदास ने आगे कहा, हमने 2024 में एक साधारण शुरुआत की थी, जब हमारे क्लब की बैठक में तत्कालीन अध्यक्ष दुरई नारायणसामी ने एक ऐसे स्कूल कार्यक्रम के आयोजन का निर्णय लिया, जो छात्रों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को प्रोत्साहित करे। इसी सामूहिक निर्णय से देश भर के स्कूलों के लिए बिग बैंग विज्ञान प्रदर्शनी का

बाएँ: विद्यार्थियों द्वारा वैज्ञानिक परियोजनाओं का प्रदर्शन।

विचार सामने आया। पहले संस्करण में तमिलनाडु से 120 ऑनलाइन प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए गए थे, और अंत में कोयंबटूर के एक स्कूल में 80 टीमों ने अपनी वैज्ञानिक अवधारणाओं का प्रदर्शन किया।

हालांकि, दूसरे संस्करण (2025) में *बिग बैंग* का दायरा दक्षिण भारत में 120 परियोजना टीमों तक फैल गया, जिनमें महाराष्ट्र की एक टीम भी शामिल थी, जिनका चयन 300 से अधिक ऑनलाइन आवेदनों में से किया गया था। पहले दो बिग बैंग एक दिवसीय कार्यक्रम थे, लेकिन बाद में अच्छी प्रतिक्रिया के कारण इन्हें दो दिवसीय प्रदर्शनियों में बदल दिया गया, क्लब अध्यक्ष ने कहा।

कार्यक्रम का नाम 'बिग बैंग' और इसका टैगलाइन द ग्रेट रोटरी इनोवेशन चैलेंज पीडीजी पाथी ए वी द्वारा दिया गया था।

ऊपर: बाएँ से-रोटरी क्लब कोयंबटूर वेस्ट के अध्यक्ष सी वी देवदास, वेल्थ-आई (यूएई) के सीईओ विग्नेश विजयकुमार, मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) राजीव कृष्णन, पूर्व एजी सी के साशी कुमार, पूर्व अध्यक्ष दुरई नारायणसामी और आशा देवदास।

बिग बैंग के नॉलेज पार्टनर, आईएक्सप्लोर फाउंडेशन के निदेशक नवनीदकृष्णन ने कहा, प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों के लिए यह आवश्यक है कि उनके पास ऐसे नवाचारी विचार हों, जो समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले समाधान प्रस्तुत करें और यह भी दर्शाएं कि उनके उत्पाद (या सेवाएं) संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में कैसे योगदान देंगे। परियोजना सचिव डी गौतम ने कहा, हमारी प्रदर्शनी ने तमिलनाडु के सरकारी स्कूलों पर गहरा प्रभाव डाला है, क्योंकि उनमें से कुछ को सर्वश्रेष्ठ 20 प्रदर्शन करने वाली टीमों की श्रेणी में चुना गया है, जिसमें ₹2,000 का नकद पुरस्कार और एक ट्रॉफी शामिल है।

इंडोनेशिया की यात्रा

दिल्ली के आर्मी पब्लिक स्कूल ने जीत हासिल की और उसकी टीम अगस्त 2026 में IEEE जूनियर आइंस्टीन प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इंडोनेशिया जाएगी। नवनीतकृष्णन ने बताया, उनकी उड़ान, आवास और अन्य व्यवस्थाओं का खर्च हमारे क्लब द्वारा ₹5 लाख के यात्रा अनुदान के माध्यम से वहन किया जाएगा। इसके अलावा, उन्हें ₹40,000 का नकद पुरस्कार भी मिलेगा।

पिछले साल, विजेता टीम को स्कूली छात्रों के लिए आयोजित इस वैश्विक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ₹3.5 लाख की वित्तीय सहायता के

साथ मलेशिया भेजा गया था, जहाँ उन्होंने प्रथम पुरस्कार जीता।

आर्मी पब्लिक स्कूल, जम्मू की टीम की मेंटर ऋचा पठानिया ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा, कई युवा प्रतिभाओं को रचनात्मक रूप से सोचते हुए और वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए कड़ी मेहनत करते देखना वास्तव में प्रेरणादायक था। जजों के साथ आयोजित मेंटरिंग सत्रों ने छात्रों को अपने नवोन्मेषी विचारों और प्रस्तुति कौशल को और विकसित करने में मदद की।

तमिलनाडु के अरुप्पुकोट्टई स्थित देवनगर गर्ल्स हाई स्कूल की कक्षा 10 की छात्रा टी. दिव्यादर्शन ने *बिग बैंग प्रोजेक्ट* के अपने अनुभव से बेहद खुशी व्यक्त करते हुए कहा, मुझे अपनी टीम के प्रोजेक्ट को प्रस्तुत करने और अन्य राज्यों के छात्रों के साथ बातचीत करने में बहुत आनंद आया। उत्तर भारत की टीमों के साथ अपने अनुभव साझा करके हमने कई नए विचार सीखे।

दिल्ली के बलवंतराय मेहता विद्या भवन में पढ़ने वाले देवेश गुप्ता की माता अनुष्का ने एक अभिभावक के रूप में कहा, जब तक मेरे बेटे ने आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत नहीं किए, तब तक मुझे उसके ज्ञान और रचनात्मकता का एहसास नहीं हुआ था। इससे मुझे बहुत गर्व हुआ। विज्ञान मेले के अखिल भारतीय प्रभाव को देखते हुए, देवदास ने कहा, हमारे क्लब को अगले वर्ष के आयोजन के लिए 1,000 से अधिक परियोजना प्रस्तुतियाँ मिलने की उम्मीद है, जिससे उत्तर भारत के कई छात्र आकर्षित हो सकते हैं। पिछले आयोजन में, 40 प्रतिशत परियोजना टीमें तमिलनाडु से थीं, जबकि बाकी भारत के अन्य हिस्सों से थीं, कुछ तो कश्मीर से भी आए थे। ■

RID 3206 चेल्ला राघवेंद्रन और पीडीजी ए वी पाथी एक प्रदर्शन स्टॉल पर।

पिंक ऑटो महिलाओं को सशक्त बनाता है

टीम रोटरी न्यूज़

बहुत कम उम्र में एकल माँ होने के नाते, सविता चिंदारकर को अपने दो छोटे बच्चों की परवरिश करने के साथ-साथ अपने माता-पिता की भी देखभाल करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। लेकिन उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी... और रोटरी क्लब देवनार, रो ई मंडल 3141, अपने *पिंक एंजल्स* कार्यक्रम के माध्यम से उनकी मदद के लिए आगे आया।

उन्होंने ऑटो-रिक्शा चलाने का गहन प्रशिक्षण लिया, सड़क सुरक्षा की शिक्षा प्राप्त की और कार्यक्रम पूरा करने के बाद उन्हें अपना पिंक ऑटो चलाने का लाइसेंस मिल गया। क्लब अध्यक्ष अल्का मुरली ने बताया, पहले ही 60 महिलाएँ अपने पिंक ऑटो के साथ सड़कों पर उतर चुकी हैं, जबकि 200 महिलाओं को प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में चार दिवसीय कक्षा सत्र और उसके बाद 20 दिवसीय सड़क पर ड्राइविंग सत्र शामिल है। अल्का ने आगे कहा, विपरीत परिस्थितियों को अवसर में बदलते हुए, सविता आज आत्मविश्वास के साथ मजबूती से खड़ी हैं, यह आत्मनिर्भरता, आर्थिक स्वतंत्रता और गरिमा से मिला आत्मविश्वास है। उनके इस परिवर्तन के केंद्र में रोटरी का अटूट समर्थन है।

क्लब की *पिंक ऑटो* परियोजना के कारण जो महिलाएँ पहले आगे बढ़ने में हिचकिचाती थीं, वे अब नेतृत्व कर रही हैं, दूसरों को प्रेरित कर रही हैं और अपने समुदायों में आदर्श बन रही हैं। अल्का ने कहा, रोटरी केवल आजीविका के अवसर प्रदान नहीं कर रहा है; यह *पिंक ऑटो* पहल के माध्यम से वास्तविक सशक्तिकरण का मार्ग भी दिखा रहा है, जो यह दर्शाता है कि सोच-समझकर किया गया हस्तक्षेप और निरंतर समर्थन किस तरह स्थायी बदलाव ला सकता है। ■

एक लाभार्थी द्वारा संचालित ऑटोरिक्शा में डीजी मनीष मोटवानी।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

चलित डेंटल केयर वैन दान की गई

फेरोलाइट जॉइंटिंग्स द्वारा समर्थित एक सीएसआर पहल के तहत रोटरी कलब गाज़ियाबाद स्मार्ट सिटी, रो ई मंडल 3012, ने आईटीएस डेंटल कॉलेज, मुरादनगर, को ₹55 लाख की डेंटल केयर वैन सौंपी। यह वैन गाज़ियाबाद, दिल्ली के कुछ हिस्सों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में हर महीने लगभग 2,500 वंचित मरीजों को मुफ्त दंत चिकित्सा सेवा प्रदान करेगी।

डेंटल वैन के सामने अस्पताल के कर्मचारियों के साथ क्लब के सदस्य।

हेपेटाइटिस बी टीकाकरण अभियान

रोटरी क्लब ठाणे, रो ई मंडल 3142, ने कलवा स्थित शिवाजी अस्पताल के पैरामेडिकल स्टाफ के लिए हेपेटाइटिस बी टीकाकरण अभियान के तीसरे और अंतिम चरण को पूरा किया। यह परियोजना रोटरी क्लब ठाणे क्रीकसाइड और रोटरी क्लब ठाणे मिडटाउन के साथ मिलकर संचालित की गई। कुल 300 लाभार्थियों - प्रत्येक सहभागी क्लब से 100 - को टीके लगाए गए। इस परियोजना की लागत प्रति क्लब लगभग ₹24,000 थी।

हेपेटाइटिस बी का टीका लगवाती हुई एक नर्स।

इंदौर में पैरा टेबल टेनिस टूर्नामेंट

रोटरी कलब इंदौर रॉयल, रो ई मंडल 3040, ने एक्रोपोलिस इंस्टीट्यूट में पैरा टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया, जिसमें लगभग 50 दिव्यांग खिलाड़ियों ने भाग लिया। आठ खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय रैंकिंग टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया, जबकि इस आयोजन ने पैरा-एथलीटों के लिए समावेशन, आत्मविश्वास और पहचान को बढ़ावा दिया।

क्लब के सदस्यों के साथ विजेता।

अपशिष्ट प्रबंधन अभियान

रोटरी क्लब संबलपुर, रो ई मंडल 3261, और नगर निगम के सहयोग से गुरु नानक पब्लिक स्कूल, संबलपुर, के इंटरेक्ट क्लब ने स्वच्छ सर्वेक्षण के तहत एक अपशिष्ट प्रबंधन अभियान चलाया। छात्रों ने पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने और जानवरों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए प्लास्टिक कचरा एवं बोतलें इकट्ठा की।

एकत्रित की गई प्लास्टिक की बोतलों के साथ इंट्रक्टर्स

100 इरुला परिवारों के लिए रोटरी घर

वी मुत्तुकुमारन

एक विशाल परिवर्तनकारी परियोजना के तहत, चेन्नई से 40 किलोमीटर दूर चेंगलपट्टू मंडल के इरुम्बेदु गांव के यूरेका नगर में 76 इरुला आदिवासी परिवारों को चरणबद्ध तरीके से पक्के मकान दिए जा रहे हैं। रोटरी क्लब मद्रास, रो ई मंडल 3234 और एआईडी इंडिया मिलकर सुनियोजित, सुव्यवस्थित 360 वर्ग फुट के आवासीय इकाइयों का निर्माण कर रहे हैं, जिनमें दो कमरे, एक रसोईघर और एक बाथरूम के साथ-साथ सामाजिक मेलजोल के लिए टाइल वाली बेंच (थिन्नाई) वाला एक आंगन भी शामिल है।

इरुला गांव में *बेघरों के लिए आवास परियोजना* के दूसरे चरण के तहत 22 घरों के हस्तांतरण समारोह में बोलते हुए, पीआरआईडी अनिरुधा रॉयचौधरी ने कहा, आदिवासी परिवारों को घर उपलब्ध कराने के लिए जिस तरह की बारीकी से सोच-विचार और योजना बनाई गई है, उसे देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। रोटरी क्लब मद्रास के रोटेरियन और उनके सहयोगियों की भागीदारी से एक टाउनशिप का विकास किया जा रहा है। आदिवासी परिवारों के लिए यह एक सपने के सच होने जैसा है, लेकिन उनके लिए घर बनाने में भावनात्मक पहलू भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि सी एस आर द्वारा वित्त पोषित रोटरी परियोजनाएं भारत क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रही हैं। अगले रोटरी वर्ष से, भारत क्षेत्र में एक नया क्षेत्र (रूस क्षेत्र) जोड़ा जा रहा है। मुझे विश्वास है कि अगले तीन वर्षों में, इस गांव का व्यापक विकास होगा।

रॉयचौधरी ने आरसीएम टीम से गांव में एक चिकित्सा केंद्र और एक एम्बुलेंस की व्यवस्था करने का आग्रह किया। रोटरी इरुला परिवारों

ऊपरः बाएँ सेः रोटरी क्लब मद्रास के सचिव प्रसन्ना राजगोपालन, रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सराओगी, पीआरआईडी अनिरुद्धा रायचौधरी, क्लब अध्यक्ष निखिल राज और परियोजना अध्यक्ष एन प्रकाश, इरुम्बेडु गाँव में।

को सशक्त बना रही है क्योंकि उनके बच्चे अपने परिवार में स्कूल जाने वाले पहले सदस्य हैं, और मुझे विश्वास है कि वे यहां स्थापित किए जा रहे व्यावसायिक केंद्र का भरपूर लाभ उठाएंगे। यह देखकर हमें बहुत खुशी हो रही है कि आरसीएम के दानदाता, जिनमें नए रोटेरियन भी शामिल हैं, व्यक्तिगत घरों का निर्माण में सहयोग दे रहे हैं।

इरुला टाउनशिप के आरसीएम रोटरी विलेज के रूप में पिछले पांच वर्षों में हुए विकास को याद करते हुए, परियोजना अध्यक्ष एन. प्रकाश ने बताया कि पहले चरण में 31 घर पूरे हो चुके हैं और फरवरी 2025 में लाभार्थियों को सौंप दिए गए थे। इस परियोजना को आरसीएम के दानदाताओं के अलावा एक्सेस हेल्थकेयर से मिले ₹1.3 करोड़ के सी एस आर अनुदान से समर्थन प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा, अब दूसरे चरण में 22 घर लाभार्थी परिवारों को सौंपे जा रहे हैं और पांच अन्य घरों का निर्माण कार्य चल रहा है।

प्रत्येक घर के सामने रसोई के बगीचे के लिए एक छोटा प्लॉट रखा गया है और परिवारों को सही पेड़-पौधों की प्रजातियाँ चुनने में यूरेका ट्री और इको-क्लब के सदस्य सहायता प्रदान कर रहे हैं। इको-क्लब घरों के बीच से गुजरने वाली कच्ची सड़कों के किनारे 690 से अधिक विभिन्न प्रकार के पेड़ भी लगा रहा है।

डेटा-आधारित, प्रभाव का पता लगाना

एक ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति में, एआईडी इंडिया के संस्थापक-सीईओ बालाजी संपथ, जो आवास परियोजना की

दैनिक प्रगति की निगरानी करते हैं, ने याद दिलाया कि 2021 के एक अध्ययन में चेंगलपट्टू मंडल के सात गांवों में रहने वाले 76 बेघर इरुला परिवारों को संभावित लाभार्थियों के रूप में पहचाना गया था।

लेकिन उनके पास आधार कार्ड, वोटर आईडी कार्ड, राशन कार्ड और सामुदायिक प्रमाण पत्र भी नहीं थे। उन्होंने बताया, हमने उनकी मदद की ताकि वे ये पहचान पत्र प्राप्त कर सकें। इसके बाद हमने तहसीलदार कार्यालय में भूमि आवंटन के लिए *पट्टा* (स्वामित्व पत्र) के लिए आवेदन किया। 2023 में पट्टा मिलने के बाद सरकारी सर्वेक्षकों की एक टीम ने इरुम्बेदु में चार एकड़ बंजर भूमि का दौरा किया और प्रत्येक लाभार्थी के लिए भूमि का सीमांकन किया। हमने अक्टूबर 2023 में 62 झोपड़ियाँ बनाईं और परिवारों को उनके नए आवासों में स्थानांतरित किया। इसके बाद हमने एक दर्जन सौर स्ट्रीटलाइटें लगाईं और बिजली बोर्ड से बिजली आपूर्ति के लिए आवेदन किया।

नवंबर 2023 में एआईडी इंडिया ने एक बोरवेल खोदा और छह पानी की टंकियां (5,000 लीटर, जमीन के स्तर पर) स्थापित कीं। संपथ ने बताया, दिसंबर 2023 की भारी बारिश से परिवारों को काफी

क्लब अध्यक्ष राज, पीआरआईडी रायचौधरी और डीजी सराओगी एक इरुला दुकान मालिक से बातचीत करते हुए।

***नीचे:** इरुम्बेडु गाँव में पूर्ण हुए घरों के हस्तांतरण समारोह के दौरान इरुला बच्चों द्वारा 'यूरेका ट्री' और 'इको-क्लब' का शुभारंभ।*

कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसलिए हमने बाढ़ का पानी निकालने के लिए अर्थमूवर से खुले नाले खुदवाए। चूंकि बाढ़ के कारण पुरुष काम पर नहीं जा सके, इसलिए हमने सभी परिवारों को छह महीने का राशन मुहैया कराया। इस नाजुक समय में, पूर्व अध्यक्ष चेल्ला कृष्णा (2024-25) ने फरवरी 2024 में साइट का दौरा किया और आवास परियोजना में रोटरी को भागीदार बनाने का फैसला किया।

जुलाई 2024 में रोटरी के टाउनशिप विकास में औपचारिक रूप से शामिल होने से पहले ही, संपथ ने अपने आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्र मित्रों की मदद से आठ घर (प्रत्येक ₹4 लाख की लागत से) बनवा लिए थे। आरसीएम के साझेदार बनने के बाद, हमने काम में तेजी लाई और अक्टूबर 2024 में मंडल कलेक्टर से 31 घरों के पहले चरण की मंजूरी प्राप्त की, जिसे फरवरी 2025 के अंत तक पूरा कर लिया गया। अब तक, दो चरणों में 61 घर पूरे हो चुके हैं और पांच निर्माणाधीन हैं। वारा फ्यूचर एलएलपी ने दूसरे चरण के लिए ₹1.2 करोड़ का योगदान देकर सी एस आर साझेदार के रूप में अपना योगदान दिया है।

आरसीएम ने अपने शताब्दी वर्ष 2029 तक तीसरे चरण के तहत 39 घरों का निर्माण पूरा करने का लक्ष्य रखा है, जिससे कुल 100 आवासीय इकाइयां पूरी हो जाएँगी। क्लब की योजना है कि वह मबेघरों के लिए घर परियोजनाफ के तहत चेन्नई के पास स्थित गुम्मिडीपूंडी तालुक, तिरुवल्लूर और चेंगलपट्टू मंडलों में विभिन्न स्थानों पर 500 घर बनाए।

आरसीएम रोटरी विलेज इरुला समुदाय को एक स्थिर आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से हम स्वास्थ्य सेवाओं और बच्चों की शिक्षा के जरिए आदिवासी परिवारों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर रहे हैं।

निखिल राज
अध्यक्ष, रोटरी क्लब मद्रास

पीआरआईडी रायचौधरी और क्लब अध्यक्ष राज, इरुला बच्चों को स्कूल बैग वितरित करते हुए। क्लब के कम्युनिटी सर्विसेज़ डायरेक्टर सुरेश अमीरापु पीछे दिखाई दे रहे हैं। AID इंडिया की समन्वयक डी विमला बाईं ओर हैं।

वर्तमान में क्लब चेन्नई के आसपास के राजस्व मंडलों में 160 घर बना चुका है। संपथ के अनुसार, परियोजना से जुड़ा पूरा कार्य डेटा-आधारित तरीके से किया जा रहा है और आगे बढ़ने से पहले इसके प्रभाव का अध्ययन एआईडी इंडिया के स्वयंसेवकों और रोटरी सदस्यों द्वारा किया जाता है।

रोटरी के सहयोग से, हम न केवल पक्के मकान बना रहे हैं, बल्कि आदिवासी परिवारों को रोज़गार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। हमने मंडल कलेक्टरेट में पाइपलाइन के माध्यम से पानी की आपूर्ति के लिए आवेदन किया है, उन्होंने बताया। नए परिवारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए हम दो और बोरवेल तथा आठ नए टैंक भी जोड़ेंगे। पंचायत कार्यालय ने आश्वासन दिया है कि यूरेका नगर में दो महीने के भीतर पक्की सड़कें (₹40 लाख) बिछाई जाएंगी। आरसीएम के सहयोग से एआईडी इंडिया द्वारा एक प्राथमिक विद्यालय और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने वाला एक सामुदायिक केंद्र चलाया जा रहा है, और एक कृत्रिम तालाब (20x20 फीट) भी खोदा जा रहा है। एआईडी इंडिया की समन्वयक डी विमला ने कहा, इरुला समुदाय के सभी 60 बच्चे स्कूल जा रहे हैं, और महिलाओं को भी समय के साथ व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

क्लब के अध्यक्ष निखिल राज ने कहा, हम आदिवासी परिवारों के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर रहे हैं, जिन्हें अब स्वास्थ्य सेवाएँ और बच्चों की शिक्षा जैसी सुविधाएँ मिल रही हैं। रोटरी विलेज इरुला समुदाय को एक स्थायी स्थान प्रदान कर उन्हें सम्मान और करुणा का भाव देता है, ताकि वे आत्मविश्वास और आशा से भरा जीवन जी सकें। शेष 24 इरुला परिवारों की पहचान कर ली गई है और वे भूमि आवंटन के लिए मंडल कलेक्टर से पट्टे मिलने का इंतजार कर रहे हैं।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

Rotary PEOPLE OF ACTION

परिवर्तन की शक्ति

पुणे के अस्पताल के लिए बेबी वेंटिलेटर

रोटरी क्लब पुणे सरसबाग, रो ई मंडल 3131 ने पुणे के दीनानाथ मंगेशकर हॉस्पिटल को ₹10 लाख (CSR फंडिंग) के दो नॉन-इनवेसिव वेंटिलेटर दान किए। ये वेंटिलेटर उन नवजात शिशुओं की मदद के लिए हैं जिन्हें सांस लेने में दिक्कत होती है। ये मशीनें शिशुओं के नन्हे गले में कोई ट्यूब डाले बिना उन्हें श्वसन सहायता प्रदान करेंगी।

क्लब ने हॉस्पिटल की नियोनेटोलॉजिस्ट डॉ शिल्पा कलाने को नए जन्मे बच्चों की सेवा के लिए वोकेशनल एक्सीलेंस रिकग्निशन अवॉर्ड के लिए नामित किया है।■

दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल, पुणे को उच्च-प्रौद्योगिकी मशीनें सौंपने के अवसर पर रोटेरियन।

महाराष्ट्र के धाराशिव (पूर्व में उस्मानाबाद) में आयोजित साड़ी वॉकाथॉन में प्रतिभागी।

एक साड़ी वॉकथॉन

रोटरी क्लब धाराशिव, रो ई मंडल 3132 द्वारा कैंसर जागरूकता के लिए आयोजित 'साड़ी वॉकाथॉन' को तुलजाभवानी स्टेडियम में लगभग 1,600 महिलाओं की भागीदारी के साथ डीजी सुधीर लातुरे ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस वॉकाथॉन का उद्देश्य महिलाओं में कैंसर की शीघ्र पहचान के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम स्थल पर एक आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज के सहयोग से 300 महिलाओं की रक्त जांच भी की गई। इसके साथ ही रोटरी की थीम 'यूनाइट फॉर गुड' के संदेश के साथ एक वाहन पूरे शहर में घुमाया गया, ताकि जनसंपर्क और सार्वजनिक छवि को सुदृढ़ किया जा सके।

कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ श्रुति गांधी ने शुरुआती लक्षणों की पहचान और समय पर जांच की आवश्यकता पर एक व्याख्यान दिया। कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा एक नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया। क्लब अध्यक्ष रंजीत रांदिवे और सचिव प्रदीप खामकर ने इस पहल का नेतृत्व किया। ■

मोबाइल आईकेयर ने 5,000 विद्यार्थियों की जांच की

रोटरी क्लब पिलाथारा मथमंगलम, रो ई मंडल 3204 ने एक मोबाइल आईकेयर यूनिट की मदद से तीन महीनों में लगभग 5,000 स्कूली विद्यार्थियों की आंखों की जांच की। यह सैटेलाइट क्लब मई 2025 में शुरू किया गया था।

रोटरी क्लब पय्यानूर के जीजी प्रोजेक्ट ड्रविजन ऑन व्हील्सफ ने रोटरी टीम को प्रत्येक स्कूल में जाकर विद्यार्थियों को उच्च-गुणवत्ता वाली नेत्र जांच और डायग्नोस्टिक सेवाएं प्रदान करने में मदद की। सैटेलाइट क्लब की अध्यक्ष जया हरिदास और इसके सलाहकार सुनील कोट्टाराथिल ने लॉजिस्टिक्स का ध्यान रखा। ■

एक विद्यालय में आयोजित नेत्र-जांच शिविर।

'हैप्पी स्ट्रीट्स' कार्यक्रम

लोगों में फिटनेस को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, महाराष्ट्र के ठाणे मंडल में स्थित खूबसूरत झील कटराप तालाब पर रोटरी क्लब बदलापुर औद्योगिक क्षेत्र, रो ई मंडल 3142 द्वारा संगीत, गायन, नृत्य, योग, दौड़, नाटक और मनोरंजक व्यायामों से भरपूर 'हैप्पी स्ट्रीट्स' नामक एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बदलापुर नगर पालिका की अध्यक्ष रुचिता घोरपड़े और उनके पति राजेंद्र घोरपड़े, पूर्व अध्यक्ष, डीजीई नीलेश जयवंत और पीडीजी कैलाश जेठानी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। विभिन्न कलाओं से जुड़े संस्थानों के अलावा, सभी आयु वर्ग के एक हजार से अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। क्लब अध्यक्ष अमित पध्या ने अपनी टीम के सहयोग से कार्यक्रम का समन्वय किया। ■

रो ई मंडल 3142 के डीजीई निलेश जयवंत 'हैप्पी स्ट्रीट्स' में एक प्रतिभागी को प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए। उनके बाईं ओर पीडीजी कैलाश जेठानी हैं।

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

वी सुरेश
रियल एस्टेट फाइनेंस
रोटरी क्लब वेल्लोर मिड-टाउन
रो ई मंडल 3231

स्कूलों में शौचालय ब्लॉकों पर विशेष ध्यान

सरकारी ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा अच्छी और सक्षम शिक्षकों के साथ है, लेकिन वहाँ स्वच्छता और कक्षा सुविधाओं जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी है। मैं अपने मंडल के ग्रामीण विद्यालयों में शौचालय ब्लॉकों और हैंडवॉश स्टेशनों के निर्माण और नवीनीकरण पर ध्यान केंद्रित करूंगा, वी सुरेश कहते हैं।

98 क्लबों में 3,700 रोटेरियन सदस्यों के साथ, उनका लक्ष्य 30 जून तक 1,000 नए सदस्य को जोड़ना और 10 नए क्लब चार्टर करना हैं। सरकारी प्राथमिक विद्यालय, तिरुवल्लूर में लड़कियों और लड़कों के लिए अलग-अलग शौचालय ब्लॉक बनाए जाएंगे (सी एस आर: ₹15 लाख)। इसके अलावा वंदावासी के दो सरकारी हाई स्कूलों में (जीजी: ₹30 लाख) और अंबूर में (जीजी: ₹25 लाख) भी ऐसे शौचालय ब्लॉक बनाए जाएंगे। इसके साथ ही, ₹30 लाख के मंडल अनुदान के माध्यम से प्राथमिक और उच्च विद्यालयों में लगभग 25 शौचालय ब्लॉकों का नवीनीकरण किया जाएगा।

तिरुवल्लूर के जैन डायलिसिस सेंटर में तीन डायलिसिस मशीनें (जीजी: ₹30 लाख) स्थापित की जाएंगी। वहीं, रोटरी क्लब गुडियाथम द्वारा एक मैमोग्राफी बस (जीजी: ₹1.6 करोड़), जिसे रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, मोबाइल शिविरों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की स्तन कैंसर जांच करेगी।

क्लबों द्वारा लगभग 500 नेत्र जांच शिविर आयोजित किए गए, विशेष रूप से दूरदराज के गांवों में। उनका लक्ष्य टीआरएफ के लिए 200,000 डॉलर का योगदान जुटाने है। रोटरी के पोलियो उन्मूलन प्रयासों से प्रेरित होकर वे 2011 में अपने होम क्लब में शामिल हुए।

एक स्वास्थ्य दूत

डब्ल्यूएचओ के साथ मिलकर काम करने वाले जिनेवा स्थित एलायंस फॉर हेल्थ प्रमोशन की अध्यक्ष एलिज़ाबेथ चेरियन, रोटरी परियोजनाओं में कई हितधारकों को शामिल करने के लिए उत्सुक हैं, ताकि हम समुदायों के बीच बेहतर पहुंच के साथ प्रभावशाली सेवा प्रदान कर सकें, यह जमीनी स्तर की स्वास्थ्य दूत का कहना है।

94 क्लबों में 3,700 से अधिक रोटेरियन सदस्यों के साथ, उनका लक्ष्य 1,000 नए सदस्यों को शामिल करना है। अब तक 520 नए सदस्यों को शामिल किये गये हैं। अब तक 12 नए क्लब बनाए जा चुके हैं, जिनमें से प्रत्येक में कम से कम 20-25 सदस्य हैं। वे 9-10 सामाजिक उद्देश्यों पर आधारित सैटेलाइट क्लबों की स्थापना पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। लचीलेपन वाले सैटेलाइट क्लब सही मंच प्रदान करते हैं। अब तक ऐसे चार क्लब स्थापित किए जा चुके हैं।

रोटरी मान्यता के कुछ प्रमुख जीजी परियोजनाओं में शामिल हैं: रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट शहर के अस्पतालों में नेत्र सर्जरी के लिए सहायता प्रदान करेगा (जीजी: 100,000 डॉलर); रोटरी क्लब बेंगलुरु ओरियन गेटवे मोबाइल कैंसर स्क्रीनिंग यूनिट की शुरुआत करेगा (जीजी: 89,000 डॉलर); और रोटरी क्लब बैंगलोर नॉर्थ एक चैरिटेबल अस्पताल में डायलिसिस वार्ड स्थापित करेगा (89,000 डॉलर)। सी एस आर परियोजनाओं के तहत, रोटरी मान्यता द्वारा श्री मधुसूदन साई अस्पताल को हाई-टेक उपकरण उपलब्ध कराना (₹2.53 करोड़); रामनगर में आरओ प्लांट सहित एक ग्रीनफील्ड स्कूल स्थापित करना (₹3.5 करोड़) और रोटरी क्लब इंदिरा नगर द्वारा हृदय शल्य चिकित्सा के लिए सहायता प्रदान करना (₹60 लाख) जैसी परियोजनाएं शामिल हैं। कुल मिलाकर, कॉर्पोरेट वित्तपोषित परियोजनाओं का मूल्य लगभग 1.6 मिलियन डॉलर है। टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य कम से कम 3 मिलियन डॉलर एकत्रित करना है।

एलिज़ाबेथ ने वर्ष 2001 में रोटरी से जुड़ने का निर्णय लिया।

एलिज़ाबेथ चेरियन
ग्लोबल हेल्थकेयर
रोटरी क्लब बैंगलोर
रो ई मंडल 3192

रोटरी मैसूरु में हर जगह मौजूद

जब 9 वर्षीय बसम्मा को मुफ्त कॉर्निया प्रत्यारोपण सर्जरी के बाद अपनी दृष्टि वापस मिली, ''तो वह पहली बार दुनिया को देखकर बेहद खुश और मुस्कुराती हुई बाहर आई। 20 साल पहले हुई उस घटना ने जीवन के प्रति मेरा नजरिया बदल दिया और मुझे रोटरी परियोजनाओं में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया,'' रामकृष्ण याद करते हैं।

उन्हें विश्वास है कि वे 500 नए सदस्यों को जोड़ लेंगे, जिनमें से 318 पहले ही शामिल हो चुके हैं, और मौजूदा 91 क्लबों में 4,000 रोटेरियन सदस्यों की संख्या में कम से कम 10 नए क्लबों का गठन करेंगे। मैसूरु के चेलुवंबा अस्पताल में एक मानव दूध बैंक (सी एस आर अनुदान: ₹40 लाख) का उद्घाटन किया गया है, जो यहां प्रतिवर्ष जन्म लेने वाले 3,500 शिशुओं की देखभाल करेगा। इसके अलावा: रोटरी क्लब आइवरी सिटी मैसूरु द्वारा लगभग 1,000 नेत्र शल्य चिकित्सा (जीजी: ₹41 लाख) की जाएगी; विवेकानंद मेमोरियल अस्पताल, मैसूरु को लेप्रोस्कोपिक उपकरण दान किए जाएंगे (जीजी: ₹52 लाख); और सरकारी नेत्र अस्पताल, सुलिया को सर्जरी उपकरण (जीजी: ₹31 लाख) दिए जाएंगे।

86 सरकारी स्कूलों में स्मार्ट बोर्ड (प्रत्येक ₹1 लाख) लगाए जा रहे हैं; और चामराजनगर और गुंडलूपेट में अगले 2-3 महीनों में दो गुलाबी शौचालय (सी एस आर अनुदान: ₹20 लाख) बनाए जाएंगे। उनका लक्ष्य टीआरएफ के लिए 10 लाख डॉलर जुटाना है। रामकृष्ण कहते हैं कि उन्हें सेवा परियोजनाएँ करना बहुत पसंद है, क्योंकि मेरे पास रोटरी से जुड़े कई खास पल हैं। जब उन्होंने 1986 में रोटरी में शामिल हुए थे, तब मैसूरु में केवल चार क्लब थे। अब हमारे पास 23 क्लब हैं, और हमारे मंडल में रोटरी तेज़ी से आगे बढ़ रही है, वे कहते हैं।

रामकृष्ण पी के
फ्रैग्रेंस केमिकल्स
रोटरी क्लब मैसूर मिड-टाउन
रो ई मंडल 3181

200 बाल हृदय सर्जरी की जा रही हैं, 200 दृष्टिबाधितों को स्मार्ट ग्लास दिए जा रहे हैं, और 1,000 छात्राओं को साइकिलें प्रदान की गई हैं। दो 'हैप्पी स्कूल' भी स्थापित किए जा रहे हैं।

डीजी रविंदर गुगनानी
रो ई मंडल 3011

रविंदर गुगनानी
शिक्षाविद
रोटरी क्लब रोहतक
रो ई मंडल 3011

रोटरी अस्पताल में नई हृदय रोग इकाई

2008 में रोटरी से जुड़ने के बाद, रविंदर गुगनानी याद करते हुए कहते हैं, ''मेरे लिए सेवा और मित्रता का यह एक अद्भुत सफर रहा है, क्योंकि इस संगठन ने मुझे जीवन के कई सिद्धांत सिखाए हैं। इन सभी गुणों में से, कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के प्रति करुणा रखना मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण सीख है।''

गुगनानी ने अब तक 600 नए सदस्यों को शामिल किया है और इस वर्ष 1,200 रोटेरियन जोड़ने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान में, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 143 क्लबों में 5,800 सदस्य हैं। उन्होंने रोटरी-रोटरेक्ट-इंटरेक्ट परिवारों में नए क्लबों की स्थापना के लिए रो ई निदेशक के पी नागेश के '10-20-30' मंत्र को अपनाया है। अब तक मैंने नौ क्लबों का गठन किया है और 30 जून से पहले ही अपना लक्ष्य पूरा कर लूंगा। फरीदाबाद स्थित रोटरी अस्पताल में एक हृदय रोग इकाई (सी एस आर फंड + जीजी: 1 मिलियन डॉलर) स्थापित की जाएगी। रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने नवंबर में गुरुग्राम स्थित रोटरी अस्पताल में प्रेम सागर गोयल हृदय केंद्र का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब दिल्ली साउथएंड नेक्स्ट 200 बच्चों की हृदय सर्जरी कर रहा है (जीजी: ₹1.25 करोड़)। मंडल के क्लब राष्ट्रीय नेत्रहीन संघ द्वारा चिन्हित दृष्टिबाधित लोगों को 200 स्मार्ट चश्मे और सरकारी स्कूलों की छात्राओं को 1,000 साइकिलें वितरित कर रहे हैं (दोनों के लिए सी एस आर अनुदान: ₹1 करोड़ डॉलर)। फरीदाबाद के सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल (सी एस आर: 50,000) और गुरुग्राम के सरकारी प्राइमरी स्कूल (सी एस आर: 35,000 डॉलर) में दो हैप्पी स्कूल कार्यक्रम चल रहे हैं। उन्होंने टीआरएफ के लिए 4 मिलियन का लक्ष्य रखा है, और वे कहते हैं, मैं इस चुनौतीपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हूं। ■

आईआईटीएम-रोटरी सेंटर: एक बड़ी प्रेरणा

वी मुत्तुकुमारन

डेटा-आधारित अध्ययन द्वारा संचालित 'प्रोग्राम्स ऑफ स्केल' जैसी बड़ी सेवा परियोजनाओं के माध्यम से समुदायों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा है, और इसी के चलते रोटरी दुनिया को बदल रहा है। टीआरएफ ट्रस्टी अध्यक्ष होल्गर नेक ने कहा, भारत में, रोटरी क्लबों ने बड़े पैमाने पर सी एस आर-वित्त पोषित परियोजनाएं शुरू की हैं, जिन्हें ब्राजील और फिलीपींस जैसे अन्य देश अपनाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उन्हें ज्यादा सफलता नहीं मिली है।

आईआईटी-मद्रास के ह्यूमैनिटीज़ एंड साइंसेज़ ब्लॉक में आईआईटीएम-रोटरी सामाजिक विकास केंद्र का उद्घाटन करने के बाद अपने संबोधन में उन्होंने सहयोगी क्लबों और इस प्रमुख संस्थान को इस संयुक्त पहल के लिए बधाई दी, जो आने वाले वर्षों में पूरे भारत में क्लबों के माध्यम से स्थायी परिवर्तन लाएगी। रोटरी क्लब मद्रास मिड-टाउन और मद्रास सेंट्रल आदित्य, रो ई मंडल 3233, रोटरी केंद्र के लिए ₹30 लाख का कोष जुटाने की प्रक्रिया में हैं। यह केंद्र समय के साथ परियोजना मूल्यांकन अध्ययन, प्रभाव रिपोर्टिंग, परियोजना परामर्श और स्थिरता पर श्वेत पत्र तैयार करने जैसे कार्य करेगा। इसके अलावा, दक्षिण भारत के रोटरी क्लबों को आवश्यकता-आधारित समूह विकास और सी एस आर परियोजनाओं को डिजाइन करने में मदद करके आय उत्पन्न करेगा। इससे नया केंद्र रोटरी के लिए एक आत्मनिर्भर संसाधन निकाय बन जाएगा, पीडीजी मुथु पलानियाप्पन ने कहा।

रोटरी ट्रस्टी भरत पंड्या ने कहा, रोटरी क्लब हर साल लगभग 275-300 वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के माध्यम से ₹180-190 करोड़ के अनुदान प्राप्त करते हैं, जिससे भारत में लाखों लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उन्होंने आगे कहा कि अब आईआईटी-मद्रास का रोटरी से जुड़ना अगले 10 वर्षों में एक क्रांतिकारी पहल साबित होगा, जिसमें क्लब अनुसंधान और डेटा-आधारित परियोजनाएं संचालित करेंगे।

डीजी डी देवेंद्रन ने कहा कि रो ई मंडल 3233 क्लब हर वर्ष लगभग 1 मिलियन डॉलर की परियोजनाएं संचालित कर रहे हैं। कोविड के वर्षों के दौरान हमने लगभग 20 लाख डॉलर की सेवा पहल की, जिसमें 'प्रोजेक्ट ऑरेंज' भी शामिल है, जिसने रोकी जा सकने वाली अंधता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि जहां वार्षिक सी एस आर-वित्त पोषित परियोजनाओं का बजट 30 करोड़ रुपये है, वहीं आईआईटी-मद्रास की मदद से, हम इसे अगले 4-5 वर्षों में 300 करोड़ रुपये तक बढ़ा सकते हैं।

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक और सुसाने, रोटरी क्लब चेन्नई कैपिटल की अध्यक्ष अपूर्वा मोदी, डीआरएफसी एल नीलकंठन, डीजी डी देवेंद्रन, ट्रस्टी भरत पांड्या और डीजीई श्रीराम दुव्वूरी के साथ, श्री रामचंद्र अस्पताल, चेन्नई में चिकित्सा उपकरण के उद्घाटन के बाद।

परियोजना के अध्यक्ष, डीजीएनडी एम अंबलवनन ने कहा, आईआईटीएम-रोटरी केंद्र की स्थापना मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा क्षण है। व्यवसायी होने के नाते, हमें अपने समुदायों की जमीनी हकीकतों और परिस्थितियों की पूरी जानकारी नहीं होती है। लेकिन यह आवश्यक है कि हमारी परियोजनाएँ ठोस और प्रमाणित आंकड़ों पर आधारित हों तथा समुदायों की वास्तविक जरूरतों पर अध्ययन किया जाए। नया केंद्र रोटरी क्लबों के लिए इसी कमी को पूरा करेगा।

उन्होंने बताया कि पिछले पांच वर्षों में चेन्नई के रोटरी क्लबों ने वैश्विक अनुदान और सी एस आर-समर्थित परियोजनाओं के माध्यम से लगभग 14 मिलियन डॉलर की राशि का कार्य किया है; और पूरे देश में, अकेले सी एस आर परियोजनाओं का मूल्य पिछले वर्ष 1 बिलियन डॉलर था, जिसमें अधिकांश वित्त पोषण एमएसएमई कंपनियों से आया था।

ट्रस्टी चेयर क्नाक, ट्रस्टी पांड्या, पीडीजी एन नंदकुमार, डीजीएनडी एम अंबालावनन, पीडीजी एस मुत्तु पलनियप्पन, डीजी देवेंद्रन और डीजीई दुव्वूरी, आईआईटी मद्रास में।

UN के विकास लक्ष्यों के 17 लक्ष्य

अंबलवनन ने बताया कि IIT मद्रास-रोटरी सेंटर वैश्विक अनुदान और सी एस आर-फंडिंग के लिए सामाजिक विकास परियोजनाओं को डिजाइन करेगा, जिसमें फैकल्टी और छात्र शामिल होंगे जो रोटरी के सात प्रमुख क्षेत्रों में ज्ञान का एक डेटाबेस तैयार करेंगे। एक संसाधन केंद्र के रूप में, यह शुरुआत में तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और पुदुचेरी में महत्वपूर्ण मानवीय परियोजनाओं का आकलन, डिजाइन और कार्यान्वयन करेगा।

पहली बार, रोटरी केंद्र यूएनडीपी के 17 एसडीजी (सतत विकास लक्ष्यों) से संबंधित सूचनाओं का एक डैशबोर्ड तैयार करेगा, जिसे रोटरी के फोकस क्षेत्रों के साथ जोड़ा जाएगा। पीडीजी मुत्तु पलनियाप्पन ने कहा कि यह केंद्र तमिलनाडु भर में सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली केंद्र बनेगा। यह केंद्र राज्य सरकार की तूत्तुक्कुडी मंडल में श्रवण-बाधित शिशुओं से संबंधित एक पायलट स्वास्थ्य परियोजना पर भी काम करेगा और यह देखेगा कि उपचार के लिए प्रभावी समाधान कैसे विकसित किए जाएँ तथा इस उपचार मॉडल को रोटरी क्लबों के माध्यम से पूरे राज्य में कैसे लागू किया जा सकता है। मानविकी और विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा कि वे नए केंद्र के माध्यम से ग्रामीण समुदायों में स्पष्ट प्रभाव लाने वाले तकनीकी नवाचारों पर मिलकर काम करने को लेकर उत्साहित हैं।

आईआईटीएम-रोटरी सेंटर, रोटरी के सात प्रमुख फोकस क्षेत्रों में एक ज्ञान डेटा बैंक तैयार करने के लिए संकाय और छात्रों की भागीदारी के साथ, ग्लोबल ग्रांट्स और सीएसआर फंडिंग हेतु सामाजिक विकास परियोजनाओं का डिजाइन करेगा।

रोटरी के साथ अक्टूबर 2024 में हुए एमओयू और उसके बाद फरवरी 2025 में आईआईटी-एम के निदेशक वी कामकोटी द्वारा किए गए सॉफ्ट लॉन्च को याद करते हुए, एसोसिएट प्रोफेसर संतोष साहू ने बताया कि IIT मद्रास एलुमनाई चैरिटेबल ट्रस्ट ने संसाधनों और दान देने में उदारता दिखाई है। साहू ने आगे कहा, हम एसडीजी पर सर्टिफिकेट कोर्स आयोजित करेंगे, सामाजिक और ग्रामीण मुद्दों पर श्वेत पत्र प्रकाशित करेंगे, इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करेंगे, विशिष्ट समस्याओं पर विचार-विमर्श के लिए हैकथॉन आयोजित करेंगे, चेन्नई के लिए एक व्यापक डेटाबेस तैयार करेंगे और फिर धीरे-धीरे पूरे भारत से जुड़ेंगे।

आरंभ में साहू के नेतृत्व में चार आईआईटी प्रोफेसर रोटरी केंद्र की गतिविधियों में शामिल होंगे और उन्हें तीन सदस्यीय सलाहकार मंडल द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा। हैदराबाद, मुंबई, दिल्ली, भुवनेश्वर और गुवाहाटी स्थित आईआईटी में भी इसी प्रकार के रोटरी केंद्र संबंधित रोटरी मंडलों और क्लबों की सहायता से स्थापित किए जाएंगे।

अपने वीडियो संदेश में, आईआईटी-एम के निदेशक कामाकोटी ने कहा कि आईआईटीएम-रोटरी केंद्र तमिलनाडु में एसडीजी के लिए एक नीतिगत छत्र निकाय होगा, जो रोटरी क्लबों के माध्यम से तमिलनाडु ग्रीन मिशन (मैंग्रोव पुनर्स्थापन), बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल और अन्य राज्य ग्रामीण योजनाओं में हस्तक्षेप करेगा। उन्होंने आगे कहा कि यह केंद्र सतत विकास के लिए उद्योग-अकादमिक समन्वय को बढ़ावा देने का प्रयास करेगा, जिसे राज्य सरकार की मदद से स्कूलों और कॉलेजों में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाएगा।

कामकोटी ने कहा कि आईआईटी-मद्रास पुदुचेरी के पास ऑरोविले गांव में 100 एकड़ का एक

सस्टेनेबिलिटी कैंपस विकसित कर रहा है, जहां केंद्र की सर्वोत्तम प्रथाओं पर अमल किया जाएगा और उन्हें पूरे देश के लिए मॉडल विकास मापदंड के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

उच्च तकनीक चिकित्सा उपकरण

चिकित्सा क्षेत्र में, रोटरी क्लब चेन्नई कैपिटल ने ₹45 लाख की जीजी परियोजना के तहत श्री रामचंद्र अस्पताल के बाल चिकित्सा आईसीयू वार्ड को अल्ट्रासाउंड और एचएफएनसी (हाई-फ्लो नेज़ल कैनुला) उपकरण सौंपे। इस परियोजना में रो ई मंडल 5330, यूएस, और रोटरी क्लब मेलावती, रो ई मंडल 3300, मलेशिया, वैश्विक भागीदार थे।

नेक और उनकी पत्नी सुज़ैन ने ट्रस्टी पांड्या, डीजी देवेंद्रन, डीजीई श्रीराम दुव्वूरी, डीआरएफसी एल नीलकांतन और क्लब अध्यक्ष अपूर्व मोदी की उपस्थिति में परियोजना का उद्घाटन किया। पीडीजी एन नंदकुमार और पलानीअप्पन, और अंबालावनन भी उपस्थित थे।

मोदी ने कहा कि अल्ट्रासाउंड और एचएफएनसी उपकरण गंभीर रूप से बीमार शिशुओं के उपचार की अवधि को कम कर देंगे। उन्होंने कहा कि इन उच्च-तकनीकी उपकरणों के माध्यम से अस्पताल नाजुक शिशुओं को स्थानांतरित किए बिना ही जीवनरक्षक महत्वपूर्ण उपचार कर सकेगा, जो नवजात मृत्यु दर को कम करने में एक अहम कारक है। मार्च में, क्लब किलपॉक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के ऑर्थोपेडिक वार्ड को दो सी-आर्म एक्स-रे मशीनें (जीजी: ₹40 लाख) दान करेगा; और किसी चैरिटी अस्पताल को मैमोग्राम या इको-कार्डियोग्राम मशीन दान करने के लिए ₹50-60 लाख की जीजी के लिए आवेदन भी किया जाएगा।

अपने भाषण में, ट्रस्टी अध्यक्ष नेक ने कहा कि अस्पताल और रोटरी के बीच लंबे समय से चले आ रहे सहयोग ने समुदायों की जरूरतों का ध्यान रखा है। स्थापना के बाद से, टीआरएफ ने जीजी और अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से 4 बिलियन डॉलर से अधिक की वैश्विक परियोजनाओं को वित्त पोषित किया है। उन्होंने कहा, पोलियो का उन्मूलन अभी भी हमारी मुख्य प्राथमिकता है और यह अब केवल दो देशों - पाकिस्तान और अफगानिस्तान में ही स्थानिक है। पड़ोसी देश होने के नाते, भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पोलियो का विश्व से उन्मूलन हो।

चित्रः वी मुत्तुकुमारन

Rotary
PEOPLE OF ACTION

बीड में आयोजित चिकित्सा शिविर से 1,000 लोगों को लाभ

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब बीड मिड टाउन, रो ई मंडल 3132 द्वारा आयोजित एक विशाल स्वास्थ्य शिविर में, विभिन्न बीमारियों और दीर्घकालिक रोगों से पीड़ित 1,000 से अधिक व्यक्तियों की जांच की गई और दवाएं वितरित की गईं।

मुख्यमंत्री सहायता निधि सेल, चैरिटेबल हॉस्पिटल सेल (बीड), सेंट एनीज़ सोशल सेंटर और मंडल स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के बीड तालुका के गांवों में सात दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। विभिन्न विशेषज्ञताओं के रोटेरियन डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। क्लब अध्यक्ष राहुल बोरा, सचिव प्रकाश कोंका, परियोजना अध्यक्ष अमोल तालेकर और नीलेश जगदाले ने व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी संभाली।

तालुक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ नरेश कसाट और बहीरवाड़ी स्थित सेंट ऐनी सोशल सेंटर के स्वयंसेवकों ने चिकित्सा अधिकारियों, आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सप्ताह भर चलने वाले इस शिविर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ■

चिक्काबल्लापुर में चिकित्सा परियोजनाएँ

टीम रोटरी न्यूज़

कर्नाटक में श्री मधुसूदन साई इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च, चिक्काबल्लापुर में रोटरी क्लब बैंगलोर उल्सूर, रो ई मंडल 3192 द्वारा दो सी एस आर-वित्त पोषित चिकित्सा परियोजनाएं संचालित की गईं।

सामुदायिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रम के तहत, क्लब ने टीटीपी टेक्नोलॉजीज और राजामने इंडस्ट्रीज से प्राप्त ₹37.45 लाख के सी एस आर अनुदान से अस्पताल में 107 हृदय सर्जरी करवाई हैं। क्लब के अध्यक्ष पी. विजय कुमार ने कहा, इस वित्तीय सहायता से उन जरूरतमंद मरीजों को लाभ हुआ है, जो जीवन-रक्षक प्रक्रियाओं का खर्च वहन नहीं कर सकते। सी एस आर अनुदान के तहत प्रत्येक सर्जरी के लिए ₹35,000 प्रदान किए गए।

सर्जरी के बाद, मरीजों को उचित पोषण, दवाइयाँ और नियमित जाँच प्रदान की गई, ताकि वे पूरी तरह से ठीक हो सकें। अस्पताल की चिकित्सा टीमों ने जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों सहित 107 मरीजों के ठीक होने के लिए समय पर मार्गदर्शन और सहायता प्रदान की।

एक अन्य पहल के तहत, अस्पताल ने गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से बचाव सुनिश्चित करने के लिए 943 स्कूली छात्राओं को एचपीवी का टीका लगाया। क्लब ने छात्राओं को टीके की खुराक उपलब्ध कराने के लिए कॉमवॉल्ट सिस्टम्स के साथ साझेदारी की।

प्रत्येक छात्रा को छह महीने के अंतराल पर एचपीवी वैक्सीन की दो खुराकें दी गईं। कुमार ने कहा, टीकाकरण अभियान का उद्देश्य समय पर हस्तक्षेप, जागरूकता सृजन और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से युवा लड़कियों और महिलाओं को गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से सुरक्षित करना था। ■

रोटरी क्लब बेंगलुरु उलसूर के अध्यक्ष पी विजय कुमार (बाएं) वंचितों के हृदय उपचार के लिए अस्पताल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ रघुपति को चेक सौंपते हुए।

एचपीवी टीकाकरण के बाद स्कूली छात्र।

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

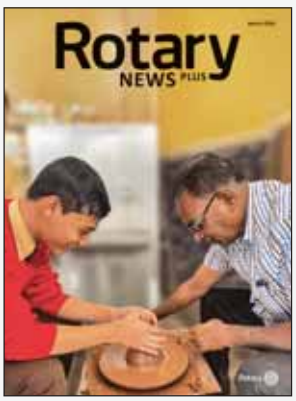

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक ईमेल के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को भेजा जाता है।

हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें।

Membership & TRF contribution summary

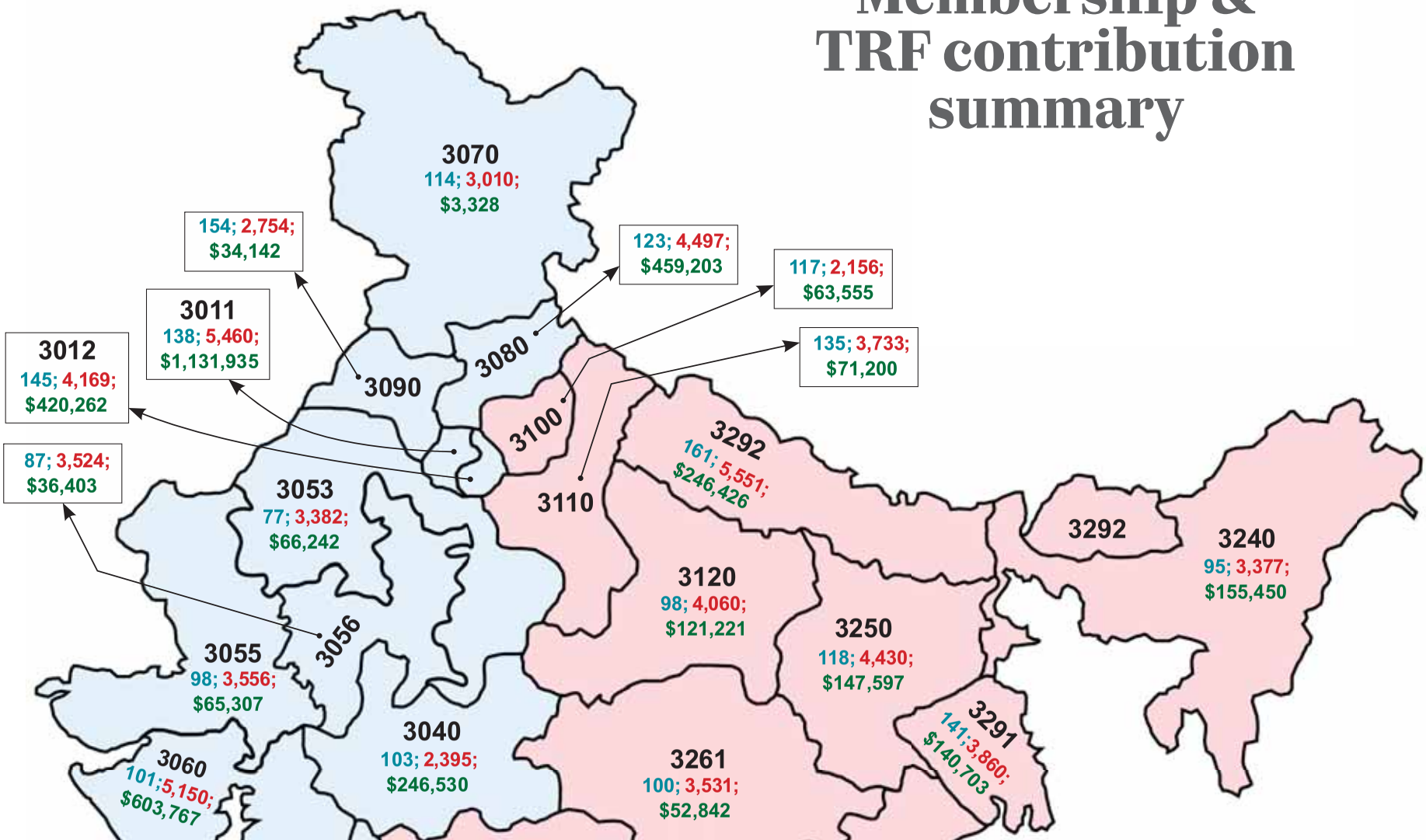

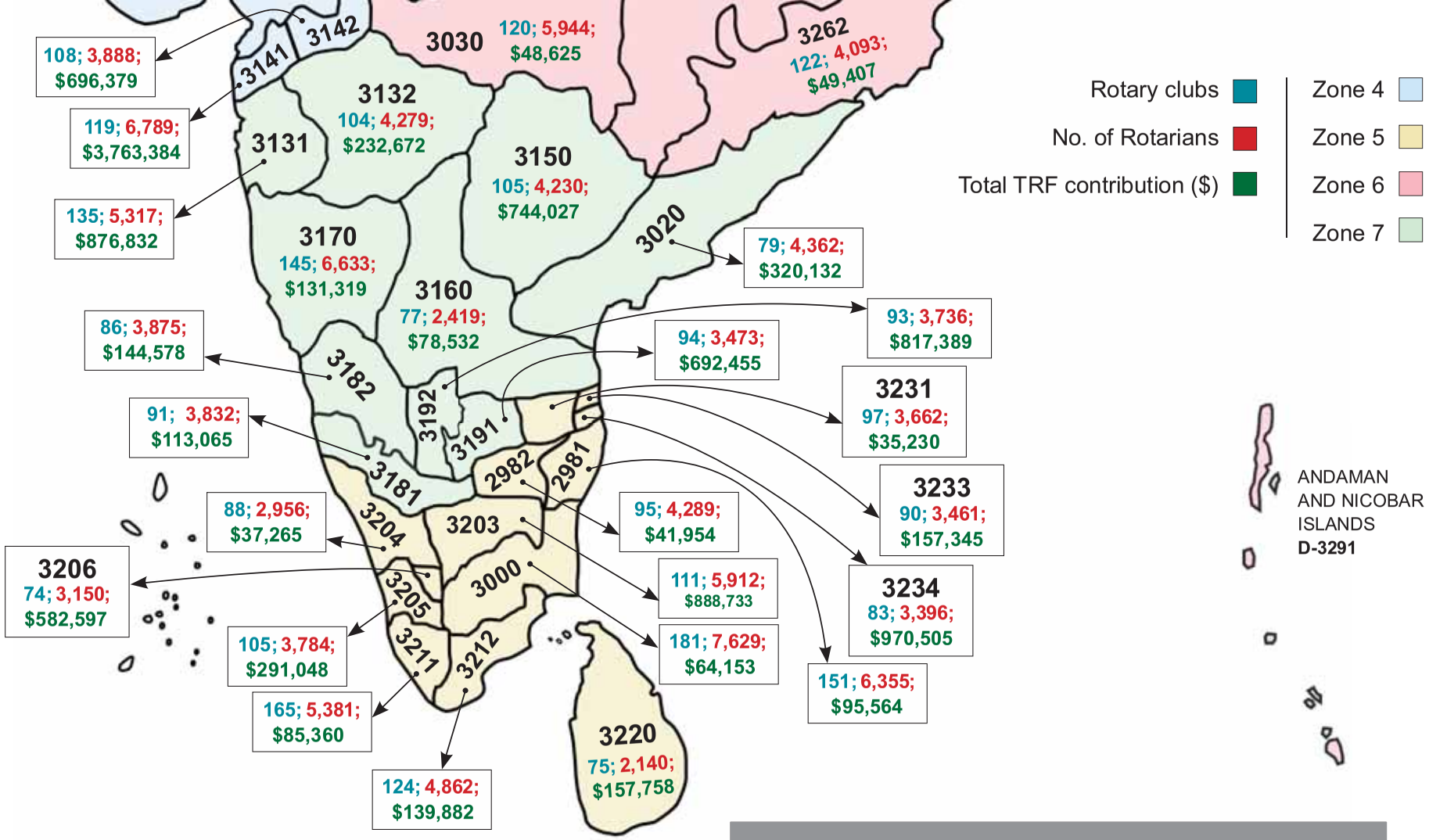

*Membership figures as on March 1, 2026.
*TRF contribution figures as on February 28, 2026.

Rotary worldwide

Rotary clubs	36,552	Rotary members	1,163,102
Rotaract clubs	9,441	Rotaract members	146,426
Interact clubs	19,262	Interact members	443,187
RCCs	14,311	As on March 19, 2026	

भारत से नाइजीरिया के लिए एक वीटीटी मिशन

टीम रोटरी न्यूज़

जनवरी में नाइजीरिया में आयोजित 15 दिवसीय मेगा स्वास्थ्य शिविर के दौरान भारत भर से 14 सर्जनों और दो स्वयंसेवकों की एक व्यावसायिक प्रशिक्षण टीम (वीटीटी) ने चिकित्सा और शल्य चिकित्सा उपचार प्रदान किए। इस टीम में विभिन्न चिकित्सा विशेषज्ञताओं के प्रतिनिधि शामिल थे और इसका नेतृत्व दंत सर्जन और रो ई मंडल 3204 पीडीजी डॉ संतोष श्रीधर ने किया, जबकि पीडीजी लॉरेंस ओकवोर ने नाइजीरिया में परियोजना समन्वयक (रो ई मंडल 9127) के रूप में कार्य किया।

यह शिविर एनुगु मंडल के इग्बो-एनू स्थित स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज और टीचिंग हॉस्पिटल में आयोजित किया गया था। विभिन्न बीमारियों से पीड़ित 1,800 से अधिक वंचित मरीजों को उन्नत चिकित्सा देखभाल प्रदान की गई, जिसमें लगभग 800 व्यक्तियों की शल्य चिकित्सा भी शामिल थी। श्रीधर ने बताया कि कई मरीजों के लिए यह मिशन पहली बार था, जब उन्हें विशेष चिकित्सा और शल्य चिकित्सा उपचार प्राप्त करने का अवसर मिला।

उन्होंने आगे कहा, 2020 और 2023 में नाइजीरिया में वीटीटी कार्यक्रमों में भाग लेने के बाद, मैंने इस पहल की परिवर्तनकारी क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से देखा है - यह उन समुदायों के लिए भी फायदेमंद है, जिनकी सेवा की जा रही है, और उन पेशेवरों के लिए भी, जो इसमें शामिल हैं।

वीटीटी मिशन को जनवरी 2025 में वैश्विक अनुदान प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया गया था और जून में टीआरएफ द्वारा इसे स्वीकृति मिल गई। इस कार्यक्रम को भारत में रो ई मंडल 3203

पीडीजी संतोष श्रीधर (बीच में), अपने वीटीटी सदस्यों के साथ, नाइजीरियाई डॉक्टरों को चिकित्सा उपकरण सौंपते हुए।

और 3234, तथा नाइजीरिया के मंडलों 9127 और 9142 की मंडल-निर्धारित निधियों से उदार समर्थन प्राप्त हुआ।

इस अनुदान में वीटीटी सदस्यों की अंतरराष्ट्रीय यात्रा और लॉजिस्टिक्स; आवश्यक चिकित्सा, शल्य, दंत और नेत्र संबंधी उपकरणों की खरीद और दान; ऑपरेशन थिएटरों की स्थापना और उन्नयन; तथा स्थानीय डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों के लिए क्षमता निर्माण शामिल था।

इस मिशन के दौरान, आगंतुक टीम ने दंत चिकित्सा कुर्सियाँ, दांत निकालने और सफाई के उपकरण, डिजिटल पोर्टेबल एक्स-रे मशीनें, मोतियाबिंद सर्जरी के उपकरण और नेत्र विज्ञान संबंधी प्रक्रियाओं के लिए ऑपरेटिंग माइक्रोस्कोप स्थापित किए। उन्होंने सामान्य सर्जरी, ईएनटी, स्त्री रोग और ऑर्थोपेडिक्स के लिए संपूर्ण शल्य चिकित्सा और एनेस्थीसिया उपकरण भी उपलब्ध कराए।

एनुगु जिले, नाइजीरिया के राज्य अस्पताल में ऑपरेशन थिएटर स्थापित करने के बाद वीटीटी सदस्य।

स्थानीय डॉक्टर और इंटर्न एक दंत प्रक्रिया सीखते हुए, दंत शल्य चिकित्सक डॉ सी के असोकन एक मरीज का उपचार करते हुए।

स्थानीय डॉक्टरों, इंटर्न्स, मेडिकल छात्रों, नर्सों और पैरामेडिकल स्टाफ ने भारतीय टीम द्वारा आयोजित सर्जिकल प्रदर्शनों में भाग लिया और अपने निर्णय-निर्धारण कौशल को मजबूत करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण सत्रों तथा नैदानिक चर्चाओं में भी हिस्सा लिया।

श्रीधर ने कहा, विभिन्न विशेषज्ञताओं में कुछ उपकरण और प्रक्रियाएं वहाँ के चिकित्सा पेशेवरों के लिए नई थीं, और वे उन्हें सीखने के लिए उत्सुक थे। उन्नत उपकरण उपलब्ध कराकर और उनके उपयोग का प्रदर्शन करके, हमें उम्मीद है कि हम उन्हें मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में मदद कर पाएंगे। ■

Go Green

ग्रीष्म 2026: दुनिया को एक ठंडी जगह बनाएं

प्रीति मेहरा

सामान्य से अधिक तापमान और लू चलने की संभावना जताई गई है। आप इससे निपटने के प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

इस साल भीषण गर्मी पड़ने की आशंका को लेकर कई चेतावनियाँ मिल रही हैं। *डाउन टू अर्थ* पत्रिका की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के मार्च-अप्रैल-मई के मौसमी पूर्वानुमान में चेतावनी दी गई है कि 2026 की गर्मी हिमालय क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों, पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिमी घाट के कुछ भागों में सामान्य से अधिक गर्म हो सकती है।

इसका मतलब है कि देश के अधिकांश हिस्सों में हमें सामान्य से अधिक अधिकतम तापमान का सामना करना पड़ेगा। और इससे भी चिंताजनक बात यह है कि रात का तापमान भी सामान्य से अधिक रहने की संभावना है, जिससे गर्मी का मौसम बेहद असहज हो जाएगा।

आईएमडी की एक चेतावनी में यह भी कहा गया है कि मार्च से मई के दौरान पूर्वी, पूर्व-मध्य, दक्षिण-पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्रों के कई हिस्सों तथा उत्तर-पश्चिम और पश्चिम-मध्य भारत के कुछ क्षेत्रों में सामान्य से अधिक लू के दिन देखे जा सकते हैं।

यह हमें इस सवाल तक ले आता है कि हम गर्मी के महीनों को कैसे संभालें और साथ ही अपने कार्बन फुटप्रिंट को यथासंभव कैसे कम करें। लेकिन सबसे पहले, मेरा दिल और दिमाग उन सभी लोगों के लिए दुखी है, जिनके पास इन भीषण महीनों में खुले में काम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। ऐसे अनेक कामगार हैं - माली, दिहाड़ी मजदूर, डिलीवरी एजेंट, ट्रैफिक पुलिस, सुरक्षा गार्ड, स्ट्रीट फूड विक्रेता... यह सूची अंतहीन लगती है। एयर-कंडीशंड कार्यालयों की सुविधा से दूर, कई लोगों के पास तो सिर पर पंखा तक नहीं होता। सीधे धूप में, कम आराम और बिना छाया के काम करने से थकावट, डिहाइड्रेशन या यहां तक कि जानलेवा हीटस्ट्रोक भी हो सकता है।

दुर्भाग्यवश, हमारे भारतीय शहर योजनाबद्ध तरीके से नहीं बनाए गए हैं और गर्मी से राहत जैसे मुद्दों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। अब यह व्यापक रूप से माना जाता है कि भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्र गर्मी को अपने भीतर रोक लेते हैं, जिसे शहरी ताप द्वीप (यूएचआई) प्रभाव के रूप में जाना जाता है। हमारे शहरों की झुग्गी-झोपड़ियों में, जहाँ अधिकांश श्रमिक रहते हैं, छतें ज्यादातर डामर, धातु या कंक्रीट से बनी होती हैं, और ये सामग्रियाँ सूर्य की गर्मी को अवशोषित और पुनः विकीर्ण करती हैं।

दरअसल, वैज्ञानिकों ने पाया है कि इन अनौपचारिक आवास कॉलोनियों में, घर के अंदर का तापमान अक्सर घर के बाहर के तापमान से 8-10°C अधिक होता है। यह स्थिति बाहर की गर्मी जितनी ही खतरनाक साबित होती है और घर में रहने वाले और ठंडी जगह तक पहुंच न पाने वाले बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है। अत्यधिक गर्मी के कारण होने वाली बीमारियां कामकाजी दिनों की हानि, चिकित्सा खर्च में वृद्धि और आय के नुकसान का कारण बनती हैं, जिससे कई लोग गरीबी और असहायता के कगार पर पहुंच जाते हैं।

यह अच्छी बात है कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने भीषण गर्मी से आबादी को होने वाले खतरे की गंभीरता को पहचानते हुए लू को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी मानता है कि शहरी गरीब जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं और उन्हें प्राथमिकता के आधार पर अनुकूलन उपायों की आवश्यकता है।

लेकिन केवल आधिकारिक मान्यता पर्याप्त नहीं है। हमें, एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में, अपनी भूमिका भी निभानी होगी, ताकि अपने आराम और प्रगति के साथ-साथ हम उस बड़ी आबादी के लिए भी कुछ कर सकें, जो संवेदनशील है और जिसे व्यापक स्तर पर राहत एवं बचाव उपायों की आवश्यकता है।

तो सबसे पहले, आइए देखें कि हम अपने शहरों में किन चीजों की वकालत कर सकते हैं, ताकि गर्मियों के महीने पूरी आबादी के लिए सहनीय बन सकें।

सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह सुनिश्चित करना है कि हमारे नगर प्रशासन हमारी हीट एक्शन प्लान्स (एचएपी) को लागू करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इनमें प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को लागू करना, जल निकायों और पार्कों (ब्लू और ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर) का विकास करना, भवन डिजाइनों में पैसिव कूलिंग सुनिश्चित करना, और हमारी संवेदनशील आबादी पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

नागरिकों के रूप में, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम अपने समुदायों में हरियाली बढ़ाने के लिए कदम उठाएं। हमें पार्कों के निर्माण, सड़कों के किनारे पेड़ लगाने और ग्रीन बेल्ट विकसित करने की वकालत करनी चाहिए। इससे लोगों को दोपहर के समय आराम करने के लिए पर्याप्त छाया मिलेगी और स्थानीय तापमान को कम करने में भी मदद मिलेगी।

हमें यह सुनिश्चित करने पर जोर देना चाहिए कि फुटपाथ हल्के रंगों के हों और ऐसे छिद्रयुक्त (पोरस) पदार्थों से बने हों, जो सतह द्वारा गर्मी के अवशोषण को कम करें और वर्षा जल को जमीन में समाने दें। यदि हमारे आसपास कोई झील, तालाब, कुआँ, पोखर या आर्द्रभूमि क्षेत्र है जिसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, तो हमें पहल करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसे उसकी मूल स्थिति में बहाल किया जाए, ताकि वह प्राकृतिक शीतलक के रूप में कार्य कर सके और क्षेत्र के शहरी सूक्ष्म-जलवायु को बेहतर बना सके।

यदि हम खुले में काम करने वाले श्रमिकों के लिए छायादार आश्रय स्थलों, पानी की उपलब्धता और आराम के लिए जगह की वकालत करते हैं, तो इससे स्थिति में सुधार करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, शहर में गर्मी से संबंधित चिकित्सा आपात स्थितियों के लिए तैयारी करना भी आवश्यक है।

हमें घरों में ठंडी छतें लगाने के लिए एक अभियान को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए सस्ते और सरल उपाय अपनाए जा सकते हैं, जैसे चूने से सफेदी, परावर्तक कोटिंग सामग्री, छत पर बगीचे और बांस की छतें। इन उपायों से छत की सतह का तापमान 15-20°C तक और घर के अंदर का तापमान 8-10°C तक कम किया जा सकता है।

अब आइए देखते हैं कि हम अपने ऊर्जा उपयोग को कैसे कम कर सकते हैं। व्यक्तिगत तौर पर, सबसे पहले गर्मी के मौसम में ऐसे ठंडे कपड़े पहनें जो पसीना सोखकर हमें ठंडा रखें। एयर कंडीशनर को 24 डिग्री या उससे अधिक तापमान पर चलाने की कोशिश करें, क्योंकि यह सबसे अधिक ऊर्जा-कुशल है और बिजली के बिल को भी नियंत्रण में रखने में मदद करता है। जब पंखे का उपयोग न हो रहा हो तो उन्हें बंद कर दें ताकि अनावश्यक बिजली की खपत कम हो, क्योंकि गर्मी के महीनों में ऊर्जा की कमी होती है और मांग अधिक होती है।

नागरिकों के रूप में, हमें अधिक सार्वजनिक पार्कों के निर्माण के लिए समर्थन करना चाहिए, सड़कों के किनारे पेड़ लगवाने चाहिए, और हरित पट्टियों की स्थापना को बढ़ावा देना चाहिए।

सबसे ज़रूरी है कि शरीर में पानी की कमी न होने दी जाए। छाछ, नारियल पानी और नींबू का रस पीना बहुत अच्छा रहता है, इससे शरीर तरोताज़ा रहता है। हमारे यहाँ कुछ मशहूर पारंपरिक पेय भी हैं: सत्तू शरबत (काले चने और बेसन से बना), लस्सी, कांजी, आम और बेल पन्ना (आम और बेल का रस)। लोग इनके ठंडक देने वाले गुणों पर भरोसा करते हैं। खाना भी हल्का होना चाहिए। दक्षिणी और उत्तरी दोनों ही राज्यों में दही से बने कुछ मशहूर व्यंजन गर्मियों में बहुत पसंद किए जाते हैं। यदि आप सौर ऊर्जा से खाना बना सकते हैं, तो इससे बेहतर और क्या हो सकता है।

गर्मी के मौसम में, कई लोग फिटनेस या मनोरंजन के लिए तैरना शुरू कर देते हैं, दिन में कई बार स्नान करते हैं और भीषण गर्मी के घंटों के दौरान बाहर जाने से बचते हैं। यह सब कारगर है, लेकिन जैसा कि मैंने शुरुआत में कहा था, बेहतर शहरी वातावरण के लिए प्रयास करना और ऐसे बदलावों की वकालत करना जो उन लोगों को प्रभावित कर सकें जो अपने लिए आवाज़ उठाने की स्थिति में नहीं हैं, आपके योगदान को और अधिक महत्वपूर्ण बना देगा।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

RID 3011

रोटरी क्लब गुड़गांव कुतुब एन्क्लेव

सिकंदरपुर के सरकारी माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय में छात्रों के लिए एक नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें नेत्र विशेषज्ञ डॉ दिनेश सक्सेना और सामुदायिक स्वास्थ्य निदेशक ने परियोजना का समन्वय किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

RID 3040

रोटरी क्लब सागर

पटकुई स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में वंचित परिवारों के 25 बच्चों को स्वेटर दिए गए। रोटेरियन सदस्यों ने एक स्थानीय मेले में दुकानदारों को 5,000 कपड़े के थैले वितरित किए, जो एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक के खिलाफ एक अभियान का हिस्सा था।

RID 3053

रोटरी क्लब अजमेर मेट्रो

तीन नर्सिंग कॉलेजों के लगभग 250 विद्यार्थियों ने पोलियो जागरूकता रैली में भाग लिया, जिसे जे एल एन मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ अनिल समरिया ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर डीजी निशा शेखावत, क्लब अध्यक्ष ज्योत्सना चंदवानी और सी एम एच ओ ज्योत्सना रंगा भी उपस्थित थीं।

RID 3056

रोटरी क्लब सीकर

सीकर के राठी अस्पताल में मासिक शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें विभिन्न विशिष्टताओं के तहत नि:शुल्क शल्य चिकित्सा की जाती है। नवीनतम शिविर में सात सदस्यीय चिकित्सा दल द्वारा 10 नि:शुल्क सर्जरी की गईं।

RID 3030

रोटरी क्लब नागपुर मेट्रो

तलोदी गांव में आयोजित एक नैदानिक शिविर में 25 डॉक्टरों द्वारा 600 से अधिक मरीजों की जांच की गई। यह शिविर धनाश्री नगरी सहकारी पट संस्था के सहयोग से आयोजित किया गया था।

RID 3070

रोटरी क्लब कपूरथला डाउनटाउन

सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कंजली में एक ई-लर्निंग स्टेशन स्थापित किया गया। स्कूल के प्रिंसिपल मनजीत सिंह ने क्लब अध्यक्ष योगेश तलवार को प्रशंसा-पत्र प्रदान किया। इसके अलावा, कई स्कूलों में हैंडवॉश स्टेशन भी दान किए गए।

RID 3060

रोटरी क्लब बड़ौदा सयाजीनगरी

समा स्थित नूतन विद्यालया में नेत्र जांच शिविर के माध्यम से 275 विद्यार्थियों की जांच की गई और जिन विद्यार्थियों को चश्मे की आवश्यकता थी, उन्हें जल्द से जल्द चश्मे उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया गया।

गाउट को समझना

गीता मथाई

मध्य आयु के लगभग 0.5-1 प्रतिशत पुरुष रात के बीच अचानक बड़े पैर के अंगूठे, टखने, घुटने, कोहनी या कलाई में असहनीय दर्द के साथ जाग जाते हैं। प्रभावित जोड़ सूजा हुआ, गर्म और लाल हो सकता है। यह स्थिति अक्सर उलझन पैदा करती है, क्योंकि न तो बुखार होता है और न ही जोड़ में पहले कोई चोट लगी होती है। लोग अक्सर घरेलू उपाय जैसे गर्म पानी, बर्फ या दर्दनिवारक दवाओं का सहारा लेते हैं। हैरानी की बात यह है कि दर्द एक-दो दिन में उतनी ही अचानक गायब हो जाता है जितनी अचानक वह शुरू हुआ था। लेकिन, कुछ हफ्तों या महीनों बाद, इसी तरह का असहनीय दर्द फिर से रात में अचानक हो सकता है।

ये दौरे गाउट के विशिष्ट लक्षण हैं। पहले इसे अभिजात वर्ग और अमीर लोगों की बीमारी माना जाता था, क्योंकि इसके हमले अक्सर भारी, उच्च-प्रोटीन भोजन (विशेषकर रेड मीट, जिसमें प्यूरीन अधिक होता है) और शराब के सेवन के बाद होते थे। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि गाउट रक्त में यूरिक एसिड के बढ़े हुए स्तर के कारण होता है।

दुनिया भर में गाउट के मामले बढ़ रहे हैं, जिनमें सबसे तेज़ वृद्धि भारत, चीन और थाईलैंड में देखी जा रही है। यह अब भारत की लगभग 0.3 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करता है। आधुनिक जीवनशैली, जिसमें भरपूर भोजन, व्यायाम की कमी तथा मोटापा और मधुमेह की बढ़ती समस्या शामिल है, इस वृद्धि में योगदान दे रही है।

पुरुष इससे अधिक प्रभावित होते हैं, जबकि महिलाएं रजोनिवृत्ति तक अपने हार्मोन, मुख्य रूप से एस्ट्रोजन द्वारा अपेक्षाकृत सुरक्षित रहती हैं।

आहार में अधिकता और शराब का सेवन ही गाउट का एकमात्र कारण नहीं है। गठिया होने की संभावना काफी हद तक आनुवंशिक होती है। यह रोग कई जीनों के कारण वंशानुगत होता है, न कि केवल एक जीन के कारण। यदि आपके किसी करीबी रिश्तेदार को गाउट है, तो आपको भी यह रोग होने की लगभग 30 प्रतिशत संभावना होती है। हालांकि, जीन वास्तव में सक्रिय होते होंगे या नहीं, यह काफी हद तक जीवनशैली और पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करता है।

शरीर में कोशिकाओं के अधिक नष्ट होने की स्थिति में, आहार में अधिकता के बिना भी यूरिक एसिड का स्तर बढ़ सकता है। ऐसा ल्यूकेमिया और सिकल सेल रोग जैसी स्थितियों में देखा जाता है। कुछ दवाओं, जैसे डायूरेटिक्स, कम खुराक वाली एस्पिरिन, लेवोडोपा (पार्किंसन रोग की दवा), प्रतिरक्षादमनकारी दवाएँ और कैंसर की कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव के रूप में भी इसका स्तर बढ़ सकता है।

अधिकांशतः, गुर्दे कुशलतापूर्वक यूरिक एसिड को शरीर से बाहर निकाल देते हैं। लेकिन जब इसका स्तर सामान्य सीमा (लगभग 6-7 mg/dL) से अधिक हो जाता है, तो अतिरिक्त यूरिक एसिड जोड़ों के द्रव में जमा होने लगता है। यूरिक एसिड के क्रिस्टल नुकीले और सुई जैसे होते हैं। ये जोड़ों की उपास्थि (कार्टिलेज) को नुकसान पहुँचाते हैं और जोड़ों के भीतर दबाव बढ़ा देते हैं। इसके परिणामस्वरूप शरीर में लालिमा, सूजन और तीव्र दर्द जैसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती है।

यदि इसका इलाज न किया जाए, तो समय के साथ दौरे बढ़ सकते हैं। दर्द बना रह सकता है और गंभीर गाउट में बदल सकता है, जिससे जोड़ों में सूजन और विकृति आ सकती है। यह स्थिति कभी-कभी ऑस्टियोआर्थराइटिस जैसी लग सकती है। यूरिक एसिड के क्रिस्टल त्वचा के नीचे जमा होकर गाउटी टोफाई के रूप में दिखाई दे सकते हैं, जो आमतौर पर कान, उंगलियों या पैर की उंगलियों पर नजर आते हैं। ये जमाव रोग की पहचान के लिए महत्वपूर्ण संकेत देते हैं। अतिरिक्त यूरिक एसिड गुर्दे में भी जमा होकर

दर्दनाक पथरी बना सकता है और गंभीर मामलों में अंततः गुर्दे को नुकसान पहुंचा सकता है।

हर व्यक्ति जिसमें यूरिक एसिड का स्तर अधिक होता है, उसमें लक्षण दिखाई दें, यह आवश्यक नहीं है। कुछ लोग जीवन भर पूरी तरह से लक्षण-मुक्त रहते हैं और उनके बढ़े हुए यूरिक एसिड का पता केवल नियमित रक्त जांच के दौरान ही चलता है।

यदि गाउट का संदेह हो, तो यूरिक एसिड के स्तर को मापने वाले रक्त परीक्षण, यूरिक एसिड क्रिस्टल दिखाने के लिए जोड़ों के द्रव का एस्पिरेशन, एक्स-रे, या कभी-कभी साइनोवियल बायोप्सी के माध्यम से निदान की पुष्टि की जा सकती है। इसी तरह का जोड़ों का दर्द और सूजन 'स्यूडोगाउट' में भी हो सकता है। इस स्थिति में जोड़ों के द्रव में पाए जाने वाले क्रिस्टल यूरिक एसिड के बजाय कैल्शियम लवण के होते हैं।

तीव्र दर्द के दौरान आमतौर पर दवाओं से राहत मिल जाती है। उपचार का प्रभाव हर व्यक्ति पर अलग-अलग होता है। कुछ एनएसएआईडी (नॉन-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी ड्रग्स) कुछ व्यक्तियों में बेहतर काम करती हैं। इंडोमेथेसिन और कोल्चिसिन जैसी दवाएँ अक्सर विशेष रूप से प्रभावी होती हैं। गंभीर मामलों में, प्रभावित जोड़ में स्टेरॉयड के इंजेक्शन की भी आवश्यकता हो सकती है। तीव्र दर्द कम होने के बाद, रक्त में यूरिक एसिड का स्तर कम करने के लिए एलोप्यूरिनॉल जैसी दवाएँ नियमित रूप से दी जा सकती हैं।

हालांकि उपचार का मुख्य आधार दवाइयाँ ही हैं, फिर भी कुछ सरल उपाय अस्थायी रूप से राहत प्रदान कर सकते हैं। प्रभावित जोड़ को गर्म पानी में सेंधा नमक मिलाकर भिगोने से ऊतकों को आराम मिल सकता है, और इसके बाद बर्फ लगाने से सूजन कम करने में मदद मिलती है।

जीवनशैली में बदलाव भी हमलों की गंभीरता और आवृत्ति को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

- शरीर का आदर्श वजन बनाए रखें। सामान्यतः लगभग 23 का बीएमआई (बॉडी मास इंडेक्स), जो वजन (किलोग्राम) को ऊँचाई (मीटर) के

वर्ग से विभाजित करके निकाला जाता है, उचित माना जाता है। लेकिन जब बीएमआई 35 से अधिक हो जाता है, तो गाउट का खतरा काफी बढ़ जाता है।

- शराब का सेवन कम करें। विशेष रूप से बीयर और एक बार में अधिक मात्रा में शराब पीना गाउट के दौरे की संभावना को बढ़ा देता है।
- कार्बोहाइड्रेट का सेवन बढ़ाएं और लाल मांस का सेवन कम करें। शाकाहारियों को यह याद रखना चाहिए कि कुछ सब्जियों, जैसे फूलगोभी और पालक में प्यूरीन की मात्रा अधिक होती है।
- कॉफी का सेवन रक्त में यूरिक एसिड के स्तर को कम करने में मदद कर सकता है।
- विटामिन सी, चाहे यह भोजन से प्राप्त हो या सप्लीमेंट के रूप में लिया जाए, यूरिक एसिड के स्तर को कम कर सकता है। हालांकि, प्रतिदिन 500 मिलीग्राम से अधिक की गोली लेने से दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इसलिए विटामिन सी को प्राकृतिक रूप से प्राप्त करना अधिक सुरक्षित है, उदाहरण के लिए, पानी में आधा नींबू निचोड़कर पीना या संतरे और केले जैसी फलों का सेवन करना।
- प्रतिदिन लगभग चार लीटर पानी पिएं। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से शरीर से यूरिक एसिड बाहर निकलता है और गुर्दे की पथरी बनने से भी बचाव होता है।
- जैम, सॉस और फलों के रस में आमतौर पर मिठास के लिए फ्रुक्टोज़ मिलाया जाता है। यह गाउट का एक प्रमुख कारण है क्योंकि यकृत में मेटाबॉलिज्म से यूरिक एसिड का उत्पादन बढ़ जाता है। फ्रुक्टोज युक्त पेय पदार्थ, सोडा और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन गाउट के खतरे को लगभग 85 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

सही उपचार और समझदारीपूर्ण जीवनशैली में बदलाव के साथ, गाउट को आमतौर पर अच्छी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे लोग सक्रिय और दर्द-मुक्त जीवन जी सकते हैं।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

शब्दों की दुनिया 100

तथ्य पर आधारित कल्पना

क्या हम 'शब्दों की दुनिया' के 100वें लेख का जश्न – जो सुनने में अजीब पर सच है! – मेरे पसंदीदा लेखकों में से एक के साथ मना सकते हैं?

मैंने अमिताव घोष की सभी पुस्तकें तो नहीं पढ़ी हैं, लेकिन मैंने जो भी पढ़ी हैं, मुझे वे बहुत पसंद आई हैं। निश्चित रूप से यह मेरी व्यक्तिगत पसंद है, लेकिन उनका दृष्टिकोण, और तथ्यों पर आधारित कल्पना का निर्माण करना, अद्भुत और प्रेरणादायक है। निबंधों का उनका 2025 का संग्रह, *वाइल्ड फिक्शन्स*, बुकशॉप्स पर आने के समय से ही मेरी मेज पर रखा हुआ था, लेकिन जब मैंने *गन आइलैंड*, जो 2019 में प्रकाशित हुई थी और हाल ही में मुझे उपहार में मिली थी, को पढ़ा, तब मैंने उनके कथेतर लेखन को भी साथ में पढ़ना शुरू किया। और यह जोड़ी कितनी शानदार साबित हुई! गन आइलैंड में वे जिन बातों का ज़िक्र करते है, वे पिछले कुछ वर्षों में प्रकाशित और *वाइल्ड फिक्शन्स* में संकलित लेखों द्वारा प्रमाणित होती हैं, जो सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति लेखक की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

संध्या राव

आप *गन आइलैंड* को एक तरह से *द हंग्री टाइड* (2004) का सीक्वल कह सकते हैं; ये दोनों पुस्तकें सुंदरबन और उस क्षेत्र से जुड़ी किंवदंतियों से संबंधित हैं। सुंदरबन (जिसे अक्सर सुंदरबंस भी कहा जाता है) एक विशाल मैंग्रोव वन है, जो जैव विविधता से समृद्ध है और पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में दस हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। यह बंगाल की खाड़ी और गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के संगम से बने डेल्टा में स्थित है। यहाँ के द्वीपों और कीचड़ के मैदानों में कई धाराएँ एक-दूसरे को काटती हैं, जहाँ समुद्र के ज्वार-भाटे के अनुसार रात में उच्च ज्वार और दिन में निम्न ज्वार आता है। परिणामस्वरूप, यहाँ का सारा पानी खारा है। यहीं रॉयल बंगाल टाइगर घूमता और तैरता है - लेकिन हम नहीं जानते कि वह और बहुत सारी अन्य लुप्तप्राय प्रजातियाँ यहाँ कब तक राज कर पाएंगी। इसके अलावा, यहाँ चक्रवातों से होने वाले खतरे और तबाही का डर भी बना रहता है।

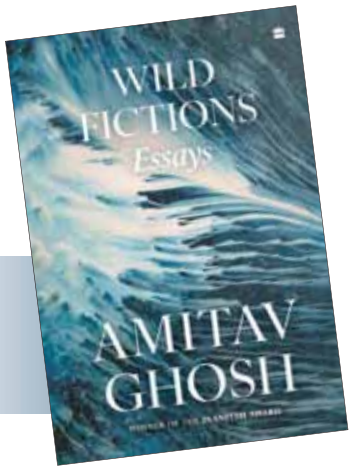

गन आइलैंड में, हमारी मुलाकात *द हंग्री टाइड* के कुछ पात्रों से होती है; जहाँ पहली कहानी सुंदरबन की मबोन बीबीफ और मशाह जोंगलीफ के इर्द-गिर्द घूमती है, वहीं *गन आइलैंड* मबंदुकी सौदागरफ (गन मर्चेंट) की कहानी बयां करती है और सांपों की देवी 'मानसा देवी' की लोककथा से प्रेरणा लेती है। हमें यहाँ अमिताव घोष का वही पुराना और चिर-परिचित अंदाज़ देखने को मिलता है, जिसमें वे लोककथाओं, आस्था, समकालीन वास्तविकताओं, जलवायु परिवर्तन, प्रवासन के पैटर्न, स्थानीय और वैश्विक मुद्दों, मछुआरों और दार्शनिकों, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं को एक साथ पिरोते हैं... *गन आइलैंड* एक विस्तृत और विविध दुनिया का चित्रण करती है, एक ऐसी दुनिया जहाँ प्राकृतिक शक्तियाँ समय और स्थान की सीमाओं से परे जाकर समान रूप से प्रभाव डालती हैं।

हमारा मुख्य पात्र, दीनानाथ 'दीन' दत्त, अमेरिका में रहने वाला ऐन्टीक किताबों का व्यापारी है। संयोगवश हुई कई मुलाकातों और संदर्भों के कारण वह ङ्गन मर्चेंटफ की कथा पर शोध करने लगता है। यही से उसे सुंदरबन में 'मानसा देवी' के मंदिर जाने की प्रेरणा मिलती है, जहाँ उसके साथ तकनीकी रूप से दक्ष एक मछुआरे का बेटा टीपू साथ जाता है। दीन मंदिर की दीवारों पर उकेरे गए कुछ प्रतीकों को देखकर उत्सुक हो जाता है और जब वह उन्हें देख रहा होता है, तभी मंदिर की देखभाल करने वाले एक लड़के, रफी, के अचानक आ जाने से वह सांप से कांटे जाने से बच जाता है। जब वह अमेरिका वापस लौटता है, तो दीन अपनी एक पुरानी दोस्त और गुरु, प्रोफेसर गियासिंटा 'सिंटा' शियावोन से मिलता है, जो वेनिस के इतिहास की विद्वान हैं। वही अंततः उसे बंदुकी सौदागर की कथा को समझने और सुलझाने में मदद करती हैं। सिंटा को भी उस दुख से मुक्ति मिलती है जिसे वे अपने भीतर समेटे हुए थीं, और दीन को पता चलता है कि वेनिस में इतने सारे बंगाली बोलने वाले (मुख्यतः बांग्लादेशी) शरणार्थी कैसे और क्यों रह रहे हैं।

इस तथ्य की पुष्टि *वाइल्ड फिक्शन्स* में प्रकाशित एक लेख 'द ग्रेट अपरुटिंग: माइग्रेशन एंड डिस्प्लेसमेंट इन एन एज ऑफ प्लेनेटरी क्राइसिस' से भी होती है। यह लेख पहली बार 2021 में *द मैसाचुसेट्स रिव्यू* में

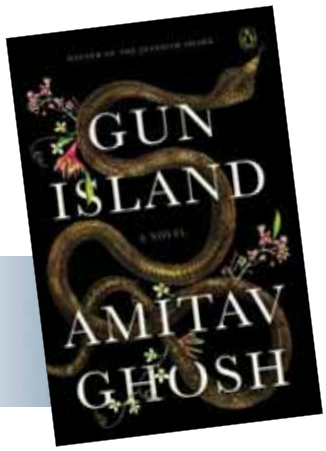

प्रकाशित हुआ था। इस निबंध में, घोष लिखते हैं कि ''...उनमें से कई (प्रवासी) कहते हैं कि उनकी यात्रा का सबसे बुरा हिस्सा सड़क या समुद्र पर बिताया गया समय नहीं है, बल्कि वे महीने और साल हैं जो उन्होंने यूरोपीय प्रवासी शिविरों में बिताए हैं। उन शिविरों में प्रतीक्षा करने और सोने के अलावा कुछ और करने को नहीं होता: इस बात से बहुत कम सांत्वना मिलती है कि आपको खाना और रहने की जगह और भत्ता दिया जा रहा है; बल्कि वह प्रतीक्षा और निष्क्रियता होती है जो मनोबल को तोड़ देती है।''

गन आइलैंड की कहानी का सारांश प्रस्तुत करना कठिन है। इस संबंध में, दीन और सिंटा के बीच हुई एक बातचीत को याद करना दिलचस्प है। जब दीन उस किंवदंती को सिर्फ एक कहानी कहता है, तो सिंटा उसे टोकते हुए कहती हैं: सत्रहवीं सदी में कोई भी किसी चीज़ को 'सिर्फ एक कहानी' नहीं कहता था, जैसा हम आधुनिक लोग कहते हैं। उस समय के लोग समझते थे कि कहानियाँ उन आयामों को छू सकती हैं जो सामान्य सीमाओं से परे हैं, यहाँ तक कि मानवीय सीमाओं से भी परे। वे जानते थे कि केवल कहानियों के माध्यम से ही हमारे अस्तित्व के सबसे गहरे रहस्यों तक पहुँच सकते है वह आगे तर्क देती हैं: क्या यह संभव नहीं कि कहानी कहने की क्षमता मानवीय ना होकर हमारे पाश्विक-स्वरूप का अंतिम अवशेष हो? एक ऐसी निशानी, जो उस समय से बची हो जब भाषा से पहले हम अन्य जीवों की तरह संवाद करते थे? यह विचारोत्तेजना के क्षेत्र में समय और स्थान का एक अद्भुत संगम है।

मेरे विचार में, यह विशुद्ध अमिताव घोष की शैली है। वे आपको एक कहानी सुनाते हैं, उनकी शैली औपचारिक होती है, और इस प्रक्रिया में वे आपको अपने आस-पास की दुनिया के प्रति सचेत कर देते हैं। वास्तविकता के प्रति। उन दुनियाओं की वास्तविकता, जो मौजूद हैं, और शायद उन दुनियाओं की भी, जो है ही नहीं। समीक्षाओं के अनुसार, उनकी नवीनतम पुस्तक, *घोस्ट-आई*, भी इसी तरह की किसी विषय की खोज करती प्रतीत होती है। लेकिन जहाँ तक हमारी जानी-पहचानी दुनिया का सवाल है, वह ऐसी दुनिया है जिसे उन्होंने स्वयं शोधित, परीक्षित और अनुभव किया है। उदाहरण के लिए, *वाइल्ड फिक्शन्स* में 'द टाउन बाय द सी' निबंध की बात करते है। वे 1 जनवरी, 2005 को पोर्ट ब्लेयर के निर्मला स्कूल कैंप में हैं, 24 दिसंबर की उस सुनामी के कुछ ही दिनों बाद जिसने दुनिया के इस हिस्से को तहस-नहस कर दिया था। कुछ पैराग्राफ पहले उद्धृत यूरोपीय शरणार्थी शिविरों में प्रवासियों की प्रतीक्षा की गूँज के बारे में वे लिखते हैं: शरणार्थियों ने पिछले तीन दिन शिविर में व्याकुलता से प्रतीक्षा करते हुए बिताए थे, और उस समय में किसी ने उनसे यह नहीं पूछा था कि वे कहाँ जाना चाहते हैं या कब; उनमें से किसी को भी इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि उनका क्या होगा। अधर में लटके होने के इस अहसास से उनका धैर्य भी जवाब दे चुका था।

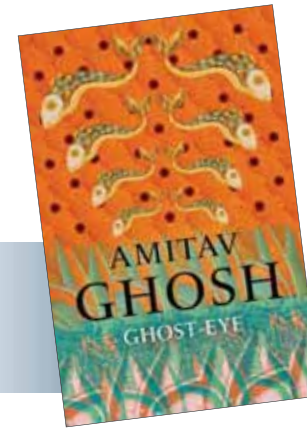

मुद्दा न तो अभाव का था और न ही कठिनाई का... वह अनिश्चितता थी जो असहनीय थी।

दोनों पुस्तकें अपने-अपने तरीके से एक ही व्यापक विषय को दोहराती हैं कि प्राकृतिक घटनाएँ ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, जिनसे दुनिया की एक छोटी-सी आबादी को अत्यधिक लाभ हुआ है, जबकि अधिकांश आबादी ने इसकी भारी कीमत चुकाई हैं। आज जब हम अपने आसपास देखते हैं और समझते हैं कि क्या चीज़ें हमारे विचारों पर हावी हैं, तो यह बात काफी हद तक सच लगती है। आप यह भी दावा कर सकते हैं कि अमिताव घोष को पढ़ना, दुनिया को पढ़ने जैसा है। *घोस्ट-आई* को मिली-जुली समीक्षाएं मिली हैं। हालाँकि, *डाउन टू अर्थ* वेबसाइट पर आशुतोष कुमार ठाकुर जो कहते हैं, वह मदुनिया को पढ़नेफ के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करता है। उपन्यास को मसह-अस्तित्वफ पर आधारित बताते हुए वह लिखते हैं: घोष समाधान नहीं देते। वे 'ध्यान' देना सिखाते हैं। अपने शांत, सधे हुए लेखन एवं अर्थ को जबरदस्ती थोपने से इनकार करने वाली शैली के माध्यम से, *घोस्ट-आई* हमें याद दिलाता है कि साहित्य अब भी सुनने, ठहरने और फिर से देखने की कला सिखाने का एक माध्यम हो सकता है। यही साहित्य का, अच्छे साहित्य का स्थान है। इसीलिए हमें किताबों, लेखकों, विचारकों, पर्यवेक्षकों और चिंतन करने वालों की आवश्यकता है। इसीलिए हमें परिष्कृत नजरिए से पढ़ना चाहिए... ताकि हम सुन सकें, ठहर सकें, और एक बार फिर से देखना सीख सकें।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

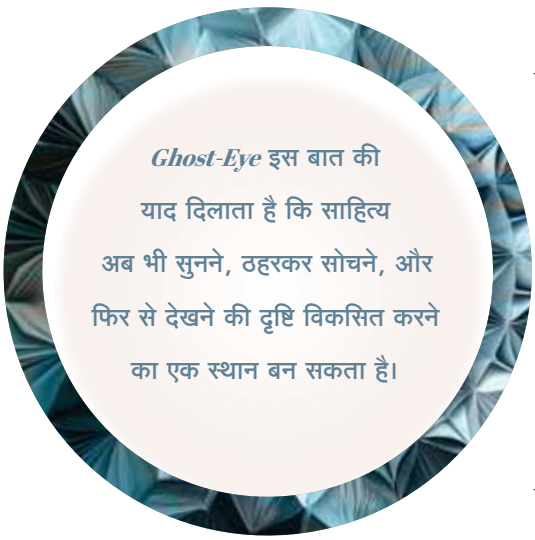

RID 3100

रोटरी क्लब मुज़फ्फरनगर

डीजी नितिन अग्रवाल ने अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए एक पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिसमें उत्तर प्रदेश के खतौली क्षेत्र के सभी 17 क्लबों ने भाग लिया। इस रैली को मैक्स सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल, वैशाली, अलकनंदा ब्लड सेंटर और इनर व्हील क्लब का समर्थन प्राप्त था।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

RID 3205

रोटरी क्लब पेरुम्बावूर हेरिटेज

पेरुमाबवूर के असरामम हाई स्कूल और गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल में ए जी इयुजुब जैकब और नगर पालिका उपाध्यक्ष एनी मार्टिन द्वारा संयुक्त रूप से *प्रोजेक्ट गिफ्ट ऑफ रीडिंग* का उद्घाटन किया गया। पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए छात्रों को पुस्तकें वितरित की गईं।

RID 3234

रोटरी क्लब अन्ना नगर मद्रास

मराइमलार नगर स्थित आशियाना शुभम सीनियर सिटीजन कम्युनिटी में आयोजित कार्डियोलॉजी शिविर में लगभग 70 बुजुर्ग मरीजों की ईसीजी, इको, ब्लड शुगर, बीपी, बीएमआई आदि जांच की गई।

RID 3240

रोटरी क्लब एस्पाईरिंग अगरतला

त्रिपुरा शांतिनिकेतन मेडिकल कॉलेज के सहयोग से मशरूम की खेती पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। क्लब की सदस्यों और राज्य कृषि विभाग की सहायक निदेशक देबिका भौमिक ने 28 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया।

RID 3120

रोटरी क्लब कुशीनगर

कसिया के सुभाष चौक पर आयोजित सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के दौरान 50 दोपहिया वाहन चालकों को मुफ्त हेलमेट दिए गए। साहिल बजाज एजेंसी के सहयोग से आयोजित इस शिविर का उद्घाटन क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी बलवंत सिंह ने किया।

RID 3291

रोटरी क्लब जोधपुर गार्डन्स कोलकाता

आरसीसी सिसिर बागान थालिया में आयोजित महिला फुटबॉल प्रदर्शनी मैच में डीजीई तापस भट्टाचार्य मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर पीडीजी मुकुल सिन्हा और पीपी देबी प्रसाद बसु भी उपस्थित थे।

RID 3262

रोटरी क्लब भुवनेश्वर मीडोज़

हरिजन साही बस्ती, जो एक वंचित क्षेत्र है, में एचआईवी/एड्स जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 100 महिलाओं तक पहुंच बनाई गई।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

ब्रांडिंग को लेकर इतना शोर

LBW

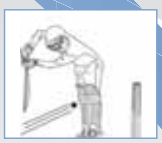

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

लेखक कहता है कि 75 साल की उम्र में भी उसे ब्रांड का विचार पूरी तरह समझ नहीं आता। 1960 के दशक तक ब्रांड का मतलब सिर्फ उस उत्पाद के निर्माता का नाम होता था, जैसे एटलस साइकिल, सनलाइट साबुन, उषा सिलाई मशीन आदि। ये केवल उत्पादों के नाम थे, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। लेकिन 1970 के दशक में ब्रांड शब्द का अर्थ बदल गया और ब्रांडिंग जैसा नया विचार सामने आया। इस समय मार्केटिंग का चलन बढ़ा, जो सिर्फ सामान बेचने से अलग था। अब लोग सिर्फ सेल्समैन नहीं रहे बल्कि मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव बन गए। मार्केटिंग का मतलब था किसी उत्पाद की एक खास छवि तैयार करना यानी ब्रांडिंग करना। अब जूते और साबुन सिर्फ बेचे नहीं जाते थे बल्कि विज्ञापनों के जरिए उन्हें इस तरह प्रस्तुत किया जाता था कि लोगों को उनके ऐसे गुणों पर विश्वास हो जाए जो असल में होते भी नहीं थे।

लेखक कहते है कि अर्थशास्त्र की उनकी समझ के आधार पर वह यह समझ सकते है कि कड़ी प्रतिस्पर्धा वाले बाजारों में, जहाँ उत्पादों के बीच बहुत कम अंतर होता है, वहाँ ब्रांड और ब्रांडिंग उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में जानकारी देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाते हैं। यहाँ तक कि एक बेकार उत्पाद को भी इस तरह पेश किया जा सकता है जैसे वह जीवन में बहुत जरूरी और जादुई चीज हो। लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता कि हर चीज़ को ब्रांड करना क्यों जरूरी है। उदाहरण के तौर पर गुटखा और सामान को ही ले लीजिए। इनके निर्माता इनकी मार्केटिंग पर इतना पैसा क्यों खर्च करते हैं? सभी जानते है कि गुटखा और सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं, फिर भी उनके निर्माता ऐसे विज्ञापन बनाते हैं जो उन्हें एक आकर्षक लाइफस्टाइल से जोड़ते हैं। मुझे यह समझ नहीं आता कि खुद को नुकसान पहुँचाना किसी बेहतर जीवनशैली के साथ कैसे जुड़ा हो सकता है। यह तो ऐसा है जैसे किसी महंगी बंदूक से गोली खाना शान की बात है बजाए एक छोटी पिस्टल के।

लगेज (सूटकेस) के ही उदाहरण को ले लीजिए। आखिर सूटकेस के ब्रांड से किसी को क्या फर्क पड़ता है? ट्रेन में वह सीट के नीचे ही रखा जाता है, कार में डिक्की में और हवाई जहाज़ में सामान रखने वाले हिस्से में। तो फिर ब्रांडेड लगेज को लेकर इतना हंगामा क्यों? इसके बावजूद लोग एक ब्रांडेड सूटकेस के लिए दस गुना ज्यादा पैसे देने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि वे 'लोकल माल' खरीदना पसंद नहीं करते।

इसी तरह शराब का उदाहरण ले लीजिए। मुझे स्कॉच व्हिस्की को लेकर होने वाला इतना शोर-शराबा बिल्कुल पसंद नहीं है। उसकी पीटीनेस, स्मोकिनेस, उम्र, बैरल आदि जैसी बातों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। यह सब सिर्फ इसके स्वाद को खास दिखाने की बात हैं, जिनमें असल में ज्यादा सच्चाई नहीं होती। वह एक वीडियो का हवाला देते है, जिसमें कहा गया था कि लोग असल में शराब के लिए नहीं बल्कि उसकी बोतल और लेबल के लिए पैसे देते हैं। 1960 के दशक के अंत में जब मैं अपने कॉलेज के प्रथम वर्ष में था, एक विज्ञान का छात्र एक दिन शुद्ध एथिल अल्कोहल लाया। हमने उसे कोका-कोला की 12 बोतल के साथ मिलाकर एक बाल्टी में रख दिया और सबको पीने के लिए दे दिया। उनके अनुसार उसका स्वाद आज की किसी अच्छी स्कॉच जैसा ही था। मैंने एक बार भारतीय व्हिस्की को स्कॉच की बोतल में डालकर लोगों को परोसा और कोई भी फर्क नहीं पहचान पाया, खासकर जब उसमें सोडा मिलाया गया।

वह आगे कहते है कि सोडा को ब्रांड करने की क्या ज़रूरत है? जैसा कि अमृतसर के एक सिख दुकानदार ने एक बार उनसे कहा था: *उननी-बी का फ़र्क भी नहीं होता, पाजी।* यानी ब्रांडेड और बिना ब्रांडेड में कोई खास अंतर नहीं होता। जब मैंने अपने एक पुराने दोस्त, जो एक बड़ी उपभोक्ता उत्पाद कंपनी का प्रमुख रह चुका था, से यही सवाल किया, तो उसने उल्टा उनसे ही सवाल किया - तुम गुणवत्ता कैसे पहचानोगे? मैंने पूछा कि मुझे कैसे पता चलेगा कि कोई चीज़ ब्रांडेड है या नहीं? मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया कि एक बार बिना ब्रांड वाले जूते, एक विदेशी ब्रांड के जूतों से बेहतर निकले। लेकिन मेरे दोस्त ने यह बात मानने से इंकार कर दिया। हम दोनों के बीच इस बात पर काफी बहस हुई और फिर जैसे पुराने दोस्त करते हैं, उन्होंने एक-दूसरे को मूर्ख कहकर बात खत्म कर दी-यानि दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। हमारे जैसे लोगों के लिए अंग्रेजी में एक कहावत है: *There's no fool like an old fool*, यानी बूढ़े व्यक्ति से बड़ा मूर्ख कोई नहीं होता क्योंकि वे अक्सर अपनी राय बदलने को तैयार नहीं होते।

बिल्कुल सही।■

Advertise in Rotary News

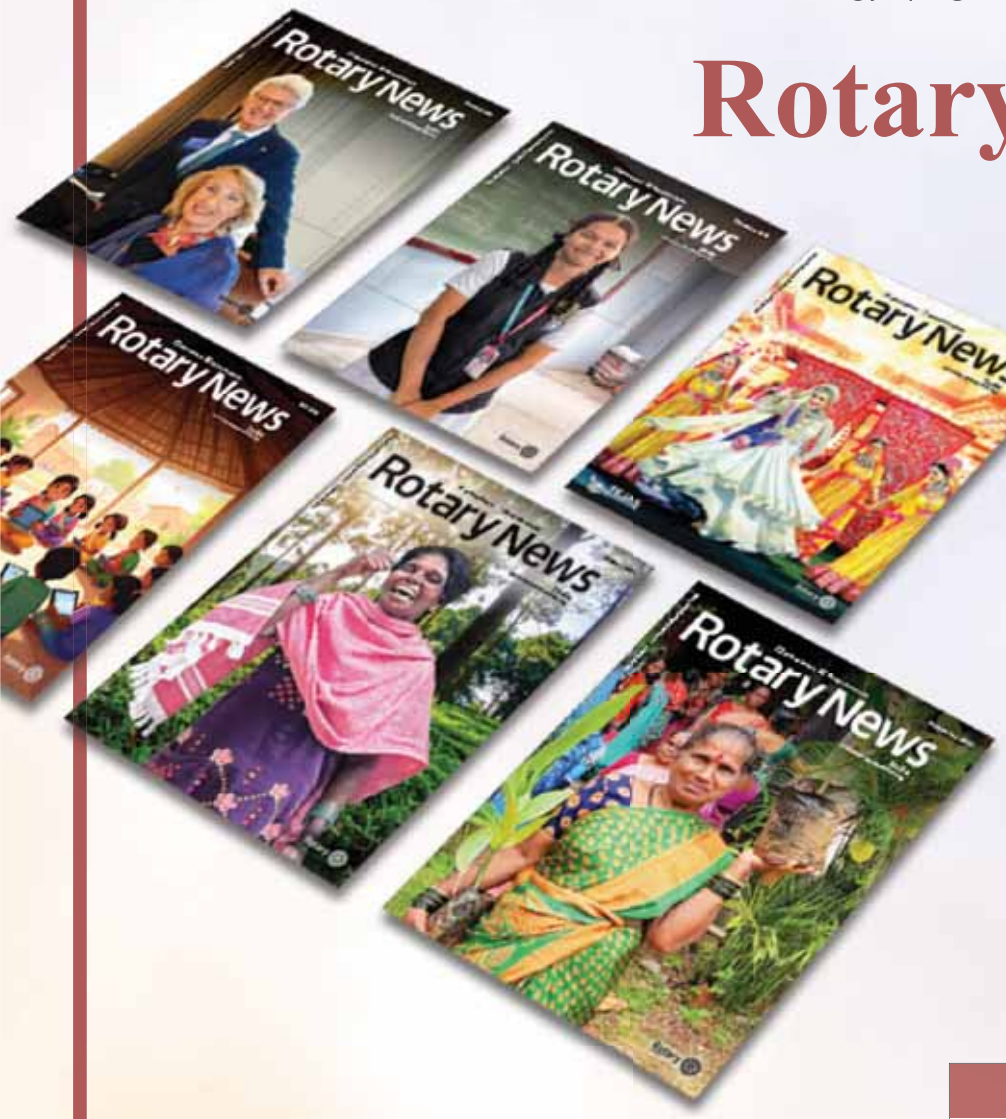

... with a circulation of 1.56 lakh, and connect with 6 lakh readers. Reach some of the most influential industrialists, businessmen, finance professionals, doctors, lawyers and other high flyers.

Tariff (per insert)	
Back cover	₹1,00,000
Inner Front Cover	₹60,000
Inner Back Cover	₹60,000
Inside Full Page	₹30,000
Specifications	
17 x 23 cm	Full page
Advertisements in colour only	

GST 5% applicable

Rotary News Trust
Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Attractive discounts available for advertisements of three months and above.

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: ₹40